# विशदेश्वरी

उड़िया उपन्यास

**सरोजिनी साहू**

अनुवादक
दिनेश कुमार माली

1.

वे लोग तीन महीनों से विधिवत इस खेल में लगे हुए थे। एक अद्भुत खेल, परत-दर-परत खोलते हुए मानो वे एक गहनतम प्रदेश के प्रवेश द्वार तक पहुंच गए थे। अवश्य हर्षा को यह खेल खेलना नहीं आता था। अल्बर्टो की सबसे पहले इच्छा हुई यह खेल खेलने की।

जब अल्बर्टो ने यह खेल खेलने का प्रस्ताव रखा तो हर्षा को उसका बचपना-सा लग रहा था। अल्बर्टो ने कहा था कि पुर्तगाल में यह खेल एक दूसरे को जानने तथा परस्पर एक दूसरे के नजदीक आने के लिए खेला जाता है।

हर्षा ने सोचा था, उसे अपने जीवन में अनेक लोगों के साक्षात्कार लेने पड़ेंगे, भविष्य में जोड़-तोड़ कर प्रश्न पूछने पड़ेंगे। आज से यदि किसी के प्रश्न का उत्तर देना पड़ेगा तो उसमें चिंता किस बात की? यद्यपि हर्षा जानती थी ये प्रश्नोत्तरी खेल कितना बचकाना और अप्रासंगिक हैं! क्या कोई प्रश्न पूछ कर किसी के हृदय तक पहुंच सकता है?

जैसे अल्बर्टो ने पूछा, तुम्हें अंधेरे से डर लगता है? हर्षा ने उत्तर दिया, मैं जब घर में अकेली होती हूं तो मुझे डर नहीं लगता, मगर अनजान जगह पर मुझे डर लगने लगता है।

अल्बर्टो इस प्रश्न का दूसरे ढंग से उत्तर देता था। मुझे सूरज की चमकती किरणें बहुत अच्छी लगती है, इसलिए तेज धूप मुझे बहुत अच्छी लगती है। मगर जब मैं बिस्तर पर सोने जाता हूं तो मुझे गहन अंधेरा अच्छा लगने लगता है। मगर मेरा दार्शनिक मत क्या है, जानती हो? 'हमेशा अंधेरे से उजाले की ओर आगे बढ़ना'।

हर्षा जानती थी, अल्बर्टो बौद्ध धर्म का अनुयायी है। बौद्ध धर्म के अनुयायी जैसे दिखाई देते हैं, वह वैसा नहीं दिखाई देता है। उसने बौद्ध धर्म दीक्षा नहीं ली है, मगर बौद्ध धर्म में वह अटूट विश्वास रखता है। अपने आप को बौद्ध कहलवाने में गर्व अनुभव करता है। वह बौद्ध धर्म से इतना ज्यादा प्रभावित है कि सारा जीवन बौद्ध धर्म द्वारा निर्देशित मार्गों पर चलना चाहता है। यद्यपि वह यूरोपियन ईसाई परिवार का एक सदस्य है, छोटे देश पुर्तगाल का एक निवासी है। फिर भी भारत के प्रति इतनी गहरी आसक्ति है कि वह उसकी तारीफ किए बिना नहीं रह सकता। कभी उसके पिताजी पुर्तगाली सेना में काम करते थे। उस समय उनकी पोस्टिंग गोवा में थी। गोवा में उसकी बड़ी बहन का जन्म हुआ था। उसके जन्म के समय उसके पिताजी अंगारा में थे। पिताजी की 50 साल की उम्र में अल्बर्टो का जन्म हुआ था। इसलिए वह अपने माता-पिता की आंखों का तारा था। मां उसे भारत के बारे में अनेक कहानियां सुनाया करती थी। परियों की कहानियों की तरह बचपन में वह अनजान देश की कहानियां सुना करता था। गोवा के उमस भरे वातावरण से लेकर अनेक हिंदू देवी-देवताओं के बारे में विभिन्न कथा-किवदंतियां वह अपनी मां से सुना करता था। अल्बर्टो कहा करता था कि उसकी मां को भारत से प्यार नहीं था, मगर वह भारत से प्यार करता है।

अल्बर्टो ने फिर से पूछा, "तुम्हारा प्रिय रंग कौनसा है?"

"मेरा ऐसा कोई रंग प्रिय नहीं है। मुझे कभी पीला तो कभी हरा रंग अच्छा लगने लगता है। एक साल पहले जो रंग अच्छा लगता था, एक साल बाद उस रंग के बदले दूसरा रंग अच्छा लगने लगता है। अभी मुझे बैंगनी रंग अच्छा लगता है। "यह कहकर हर्षा अन्यमनस्क हो गई।

"हाना, तुम्हें ऐसा उदास रंग क्यों पसंद है?जीवन के प्रति ऐसे विषाद भाव रखना उचित नहीं है। तुम्हें मेरा प्रिय रंग पता है? नीला रंग, मुझे समुद्र की नीली जलराशि बहुत अच्छी लगती है। "

"वास्कोडिगामा?" कहते हुए हर्षा मुस्कुराई।

"क्या कहा?", अल्बर्टो ने पूछा, "तुमने मुझे वास्कोडिगामा कहा है ना? क्या तुम सोच रही हो मैंने कुछ भी नहीं सुना? हां, हम पुर्तगालियों को समुद्र बहुत अच्छा लगता है। तुम जानती हो, हाना, गर्मियों के मौसम में हम लेस्बो में नहीं रहते है। लेस्बो का मतलब लिस्बन। लिस्बन पूरा खाली हो जाता है। लोग छुट्टी बिताने के लिए समुद्र के किनारे इकट्ठे होते हैं। सभी बालू-शैय्या पर मछली की तरह नंगे सो जाते हैं। सूर्य किरणों को सोखने में अद्भुत आनंद मिलता है। इसलिए मुझे बसंत ऋतु और समुद्र तट बहुत पसंद है।

हर्षा को इतने दिनों में पता चल गया था कि अल्बर्टो समुद्र से बहुत प्यार करता है। उसने पहले भी बोटिंग करते हुए अपनी अनेक फोटो हर्षा को दिखाई थी। एक बार उसने कहा था, मेरे पास कोई बोट नहीं है, हाना। काश! मेरे पास भी कोई बोट होती तो मैं पुर्तगाल से सीधे तुम्हारे पास पुरी पहुंच जाता। समुद्र से अगाध प्रेम होने के बाद भी मेरे पास कोई बोट नहीं है।

हर्षा ने हंसते हुए कहा, "तुम प्रोफेसर हो या कोई धीवर?"

"मैं जानता हूं कि मैं प्रोफेसर हूं, फिर भी समुद्र की पुकार सुनकर चुप रहना मेरे लिए संभव नहीं है। "

समुद्र से प्यार करने वाले इस इंसान ने मुझसे पूछा, "हर्षा, तुम्हें बारिश में भीगना अच्छा लगता है?"

" हमेशा नहीं। मानसून की पहली बारिश मुझे बहुत अच्छी लगती है। सूखी धरती पर पहली बारिश की बड़ी-बड़ी बूंदें गिरने से जो सौंधी गंध पैदा होती है, वह गीली मिट्टी की खुशबू मुझे बहुत आकर्षित करती है। मैं अपनी उम्र भूल जाती हूं, एक बच्चे की तरह नाचते हुए बारिश का आनंद लेती हूं। लेकिन लगातार चार महीनों तक बारिश होना मेरे लिए बहुत दुखद है। सावन के महीने में तेज बारिश के समय माँ हमें स्कूल नहीं भेजती है, उस दिन वह घर में खिचड़ी बनाती है, पकौड़े तलती है। हम अपनी स्कूल की किताबों के पत्ते फाड़कर कागज की नाव बनाकर पानी में तैराने लगते हैं।

"ओह! वंडरफुल। इसका मतलब तुम्हें भी बोट पसंद है, हाना?"

"धत्, केवट कहीं का!"

" तुम अपनी भाषा में कहोगी तो मुझे कैसे पता चलेगा?" अल्बर्टो ने अपना दुख प्रकट किया।

"मैंने तुम्हें केवट कहा। केवट का मतलब होता है बोटमेन। "

अल्बर्टो इस संबोधन से खुश होकर कहने लगा, "हां, मैं बोटमेन हूं। नीले समुद्र के वक्ष-स्थल पर अनवरत दीर्घ यात्रा करना चाहता हूं। "

"अरे! तुमने तो अभी तक बताया नहीं कि तुम्हें बारिश में भीगना अच्छा लगता है या नहीं?" मानो अल्बर्टो नीले समुद्र के वक्ष स्थल से लौट आया हो।

"अहो, मैं तो भूल ही गई थी। गर्मी के दिनों में मुझे बारिश बहुत अच्छी लगती है। मगर सर्दी के दिनों में जितना जल्दी हो, घर जाना अच्छा लगता है। "

हर्षा जानती थी कि अल्बर्टो को सूर्य की किरणें प्यारी लगती है। प्राय: उसकी प्रत्येक बातों में उजाला और उत्ताप की इच्छा प्रकट होती है।

"जानती हो, हाना! लेस्बो में कभी-कभी बसंत ऋतु आने में देर हो जाती है। सौभाग्यवश मेरे घर में 20 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान बना रहता है, अन्यथा यहां रहना मुश्किल है। बसंत ऋतु आते ही सब कुछ बदल जाता है। मन के ऊपर से मानो बर्फ की परत हट जाती हो। प्रेम की भावना जागने लगती है। शायद यही कारण है कि ठंडी आबोहवा के कारण यूरोपियन दैहिक प्रेम में ज्यादा ठंडे है। "

हर्षा सहज में अल्बर्टो की बात नहीं मान पाई। वह तर्क करने लगी, "कौन कहता है यूरोपियन ठंडे मिजाज के होते हैं? फ्रांस की गलियों में जितनी वैश्याएँ देखने को मिलती है, क्या असत्य है? जेम्स जॉयस की 'मल्ली ब्लूम' में जो वर्णन मिलता है, उसे क्या कहेंगे? मोपसां से लेकर फ्लेबार्ट तक के विवाहेत्तर संबंध क्या कम थे?"

हथियार डालते हुए अल्बर्टो ने उत्तर दिया, "हां, यह बात सत्य है। मगर मेरी धारणा है कि गर्म देश के लोगों की तुलना में ठंडे देशों में प्रेम की अभिव्यक्ति कुछ कम होती है। "

अल्बर्टो ने शारीरिक संबंध को प्रेम कहकर अपना काम चला दिया। इस बात को लेकर उन दोनों में बहुत तर्क-वितर्क हो सकता था। मगर उस समय अल्बर्टो ने दूसरा प्रश्न पूछा, "क्या तुम सहजता से रो सकती हो?"

" हां" हर्षा ने कहा। यद्यपि मेरा नाम आसुओं के विपरीत है फिर भी मैं जल्दी से रो सकती हूं। स्त्रियाँ तो स्वभाव से कुछ ज्यादा ही भावुक होती है। अपने दुख में रोती है और दूसरों के दुख में भी।

अल्बर्टो उसकी बात सुनकर हंसने लगा, "हां, लड़कियां कुछ नरम हृदय की होती है। वे बड़ी दयालु होती है। मगर मैं अनजान लोगों के सामने नहीं रो पाता हूं, जानती हो, हाना, मैं कभी-कभी सिनेमा या डॉक्यूमेंट्री फिल्म देखते-देखते रो देता हूं। लोग मेरी इस भावुकता का मजाक उड़ाते हैं। "

प्रतिदिन इस प्रकार से साक्षात्कार होता रहा। दोनों अपना-अपना समय निकाल कर आपस में एक दूसरे से मिलते रहे। जिस दिन जो प्रश्न करता था, फिर भी दोनों उन समान प्रश्नों के उत्तर देते थे। खेल का सबसे बड़ा नियम यही था।

जबकि यह खेल उनके बीच शुरू से नहीं चल रहा था। शुरू-शुरू में वे दार्शनिक बातों पर इतना तर्क-वितर्क करते थे कि उनका सिर चकराने लगता था। एक दिन हर्षा ने गुस्से से कहा, "हम क्या शास्त्रों की समीक्षा करते रहेंगे? हमारा देश देश न होकर दर्शनशास्त्र होकर रह गया है? हम जीवन की यथार्थता का चिंतन किए बगैर हमेशा केवल नैतिकता के बारे में सोचते रहेंगे? तुम्हें भारत के बारे में जितनी जानकारी है, क्या मेरे बारे में इतनी जानकारी है? क्या तुम मेरे सुख-दुख, आनंद-विषाद के बारे में जानते हो? मेरी पसंद-नापसंद के बारे में जानते हो? तुम जानते हो कि मैं दर्शनशास्त्र के विद्यार्थी नहीं रही फिर भी मुझे तुम वेद-वेदांत उपनिषद के सवाल पूछते रहते हो? क्या तुम्हें मेरे उत्तरों की सत्यता पर संदेह नहीं होता है ?"

अल्बर्टो ने हर्षा का ऐसा विकराल रूप कभी नहीं देखा था। उसकी डांट-फटकार सुनकर एक छोटे बच्चे की तरह मुंह फुलाकर वह उसके पास बैठ गया। उसका उदास चेहरा हर्षा को अच्छा नहीं लग रहा था। उस बेचारे निसंग आदमी ने विदेश की धरती पर कुछ पलों के सान्निध्य हेतु प्रश्न पूछे थे और तो कुछ नहीं मांगा था। हर्षा को वह अपना मानता है, इसलिए तो इतने सवाल पूछता है, अन्यथा क्या उसके फैकल्टी में सदस्यों की कमी है जो उसके प्रश्नों का कोई उत्तर न दे? कभी-कभी हर्षा सोचती है कि प्रश्न पूछना उसका एक मात्र बहाना है। वह उससे नजदीकी चाहता है, इसलिए प्रश्नोत्तरी उसकी भूमिका मात्र है। अगर हर्षा उसे प्रश्न पूछने से इंकार करेगी तो अल्बर्टो को उसे बार-बार मिलने का मौका नहीं मिलेगा।

तो क्या हर्षा को अल्बर्टो का संसर्ग पसंद नहीं है? क्या उसके निसंग जीवन में खुशियाँ नहीं लाई है अल्बर्टो ने ? गुस्सा ठंडा होने के बाद हर्षा ने धीमे स्वर में उससे पूछा, "अल्बर्टो, क्या तुम मुझसे नाराज हो? मेरे कहने का मतलब था कि हम एक दूसरे के बारे में बिल्कुल नहीं जानते हैं?"

"नहीं, हाना, मैं तुमसे नाराज नहीं हूँ। बल्कि मैं तुम्हारी बातों का मर्म समझ सकता हूं। मेरे बारे में जो कुछ तुम पूछना चाहती हो, बेधड़क पूछ सकती हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मैं कभी भी झूठ या मनगढ़ंत उत्तर नहीं दूंगा। "

"मुझे तुम पर विश्वास है, अल्बर्टो। इसलिए जब तुम मुझे पुकारते हो, मैं तुम्हारे पास दौडी चली आती हूँ। मुझे इस बात पर भरोसा है कि तुम कभी भी मुझसे झूठ नहीं बोलोगे। मैं भी तुम्हें विश्वास दिलाना चाहती हूं कि जो भी प्रश्न तुम पूछोगे, भले ही, व्यक्तिगत क्यों न हो, मैं तुम्हें सही-सही उत्तर दूंगी। "

"ठीक है हाना, चलो हम एक खेल खेलते हैं। पुर्तगाल का बहुत ही लोकप्रिय खेल। हम कुछ ऐसे प्रश्न तैयार करेंगे जिससे हमें एक दूसरे को अच्छी तरह से जानने में सुविधा हो। क्या तुम सहमत हो?"

इस खेल के भीतर, पता नहीं, किसी भी तरह से दर्शन-शास्त्र की बातें आ जाती थी। निशब्द प्रेम चला आता था। दोनों को लड़ाता था, फिर संबंध को निबिड कर देता था। उनके प्रश्नोत्तरी के खेल में कई पैकेट स्नैक्स खत्म हो जाते थे। कई कप चाय पी ली जाती थी। देखते-देखते दोपहर के आकाश में काली चादर चढ़ने लगती थी। उनका उस तरफ ध्यान नहीं जाता था। आखिरकर ऐसे भी कोई खास प्रश्न नहीं होते थे। जैसे अल्बर्टो पूछता था, तुम कहां पर रहना पसंद करोगी? समुद्र के किनारे? झील के किनारे?जंगल में? गांव में? नहीं तो छोटे शहर में? नगर, महाकाश या गुफा में?

बहुत बार अन्यमनस्क भाव से पॉपकॉर्न के दानों से खेलते हुए अल्बर्टो के प्रश्नों से खीझ कर उसकी तरफ दाने फेंकती हुई वह कहती, "कम से कम कुछ तो ढंग के प्रश्न पूछ लिया करो। "

फेंके हुए दानों को मुंह में डाल कर अल्बर्टो कहने लगता, "बताओ, तुम्हारी रुचि वाले सवाल बताओ। "

अल्बर्टो जंगली बंदर की तरह दिखाई देने लगता था। सफ़ेद चेहरा, एकदम गहरे लाल होठ, ललाट का सामने वाला हिस्सा पूरी तरह से खल्वाट, ठोड़ी पर हल्की-हल्की दाढ़ी, आंखों पर बड़े नंबर वाला चश्मा, दुबला-पतला शरीर, लंबे कद वाले इस आदमी और जंगली बंदर में जरूर कुछ समानता रही होगी। फिर भी अल्बर्टो को अपने आप पर गर्व है। कभी-कभी सीना फुलाकर गर्व से कहता, "आफ्टर ऑल आई एम लैटिन मेन" उसे केवल अपने लैटिन चेहरे पर ही नहीं बल्कि लैटिन सभ्यता और संस्कृति पर भी गर्व था।

उसके लैटिन होने के दावे को खारिज करते हुए हर्षा प्रश्न पूछने लगती, "अरे! तुम तो यूरोपियन हो। अपने आपको यूरोपियन कहने की जगह लैटिनीयन कहना क्यों पसंद करते हो?"

हर्षा के प्रश्न को गंभीरतापूर्वक लेते हुए वह इतिहास एवं पुरातत्व विज्ञान के अनुभवों का उल्लेख करने लगता कि किस प्रकार उनके और स्पेन वालों के चेहरों पर छाप है और वे लोग उस मिट्टी से जुड़े हुए हैं, जिसका रक्त पूरी तरह से शुद्ध है, यह इतिहास की बात हैं। अंत में निराश होकर वह कहने लगता कि पुर्तगाल यूरोप के सारे देशों में सबसे ज्यादा गरीब देश है। गरीबी रेखा के नीचे अभी भी बहुत सारे लोग रह रहे हैं। रास्तों में अभी भी भिखारी भीख मांगते हुए नजर आते हैं। आज भी उनके देश में अनपढ़ों की संख्या कुछ कम नहीं है।

"फिर आप लोग भारत को भिखारियों का देश क्यों कहते हैं, बताओ अल्बर्टो?" अपनी उत्सुकता को दबा नहीं सकी हर्षा।

"मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। " जोर से अपना सिर हिलाते हुए वह कहने लगा, "आई लव इंडिया। यू नो वेरी वेल आई रेस्पेक्ट इंडिया। "

हर्षा जानती थी कि अल्बर्टो की धारणा जिस भारत के बारे में हैं, वह आज का भारत नहीं है। आज से अढ़ाई-तीन हजार साल पुराना भारत है वह। जिसके बारे में उसने केवल किताबों में पढ़ा होगा। जिस समय जंगलों में ऋषि-मुनि झोपड़ियों में रहकर शास्त्र-पुराणों की रचना करते थे। जब वातावरण में ओम की ध्वनि का गुंजन हुआ करता था। जहां मायावी रावण के कपट से सीता का अपहरण हुआ

था। जहां राम ने अपनी प्रतिज्ञा के पालन के लिए चौदह वर्ष का वनवास भोगा था। जहां कृष्ण अवतरित हुए थे। जिस भारत में बुद्ध और शंकराचार्य के दर्शन विकसित हुए थे। उस भारत को अल्बर्टो पसंद करता है। मगर आज का भारत?

कई बार अल्बर्टो असहिष्णु और असंतुष्ट हो जाता था। रास्ते में चलने वाले राहगीर उनकी तरफ घूर-घूर कर देखते थे तो वह कहता था, “दिल्ली के लोग बड़े ही अजीबोगरीब है। दूसरों के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने में, पता नहीं, उन्हें क्या मजा आता है?हमारे यूरोप में कभी भी कोई किसी की निजी जिंदगी में दखलअंदाजी नहीं करता है। ”

हर्षा को अल्बर्टो का यह मंतव्य बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था। वह कहने लगी, “आपको किसी भी तरह का सतही मंतव्य नहीं देना चाहिए। एक तरफ कहते हो कि तुम्हें मेरे देश से प्यार है और दूसरी तरफ इस देश के लोगों की निंदा करते हो। मुझे आपकी यह बात अच्छी नहीं लगी। एक गोरे आदमी के पास इस देश की लड़की क्यों बैठी है? यह देखकर एक पल के लिए कोई भी आकर्षित हो सकता है। इसका मतलब यह तो नहीं है कि वह तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन में झांक रहा है?”

ऐसे तर्क-वितर्कों की लड़ाई उन दोनों के बीच में अक्सर होती ही रहती थी। यह कोई नई घटना नहीं थी। इसलिए एक बार अल्बर्टो ने उससे कहा, “हाना, मुझे तुम तीन वरदान दोगी?”

“वरदान?” हर्षा हंसते-हंसते लोट-पोट हो गई, “तुमने यह वरदान शब्द किससे सीखा ? अच्छा मांगो, क्या वर मांग रहे हो? मैं शपथ खाती हूं कि आप जो भी वर मांगोगे, मैं तुम्हें देने के लिए तैयार हूं। ”

“तुम मेरी बात सुन कर हंस रही हो, हाना? दशरथ ने कैकेयी को क्या वर नहीं दिए थे? या यम ने सावित्री को नहीं दिए थे?”

अल्बर्टो की बातें सुनकर हर्षा चकित हो गई। इस आदमी को बहुत कुछ जानकारी है।

अल्बर्टो कहने लगा, “पहला वर, मैं यूरोपीय हूं, इसलिए मेरे व्यवहार में निश्चय भिन्नता आएगी। मेरा अनुरोध है कि मेरी बातों से तुम्हारा दिल दुखने पर भी उन बातों को गंभीरता से न लें।

दूसरा वर, मेरी अंग्रेजी तुम्हारी अंग्रेजी की तरह अच्छी नहीं है, अतः कोई गलती हो भी जाए तो उसे नजरअंदाज कर देना।

तीसरा वर, मैं थोड़ा शर्मीला स्वभाव का हूं। कई बार अपने मन की बात खुलकर नहीं कर पाता हूं। ऐसी परिस्थिति में मुझे गलत मत समझना। ”

हर्षा सोचने लगी कि ये किस तरह के वर है! उसने एक जवान औरत के साथ घूमते रहने के बावजूद उसके प्यार, संसर्ग और शारीरिक सुख जैसे वर न मांगकर ऐसे अजीबो-गरीब वर मांगे हैं। वास्तव में अल्बर्टो बहुत अच्छा इंसान है। उसके पास रहने पर कभी भी हर्षा के मन में असुरक्षा की भावना नहीं आती थी। कभी भी आज तक शब्दों से उसने आघात नहीं किया।

हर्षा ने कहा, “तुम निश्चिंत रहो। मैं वायदा करती हूं कि ये तीनों बातें कभी भी नहीं भूलूंगी। ”

हर्षा को हिलाते हुए अल्बर्टो पूछने लगा, “कहां खो गई हो, हाना?तुम कहां रहना पसंद करोगी? समुद्र-तट के किनारे? झील के पास?जंगल के भीतर? गांव के अंदर? नहीं तो छोटे से शहर में, नगर या महाकाश में?या गुफा में?”

हर्षा सपनों की दुनिया से लौट आई और वह बच्चों की तरह खेल खेलने में शामिल हो गई। वह कहने लगी, “मैं अपनी रुचि के अनुसार क्रमशः उन्हें सजा कर कह देती हूं। इससे आप अंदाज लगा लेना कि मेरी पसंद क्या है? अच्छा, आप मेरी पसंद से मेरे व्यक्तित्व के बारे में जानने की कोशिश तो नहीं कर रहे हो? तुम्हें जो भी सोचना है, सोचो। मैं तो जंगल में रहना सबसे ज्यादा पसंद करूंगी। चारों तरफ जंगल हो, मगर उसके अंदर मेरा घर सुरक्षित होना चाहिए। उसके बाद मैं झील के पास रहना पसंद करूंगी। उसके बाद नगर, समुद्र-तट, गांव के बाद महाकाश और अंत में गुफा मेरी पसंद है। गुफा के बारे में सोचने-मात्र से अपने आपको आदि मानव जैसा  नहीं लगता? महाकाश के बारे में सोचने से अपने आपको अपार्थिव अनुभव होने लगता है।  जैसे शरीर न होकर केवल आत्मा हो, एक भटकती आत्मा। जानते हो अल्बर्टो, इस बारे में हमारा हिंदू दर्शन क्या कहता है?  एक जीव बारंबार अलग-अलग योनियों में जन्म लेता है।  प्रत्येक मृत्यु के बाद दूसरा जन्म। अपने पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर नया जन्म निर्धारित होता है। आत्मा अमर है, उसकी मृत्यु नहीं होती। एक शरीर को त्याग कर दूसरे शरीर को धारण करने में आत्मा को भिन्न-भिन्न स्तरों पर विचरण करना पड़ता है।

अल्बर्टो ने सिर हिलाकर हामी भरी और कहने लगा, “हां, मैं जानता हूं। हिंदुओं की तरह बौद्ध धर्म वाले भी पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं। गौतम बुद्ध को भी बार-बार जन्म लेने पड़ते हैं, परंतु बौद्ध हिंदू-धर्म की तरह आत्मा-वात्मा में विश्वास नहीं रखता है। मुंडक उपनिषद् कभी पढ़ी हो, हाना?”

“नहीं, मैंने नहीं पढ़ी, अल्बर्टो। ”

“मुंडक उपनिषद् के अनुसार जिस तरह सारथी रथ चलाता है, आत्मा भी शरीर रूपी रथ को चलाती है। मगर बुद्ध ने इस सिद्धांत का विरोध किया। उनके मतानुसार आपके  रथ का पहिया टूट जाने पर क्या सारथी उसे चला पाएगा? इसलिए उन्होंने सारथी को ज्यादा महत्व नहीं दिया। ”

हर्षा ने पूछा, “जब बौद्ध-धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करता है तो फिर पुनर्जन्म होता किसका है, अल्बर्टो? यद्यपि बौद्ध धर्म की उत्पत्ति यहाँ पर हुई, मगर मुझे बौद्ध धर्म के बारे में विशेष जानकारी नहीं है। क्या तुम्हें पता है, अल्बर्टो, अगर आत्मा नहीं है तो कौन बार-बार इस शरीर को बदलता है?”

“हां, मैं जानता हूं। ” उसने उत्तर दिया, “जब एक जीव की मृत्यु होती है, तब वह अपनी तृष्णा के अनुरूप जन्म लेता है। जब नर और मादा संभोग करते हैं तो वह जीव शुक्राणु के रूप में गर्भ में प्रवेश करता है। ”

“क्या यह आत्मा के तत्व नहीं है?”

“ नहीं, नहीं, यह आत्मा के तत्व नहीं है। यह तो विज्ञान, अविद्या की तरह पंचतत्व के अंश है। ”

“छोड़ो, मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। ” हर्षा ने कहा, “फिर से हम उसी बोरिंग  दर्शनशास्त्र की तरफ आ गए न? हम तो तुम्हारा ओलोंदाज  खेल खेल रहे थे। ”

अल्बर्टो दर्शनशास्त्र का विजिटिंग प्रोफेसर था। प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनशास्त्र का वह प्रकांड पंडित था। हर्षा को लगने लगा कि अल्बर्टो को भारतीय दर्शन की जितनी जानकारी है, उसका एक रत्ती भर भी उसे मालूम नहीं है। फिलहाल अल्बर्टो से मुलाकत होने पर दर्शनशास्त्र पर उसने आलोचना करना शुरु किया है। कॉलेज में पढ़ते समय वैकल्पिक विषयों में उसने न तो तर्क-शास्त्र लिया था और नहीं दर्शनशास्त्र। वह तो अंग्रेजी साहित्य की विद्यार्थी थी।  दर्शनशास्त्र उसकी समझ से परे था। हम लोग दादाजी को बापा कहकर बुलाते थे। पुरी के ब्राह्मण परिवार में यही चलन है कि पिताजी को बापा न कहकर दादाजी को बापा कहते हैं।  वह दादाजी को पिताजी कहकर बुलाती थी। मुक्ति-मंडप में पंडित होने के कारण उनकी लोगों के साथ बहस होती थी। घर में कम से कम चालीस-पचास पुराणों की पोथियाँ पड़ी होगी। दादाजी की तरह अल्बर्टो को तर्क करना अच्छा लगता था। दादाजी अगर जिंदा होते तो इन दोनों की जोड़ी खूब जमती। मगर क्या वह उसे अपने घर में आने की अनुमति देते?

अल्बर्टो ने कहा, “हाना, मैं तुम्हारी बातों से दुखी हूं। ”

“क्यों, मैंने तो तुम्हें दुख देने जैसी कोई भी बात नहीं कही। ”

“याद करो, तुमने क्या कहा? तुमने कहा नहीं कि दर्शनशास्त्र बोरिंग है? फिर तुमने इसे ओलोंदाज खेल भी कहा?”

अपने हाथों से अपने कानों को पकड़ते हुए हर्षा ने कहा, “सॉरी, तुम्हारा दिल दुखाना मेरा उद्देश्य नहीं था। सच कहूं तो मैंने दर्शनशास्त्र को बोरिंग नहीं कहा। सही बात तो यह है कि हम खेल-खेलते फिर से उसी अध्याय पर पहुंच गए, इसलिए मुझे अच्छा नहीं लगा और मैंने उसे बोरिंग कहा। मगर मैं यह समझ नहीं पाई कि पुर्तगाली खेल कहने पर तुम नाराज क्यों हो गए?”

“एक बात कहूं कि हम ओलोंदाज  लोग नहीं है, हाना। मैं पुर्तगाली हूं और पुर्तगाल में एक-दूसरे को जानने के लिए प्रश्नोत्तरी का यह खेल खेला जाता है। ”

“हां, हम तुम्हें ओलोंदाज  कहते हैं। जानते हो, अल्बर्टो, तुम्हारे पूर्वजों का हमारे ओड़िशा के साथ सामुद्रिक व्यापार होता था। आज भी बालासोर के बलरामगड़ी में ओलोंदाज  कॉलोनी मौजूद है। ”

“तुम गलत कहती हो, हाना! हालैंड के निवासियों को ओलोंदाज  कहा जाता है। ओलोंदाज  शब्द की उत्पत्ति हॉलेंड से हुई है। हां, कुछ समय के लिए पुर्तगाल हॉलेंड के अधीन था, इसलिए पुर्तगाली लोग तुम्हारे राज्य में आकर अपना परिचय ओलोंदाज  के नाम से देते रहे होंगे। यह हो सकता है। ”

“हे भगवान! तुम्हारे साथ बातचीत करना बहुत ही मुश्किल है। चलो, हम अपने खेल की ओर वापस लौटते हैं। हां उत्तर देने की बारी तुम्हारी थी न? कहो, तुम्हें कहां रहना पसंद है, गुफा में न?” कहते-कहते हर्षा हंसने लगी।

“ तुम यह क्या कह रही हो? गुफा में कौन रहना चाहेगा? तुम तो जानती हो हाना झील का किनारा मेरी पसंदीदा जगह है। उसके बाद समुद्र, उसके बाद छोटा शहर, फिर नगर, गांव होने पर भी चलेगा। फिर जंगल, फिर महाकाश और सबके बाद में गुफा। जानती हो, हाना! मेरा जन्म हुआ था अंगारा बेसिन के पास में। मेरा घर टागोस नदी के मुहाने पर था। बहुत छोटी जगह थी यह कोक्सियास। जानती हो, हाना! कोक्सियास नाम की दो जगहें इस धरती पर है। एक ब्राजील में तो दूसरी पुर्तगाल में। ब्राजील का कोक्सियास एक बड़ा शहर है, मगर मेरा गांव बहुत छोटा है। फिर भी बहुत प्रसिद्ध है। कोक्सियास के पास वेलेम से वास्कोडिगामा ने अपनी जल-यात्रा शुरु की थी। मगर दुख की बात है मेरे गांव में सिनेमा हॉल नहीं है और नहीं शॉपिंग सेंटर। मेरे गांव से आधा किलोमीटर दूर पासोड़ी आरकस गांव है। वहां मगर सब कुछ है। हमें जो कुछ खरीदना होता है, फोन कर देने से घर पर दुकानदार पहुंचा जाता है। ”

अल्बर्टो अपने गांव की कहानी इतनी तन्मयता से सुना रहा था मानो वह टागोस नदी के मुहाने पर बैठा हुआ हो।

उस दिन अल्बर्टो के प्रश्न पूछने की बारी थी। पता नहीं, कितने सपने संजोए रखे होंगे उसने! सारे प्रश्न नहीं पूछने तक वह छोड़ने वाला नहीं था। हर्षा भी उसे रोक नहीं पाई, बल्कि उसका आनंद लेने लगी। बचपन में जैसे वे लोग झूठ-मूठ खेल खेलते थे, वैसा ही यह खेल था। क्या वास्तव में सब कुछ खेला जा सकता है इस खेल में?

अल्बर्टो ने पूछा, “जीवन में सबसे ज्यादा दयनीय अवस्था क्या होती है, हाना?”

जीवन में अनेक दयनीय अवस्थाओं से गुजर चुकी थी वह। मगर क्या एक अनजान आदमी के सामने उन्हें बताया जा सकता है?

“मुझे तुम्हारा प्रश्न समझ में नहीं आया, अल्बर्टो। ”

“ इसमें नहीं समझने की बात क्या है? मुझे कोई ऐसे प्रश्न का उत्तर देने के लिए कहे तो मैं कहूँगा कि यदि कोई तुम्हें प्यार नहीं करता है या तुम्हारा प्यार किसी को समझ में नहीं आता है तो दोनों में कौनसी अवस्था दयनीय होगी?”

“मतलब?” हर्षा अल्बर्टो के चेहरे की तरफ देखने लगी। क्या कहना चाहता है अल्बर्टो? वह अप्रत्यक्ष रुप से कुछ संदेश देना चाहता है ? क्या हर्षा के प्रति अपने प्रेम को तो नहीं दर्शाना चाहता वह ? अचानक हर्षा को अल्बर्टो द्वारा मांगे गए तीसरे वर की बात याद आ गई। “मैं थोड़ा शर्मीला हूं। कई बार अपने मन की बात खुलकर नहीं कह पाता हूं। ”, हो सकता है अल्बर्टो किसी और से प्यार करता होगा, मगर उसके सामने अपने मन की बात रख नहीं पाता होगा?

"मैं माफी चाहता हूँ, वास्तव में मुझे खेद है, हाना। " हर्षा के हाथ को कसकर पकड़ते हुए वह कहने लगा, " मैं तुम्हें चोट पहुँचाना नहीं चाहता था। तुमने जिस तरह से अपना हाथ ऊपर उठाया था, उस पर मुझे हंसी आ गई। आई एम सॉरी, आई एम वेरी सॉरी। "

" ठीक है, अब मेरा हाथ तो छोड़ दीजिए। तुम किससे डरते हो, अल्बर्टो? "

"क्रूर लोग, हाना, मैं क्रूर लोगों से ज्यादा डरता हूं। " अल्बर्टो के पास एक्स-रे जैसी आँखें थीं, जिससे वह किसी भी व्यक्ति के मन को पढ़ सकता था। उसे हर्षा के मन की बात कैसे पता चल गई ? वह अल्बर्टो के उत्तर से चौंक गई थी। वह कहने लगी, " ठीक कह रहे हो अल्बर्टो, क्रूर लोगों से डरना चाहिए। "

सिर हिलाते-हिलाते अल्बर्टो ने एक और सवाल पूछ लिया, "तुम्हें किससे शर्म आती हैं?"

"हे, अल्बर्टो, तुम्हारे प्रश्न खत्म ही नहीं हो रहे हैं? क्या तुम इन सवालों पूछकर मेरे व्यक्तित्व का आकलन कर रहे हो? "

"किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनुमान लगाने में क्या समस्या है? तुम भी तो मेरे उत्तरों से मेरी प्रकृति के बारे में जान सकती हो। इसके अलावा, तुम्हें इस प्रश्नोत्तरी खेल से विव्रत होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि महाभारत में प्रश्न-उत्तर वाले कई अध्याय नहीं हैं? 'युधिष्ठिर-यक्ष संवाद', में यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न नहीं पूछे?"

हर्षा ने बड़बड़ाते हुए कहा, "यह गोरा पंडित सब-कुछ जानता है। "

" क्या कहा ?"

"मैंने तुम्हें बुद्धिजीवी कहा। अच्छा, अल्बर्टो, पहले तुम बताओ तुम्हें किससे लज्जा आती है?'

" जानती हो, हाना, बुद्ध ने एक बार कहा था कि हमेशा स्वयं को प्राज्ञ बनाए रखना संभव नहीं है, क्योंकि हम अपने दोषों और कमजोरियों को अच्छी तरह देख सकते हैं। इसके अलावा, हम खुद के प्रशंसक बन जाते हैं। भले ही, हम जानते हैं, हम एक-न-एक दिन सब-कुछ पीछे छोड़ देते हैं, चाहे वह शरीर हो या मन हो। क्या ऐसा नहीं होता है? लेकिन मैं अपने जीवन में एक चीज़ को नहीं छोड़ सका, तुम्हें पता है कि वह चीज क्या है ? वह है मेरी शर्मीली प्रकृति। यही कारण है कि मैंने अध्यापक बनने का फैसला किया।

अध्यापक होने पर मुझे मंच से हरदिन भाषण देना पड़ता है। मैंने अठारह साल की उम्र में अध्यापक की नौकरी शुरू की। फिर भी, क्या मैं अपनी शर्मीली प्रकृति को छोड़ पाया? और शर्मीली प्रकृति के कारण मैं दूसरों से मिल नहीं पाता था, मुझे बहुत शर्म आती थी। "

जैसे मन हल्का होने के बाद चेतना शून्य हो जाती है, वैसे ही अल्बर्टो ने पीठ पर अपने दोनों हाथों को रखकर दीर्घश्वास लेते हुए ऊपर की ओर देखने लगा।

"अरे क्या हुआ ? दीर्घश्वास क्यों ?" हर्षा ने पूछा।

"नहीं, नहीं, कुछ भी नहीं। " चेहरे पर मुस्कुराहट लाते हुए अल्बर्टो ने कहा, "तुमने बताया नहीं कि किस परिस्थिति में तुम्हें शर्म आती है ?"

"अरे, मैं तो लड़की हूँ, हर चीज में मुझे शर्म लगती है। अगर कोई मेरी तरफ लगातार देखता है तो मुझे लाज आती है। कोई मेरी तरफ इशारें करता है, तो शर्म आती है। लेकिन क्या आप जानते हो मुझे किस चीज पर सबसे ज्यादा शर्म आती है ? क्रोध से ?अगर कभी आपे से बाहर होकर मैं कुछ अंट-शंट बोलती हूं, तो अगले ही पल में मैं खुद को संकुचित और लज्जित अनुभव करने लगती हूं। "

"वंडरफूल!, " अल्बर्टो ने कहा "क्या मैं आज का अंतिम सवाल पूछ सकता हूं, हाना?"

"ओह, बच गई !"

"क्या मैं तुम्हें परेशान कर रहा हूं? मेरी धारणा यह है कि तुम प्रश्नोत्तरी खेल का आनंद ले रही हो। आनंद लेने के अतिरिक्त, हमें एक-दूसरे को जानने का मौका मिल रहा है। "

"ठीक है, पूछो, पूछो, जो भी तुम्हें पसंद हो। मैंने तुम्हें चिढ़ाने के लिए नहीं कहा था। वैसे भी इस खेल के माध्यम से बहुत कुछ तुम्हारे बारे में जान चुकी हूँ। "

हर्षा की यह बात सुनकर अल्बर्टो बहुत उत्साहित हो गया था। कहने लगा, "हाना, तुम अपने को शिव-भक्त या शैव क्यों मानती हो?"

"तुम बताओ, तुम बौद्ध क्यों हो?"

"क्योंकि मैं मोक्ष चाहता हूं। प्रेम और ध्यान के मार्ग से मैं अंतिम लक्ष्य तक पहुंचना चाहता हूं, जिसे तुम्हारे यहाँ 'मोक्ष' कहते हैं। "

"ओह, मेरे गोरे 'संन्यासी'?"

"क्या तुम मुझे चिढ़ा रही हो? क्या कहा, फिर कहो तो। मैं तुम्हारी भाषा समझ नहीं पाया। "

"मैंने तुम्हें 'व्हाइट मांक' कहा, नहीं, नहीं, मैंने तुम्हें 'संन्यासी' कहा था। मैंने तुम्हें चिढ़ाया नहीं। "

अल्बर्टो उत्तर से संतुष्ट नहीं था। शायद कभी-कभी जब आप भाषा नहीं समझते हो, तो चेहरे की भाव-भंगिमा यह बता देती है कि कोई तारीफ कर रहा है या व्यंग्य। अल्बर्टो के चेहरे से पता चल रहा था कि वह खुश नहीं था। फिर भी कहने लगा: "हाना, अब तुम्हारी बारी है, बताओ तुम शैव क्यों हो?"

"पता नहीं क्यों, मेरा विश्वास है कि शिव निरासक्त, निर्विकार पुरुष है। एक योगी की तरह। जानते हो, अल्बर्टो, हमारे हिंदू-शास्त्रों में भगवान शिव को बोहेमियान के रूप में दर्शाया गया है, भले ही, वह सांसारिक है और उनके बाल-बच्चे हैं। "

अल्बर्टो खिलखिलाकर हंसने लगा, "वास्तव में तुमने बड़ी कौतूहल भरी बात कही। भारत में ' एंथ्रोपोमोर्फिक ' में बहुत विश्वास है."

"एंथ्रोपोमोर्फिक? यह क्या है ?"

"ईश्वर की मनुष्य के रूप में कल्पना कर उसके मानवीय रूपों और गुणों में सजाना। खैर, छोड़ो यह बात! विश्वास बहुत बड़ी चीज है। तुम शिव में क्यों विश्वास करती हो, यह मुझे बताओ। "

"शिव के पास कोई घर नहीं है। कभी-कभी वह हिमालय के बर्फ से ढके पहाड़ों पर बैठते हैं, तो कभी-कभी श्मशान में रहते हैं। कपड़े कहने से केवल बाघ की खाल पहनना है। गहनों के बदले गर्दन में साँप। प्राय: ध्यान-मग्न रहते है। अनेक लोग उन्हें दयालु भगवान मानते हैं। जो कोई चीज उनसे मांगता है, तो वे उसे तुरंत वरदान दे देते है। उनकी एक खूबसूरत कहानी सुनाऊँगी, जिससे तुम उनके निर्विकार गुणों के बारे में समझ सको। " प्रवचन देने की भांति हर्षा ने भावुकता से भगवान शिव के गुणों के बारे में बोलना शुरू किया।

"वास्तव में ? फिर मुझे वह कहानी सुनाओ। " अल्बर्टो एक छोटे बच्चे की तरह कहानी सुनने के लिए जिद्द करने लगा।

"भारत के वेद-पुराणों के बारे में तुम बहुत कुछ जानते हो, यह कहानी भी पहले से सुनी होगी?"

"कौनसी कहानी, मुझे बताओ ?"

"समुद्र-मंथन की। "

"समुद्र-मंथन? वह क्या है ? क्या यह महाभारत की कहानी है? यदि हां, तो मैं इसे नहीं जानता हूं? "

"नहीं, यह कहानी भागवत की है। देवताओं और राक्षसों के बीच लड़ाई की सबसे दिलचस्प कहानी है। "

"तब सुनाओ, हाना। "

अल्बर्टो के साथ मुलाक़ात करने के दिन से हर्षा बहुत अच्छी तरह जान चुकी थी कि पुराणों की कहानियों, आख्यान-उपाख्यानों को सुनने में उसकी बहुत रुचि है। कहानियों को सुनते समय वह एक छोटा बच्चा बन जाता था, लेकिन दार्शनिक बात आने पर तर्क करने के लिए तैयार हो जाता था।

कहने लगता था कि वह तर्क के बिना कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकता। हर्षा का लगता था कि दर्शन के क्षेत्र में वह थोड़ा अहंकारी है।

“चलिए घूमकर आते हैं, एक जगह पर बैठे-बैठे अच्छा नहीं लग रहा है। टहलते-टहलते मैं तुम्हें पूरी कहानी सुना दूँगी। क्या दुर्वासा का नाम सुना है, अल्बर्टो? "

"वह ऋषि जो अपने क्रोध के लिए विख्यात थे ?"

"हाँ, सही कह रहे हो। एक बार उनकी स्वर्ग के राजा इंद्र से रास्ते में मुलाक़ात हुई। उन्होंने इंद्र को फूलों की माला दी। इंद्र ने उस माला को अपने हाथी के गले में डाल दिया। हाथी ने अपनी सूँड से उस माला को बहुत दूर फेंक दिया। यह देखकर दुर्वासा ने क्रोधित होकर उसे अभिशाप दिया, ' तुम्हारा इतना घमंड कि तुमने मेरे द्वारा दिए गए हार की अवमानना की ? मैं तुम्हें अभिशाप देता हूँ कि तुम्हारे अहंकार का प्रतिफल तुम्हें वहुत जल्दी ही मिलेगा। राक्षसों के साथ तुम्हारा घोर युद्ध होगा।

और सच में राक्षस देवताओं के खिलाफ भंयकर युद्ध की तैयारी करने लगे। इंद्र का सिंहासन हिलने लगा। उनके बीच एक घोर लड़ाई हुई। देवतागण राक्षसों का सामना करने में सक्षम नहीं थे। दूसरी ओर, राक्षसों की नृशंस गतिविधियों से स्वर्ग पूरी तरह से तबाह हो गया। भयभीत देवता मदद के लिए भगवान विष्णु के शरण में गए। तब तक कई देवता मारे जा चुके थे। भगवान विष्णु ने सुझाव दिया कि युद्ध जीतने के लिए अमृतपान कर देवताओं को अमर होना चाहिए। अन्यथा थोड़े ही समय में राक्षसों का स्वर्ग पर अधिकार होगा। लेकिन अमृत मिलेगा पाताल में, समुद्र में। उन्होंने देवताओं से राक्षसों के पास जाकर अमृत-प्रलोभन हेतु समुद्र-मंथन के बारे में प्रस्ताव रखने के लिए सुझाव दिया। इंद्र ने राक्षसों को अमृत का लालच देकर उन्हें समुद्र-मंथन करने में सहयोग करने के लिए राजी किया। राक्षस अमर होने की आशा में इंद्र के प्रस्ताव में सहमत हुए। राक्षस वैसे भी बहुत शक्तिशाली और धन-संपत्ति में समृद्ध थे। उनके पास केवल एक चीज का अभाव था तो वह थी चिरकाल की शक्ति। क्षीर-सागर मंथन के लिए तय किया गया और मंदार पर्वत को मथनी के रूप में। भगवान विष्णु कछुआ बनकर खुद समुद्र में छुप गए। उनके ऊपर मथनी के रूप में मंदार पर्वत रखा गया। वासुकी नाग को रस्सी की तरह मंदार पर्वत पर लपेटा गया। एक तरफ देवताओं और दूसरे पर से राक्षसों द्वारा मंथन किया जाना था, देवता 'वासुकी' की पूंछ की तरफ और राक्षस उसके मुंह की तरफ गए। दोनों ने मंथन की प्रक्रिया शुरू की। समुद्र से अमृत के स्थान पर जहर बाहर निकला, कोई भी इसे छूना नहीं चाहता था। अमरत्व की बजाय मृत्यु कौन चाहता है? भगवान शिव निर्विकार पुरुष थे। उन्होने देखा कि अगर इस जहर का पान नहीं किया गया तो पूरी दुनिया नष्ट हो जाएगी। बिना कुछ विचार किए उन्होंने सारा जहर पी लिया, इस वजह सेउनका कंठ नीला हो गया। "

“ वाह! बहुत सुंदर कहानी सुनाई, हाना” अल्बर्टो ने कहा।

"लगभग 70 प्रतिशत भारतीय लोग इस कहानी को जानते हैं। उसके बाद समुद्र से निकली कामधेनु, उच्चैश्रवा अश्व, ऐरावत हस्ती, कौस्तुभ मणि और फिर कल्पवृक्ष। क्या आप जानते हो कल्पवृक्ष क्या है? कल्पवृक्ष के पास जो भी इच्छा करोगे, वह आपको मिलेगा। फिर समुद्र से देवी लक्ष्मी बाहर आई। भगवान विष्णु ने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। समुद्र से अप्सराएँ बाहर आईं। "

"तुम्हारी तरह", अल्बर्टो ने मुस्कुराते हुए कहा।

"तो मैं कहानी सुनाना बंद करती हूँ। "

"अरे गुस्सा क्यों करती हो? तुम समुद्र-तट की लड़की हो इसलिए पूछ लिया। "

"शरारत बंद करो, ऊपर से साधारण कहानी या फेंटेंसी लगने वाली कहानी से मैं अमृत कैसे निकालूँगी?"

"ऐसा है क्या? तो देर क्यों ? "

"अप्सराओं के बाद बाहर निकली शराब। अंत में धन्वन्तरी निकले अमृत-पात्र साथ लेकर। देवताओं ने शुरु से ही राक्षसों के साथ छल-कपट आरंभ किया। वे बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि अगर अमृत राक्षसों के हाथों में लग गया, तो उनकी योजना कभी सफल नहीं होगी। इसलिए उन्होंने अमृत-पात्र को राक्षसों से दूर रखा, कभी स्वर्ग में, कभी धरती पर और कभी पाताल में। कहीं राक्षसों को पता न चल जाए। लेकिन इस चीज को लंबे समय तक छिपाया नहीं जा सका। भगवान विष्णु जानते थे कि अमृत के लिए देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध अवश्य होगा, इसलिए वह अमृत-पात्र के साथ मोहिनी रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने अमृत पान के लिए दोनों देवताओं और राक्षसों को अलग-अलग पंक्तियों में बैठने के लिए कहा। लेकिन मोहिनी की कटाक्ष और मनोरम मुस्कान देखकर राक्षस मोहित हो गए। वे अमृत के बजाय मोहिनी हासिल करने में अधिक रुचि दिखाने लगे। यह अवसर देखकर भगवान विष्णु 'मोहिनी' के भेष में देवताओं को अमृत देने लगे।

"अद्भुत, बहुत अच्छी कहानी सुनाई, हाना, ग्रीक महाकाव्यों में इस तरह की अनेक कहानियाँ हैं। "
"क्या तुम केवल कहानी सुनकर संतुष्ट होना चाहते हो या इसके अंतर्निहित सार को जानने में भी रुचि रखते हो?"

"बेशक, मैं इसके आंतरिक अर्थ को जानना चाहता हूं। "

"तो सुनो। देवता और राक्षस क्रमशः अच्छे और बुरे के प्रतीक हैं। साधक अच्छे और बुरे दोनों रास्तों से गुजरते हुए आगे बढ़ते हैं, जिसे आप दर्शन की भाषा में ज्ञान और अज्ञान कहते हैं। क्षीर-सागर मनुष्य का मन है और समुद्र की तरंगें मन की चेतना हैं। क्या आप जानते हैं कि मंदार पर्वत किसका प्रतीक है? 'मंदार' का मतलब एकाग्रता है। जिस तरह अपनी खोल के अंदर छिपकर कछुआ दुनिया से विच्छिन्न होता है, वैसे ही एक साधक को दुनियादारी से दूर रहना चाहिए। वासुकी नाग हमारी इच्छा है। इच्छाओं का अतिभोग करने से ज़हर निकलता है। मोहिनी एक अहंकारी आदमी के लगाव और आकांक्षाओं का प्रतीक है। फिर धनवंतरी किसका प्रतीक है? यह अमरत्व या मुक्ति की खोज है। "

"वंडरफूल, माय गर्ल, " कहते हुए अल्बर्टो ने हर्षा को कमर से पकड़कर उसके माथे को चूमा। "मुझे तुम पर गर्व है, हाना, तुम मेरे जीवन की सबसे अनमोल वस्तु हो, मुझसे वादा करो, तुम कभी भी मुझे छोड़कर नहीं जाओगी, हाना। "

उस समय हर्षा लज्जा से पानी-पानी हो गई। शर्म से उसकी नाक थरथरा रही थी। अल्बर्टो ने सार्वजनिक स्थान पर उसका चुंबन लिया था। लोग क्या सोच रहे होंगे, जिन्होंने यह दृश्य देखा होगा ! पता नहीं क्यों, उसकी आँखों में आँसू आ गए। छाती में वह उत्तेजना महसूस करने लगी। सिहरन से सारे रोम खड़े हो गए थे उसके। "यह तुम्हारा पुर्तगाल नहीं है। मेरी कमर से अपना हाथ बाहर निकालो, मैं बिल्कुल सहज महसूस नहीं कर रही हूं। "
कहते ही अल्बर्टो ने अपना हाथ उसकी कमर से बाहर निकाल दिया।

उसने आश्चर्य से पूछा "क्या मुझसे कुछ गलती हो गई ?"

हर्षा अभी भी अपनी कमर पर उसके हाथ का स्पर्श अनुभव कर रही थी। क्या अल्बर्टो उसकी बात से नाराज हो गया? क्या अपमानित अनुभव कर रहा है ? फिर वह चुप क्यों है ? उसका मन हो रहा था यह कहने के लिए कि वह भी अपने जीवन में उसके जैसा एक साथी चाहती थी। जिसे पाकर वह अपना खाना-पीना सब भूल जाती। भूल जाती, दिन-रात, शोक-दुख। नहीं, हर्षा अपने दिल की बात नहीं कह पाई। हडबड़ाकर उसने अल्बर्टो का हाथ पकड़कर कहा: "क्या अब हम घर चलें?" दोनों चुपचाप पार्क के गेट की तरफ़ चले गए।

2.

“क्या तुमने पीटरब्रुक का नाम सुना है, हाना?"

"कौन है यह ?"

"पीटरब्रुक का महाभारत पश्चिमी देशों में बहुत प्रसिद्ध है। "

" सही? क्या उन्होंने महाभारत को अंग्रेजी में लिखा है? "

"ओह, नहीं, नहीं, उन्होंने महाभारत पर एक फिल्म बनाई है। "

"मैंने बी॰आर॰चोपड़ा का महाभारत टी॰वी॰ पर देखा है। । "

"क्या तुम उस बी॰आर॰ के सोप ओपेरा की बात कर रही हो, जिसमें समय का पहिया घूमता है?"

"ठीक वही है, तो तुमने भी बी॰आर॰ का महाभारत देखा है, अल्बर्टो। "

"हाँ, मैंने देखा। फिर भी मुझे पीटरब्रुक के महाभारत की गुणवत्ता बेहतर लगती है। "

हर्षा ने आश्चर्य से कहा, " क्या मतलब ?" "क्या तुम्हें पता हैं कि बी॰आर॰का महाभारत हर रविवार को एक घंटे के लिए पूरे भारत के हृदय की धड़कन को रोक देता था? लोग अपने सारे काम-धाम छोड़कर टीवी के सामने बैठ जाते थे। "

" हो सकता है। लेकिन यह कोई तर्क नहीं है। जब तक तुम पीटरब्रुक की महाभारत नहीं देख लेती हो तब तक तुम इसे नहीं समझ पाओगी। ”

हर्षा को अल्बर्टो पर बहुत गुस्सा आ रहा था। देखो, इस आदमी का साहस देखो। उसका रुचिबोध? यह कैसे संभव है? एक विदेशी व्यक्ति भारतीय नाड़ी को पकड़ सकता है, जबकि वह भारतीय नहीं है। भारत में बच्चे-बच्चे को रामायण और महाभारत की कहानियों का पता है; एक अनपढ़ औरत भी एक घंटे या उससे ज्यादा समय तक  महाभारत की बता सकती है। लेकिन अल्बर्टो उसे कह रहा है कि पीटरब्रुक का महाभारत बेहतर है?

नहीं, वह दो कारणों से अल्बर्टो के साथ बहस नहीं कर सकती। पहला कारण, उसने पीटरब्रुक का महाभारत नहीं देखी है और दूसरा कारण, महाभारत अल्बर्टो की कमजोरी है। वह महाभारत से बहुत प्रभावित था। जैसे एक बार उसने पूछा: " दुर्योधन की माता गांधारी, कृष्ण को ईमानदार और सत्यवादी नहीं मानती थी न ? गांधारी को कभी-कभी कृष्ण की भूमिका पर संदेह होता था। मैं ठीक कह रहा हूं, हाना ?  और वह कभी कहता:  कुंती और सूर्य के पुत्र कर्ण को अर्जुन का प्रतिद्वंद्वि क्यों बनाया?  कृष्ण की सहायता और सलाह के कारण उसकी दुखद  मौत हुई? उसका पूरा जीवन कटुता और आत्म-घृणा में क्यों बीता ? वह तो अपने जन्म के लिए ज़िम्मेदार नहीं था। क्या तुम्हें पता हैं, फ्रायड ने अपने अध्याय 'मूसा और एकेश्वरवाद' में कर्ण का उदाहरण दिया है?

हर्षा अल्बर्टो के ऐसे सभी सवालों का कैसे उत्तर दे पाती ? ये सवाल तो बचपन से उसके दिमाग में घूम रहे हैं।  जीवन सभी दर्शन, पूर्वजन्म, परजन्म और कर्मफल के सिद्धांत इत्यादि को ध्यान में रखने पर भी उसे एक निर्धारित नियम नहीं मिला। आज तक कर्ण के लिए उसके मन में उनकी थोड़ी सहानुभूति है।

हर्षा ने कहा: "मैंने कहीं गांधारी के बारे में पढ़ा था। एक बार उसने कृष्ण से पूछा, 'हे अंतर्यामी!, हे परमपुरुष! क्या आप मुझे बता सकते हैं कि मेरे कौनसे पापों के कारण मैंने अपने सौ-पुत्रों को खो दिया हैं? क्या तुम जानते हो अल्बर्टो, कृष्ण ने क्या उत्तर दिया था? कृष्ण ने न्याय, परजन्म और कर्मफल की बात कही थी। उन्होंने कहा था, 'ऐसा नहीं है कि हम सदैव इस जन्म के कर्मफल भोगते हैं। हमारी आत्मा जन्म-जन्मों के पाप-पुण्य ढोती जाती है। माँ, आप अपने पूर्व जन्म के कर्मों के फल भोग रही हैं। ' उन्होंने गांधारी को अपनी आँखें बंद कर अपने पूर्व जन्मों के बारे में जानने की सलाह दी। गांधारी को अपनी आँखें बंद करते ही अपने पूर्वजन्म दिखने लगे। लेकिन उसे यह महसूस नहीं हुआ कि उसने कहीं कुछ पाप किया है। जब उसने कृष्ण को यह बताया, तो कृष्ण ने फिर से एक बार आँखें बंद कर अपने पूर्व जन्म का अनुधान करने के लिए कहा। उसने देखा कि अपने पिछले छह जन्मों में उसने कोई पाप नहीं किया है। अंत में, वह अपने पिछले सातवें जन्म के दृश्य देखने लगी। उसने देखा कि वह चंचल लड़की बालिका के रूप में एक बार वह समुद्र तट पर भ्रमण कर रही थी तो वहाँ कछुए के अंडे देखकर उसकी उत्सुकता जागृत हो गई। उसने एक के बाद एक करते हुए सौ अंडे

तोड़ दिए। निरीह कछुए के सौ अंडों को तोड़ने के खातिर उसे अपने सात जन्मों के बाद इस जन्म में बिना किसी पाप के सौ बेटों को  खोना पड़ा। "

अल्बर्टो कहानी सुनकर कुछ समय के लिए चुप रहा। फिर उसने कहा:

"क्या यह विश्वसनीय है? सात जन्मों तक... ? "

" अल्बर्टो, मुझे कुछ भी नहीं पता। मुझे तो यह भी पता नहीं कि मौत के बाद जीवन है या नहीं, यह भी पता नहीं कि क्या पाप-पुण्य वास्तव में मनुष्यों का पीछा करते हैं या नहीं? मैं ऐसे जटिल योग-वियोग के बारे में नहीं जानती। मुझे नहीं मालूम कि किसी विश्व नियंता ने अपने आश्रितों के लिए ये नियम बनाए है या सब-कुछ बिना किसी कार्य-कारण के घटित होता है? लेकिन मुझे लगता है कि मनुष्य को बिना अपनी गलती के अनेक आकस्मिकताओं का सामना करना पड़ता है। "

अल्बर्टो ने सिर हिलाकर कहा: " सही है। "

"क्या सही है ?"

"ओह, कुछ भी नहीं, मैं इन अनसुलझे प्रश्नों के बारे में सोच रहा था। "

उससे परिचित होने के कुछ ही दिनों के भीतर  हर्षा को पता चला था कि अल्बर्टो का एक छद्म नाम है और उसने उस छद्म नाम से कुछ निबंध लिखे थे। वह विदेशी नाम नहीं था, वह नाम था युधिष्ठिर।

अल्बर्टो ने कहा: "युधिष्ठिर ने कभी भी झूठ नहीं बोला, हाना, मैं भी कभी तुमसे झूठ नहीं बोलूंगा। वे धर्म-पुत्र, धर्म-रक्षक थे; हालांकि मैं धर्म-पुत्र नहीं हूँ, मगर धर्म-रक्षक होने में कोई समस्या नहीं है। नहीं, नहीं, मैं कट्टरपंथी नहीं हूं। धर्म-रक्षक का गलत अर्थ मत लगाना। मैं सत्य-धर्म की बात करूंगा। "

हर्षा इस पागल युधिष्ठिर के मुंह की देखने लगी। क्या इस आदमी का कभी पूर्व जन्म भारत में हुआ था? अल्बर्टो ने उसे महाभारत के  अध्याय 'स्वर्गारोहण' की कुछ घटनाओं को याद करने के लिए कहा। "सभी स्वर्ग  पहुँचने से पहले एक के बाद एक गिर गए। मगर अकेले युधिष्ठिर अविचलित भाव से चल रहे थे। आखिर तक केवल एक कुत्ता उनके साथ था। युधिष्ठिर मायामुक्त थे। मोक्ष पाने व्यक्ति ही ऐसा हो सकता है। फिर वह अकेला यात्री थे। वह अपने आप के नहीं थे। सभी की उपस्थिति के बावजूद भी वह अकेले थे। यह एक अद्भुत उत्थान है। हिमालय केवल एक प्रतीक है। शिखर तक पहुंचने का मतलब है मोक्ष। मैं उस मुक्ति की तलाश में  हूं, हाना, मैं मुक्ति चाहता हूं। "

उसकी दिन-प्रतिदिन ये बातें सुनते-सुनते हर्षा उसकी तरफ आकर्षित हो रही थी। महाभारत की कहानियां और उपाख्यान उसे कंठस्थ थीं। महाभारत का यह चरित्र प्राय इस महाकाव्य के दायरे में विचरण करता था।

पिछले तीन-चार महीनों से वे एक दूसरे से परिचित हुए थे। उनकी पहला परिचय नाटकीय तरीके से हुआ था। पुरी की निवासी होने के कारण हर्षा ने अपने बचपन से कई विदेशियों को देखा था। इसलिए वह विदेशियों के नाम और पते से बहुत परिचित थी। अल्बर्टो की व्यक्तिगत तौर पर मिलने से पहले उसने उसे लेंस में देखा था। पुरी के रथयात्रा पर अपना प्रोजेक्ट पेपर तैयार करने के लिए उसने कुछ तस्वीरें खींची थी। उस समय अल्बर्टो उसे अपने कैमरे के लेंस में दिखाई दिया था। उसने अनगिनत मनुष्यों की भीड़ के भगदड़ में से अल्बर्टो को बाहर लाकर खुले स्थान पर खड़ा किया था।

"अरे, क्या तुम्हें अपने जीवन की परवाह नहीं है? तुम वहाँ क्या कर रहे थे ? भीड़ का इतना बड़ा समुद्र तुम्हारी तरफ आ रहा था, तुम्हें पता नहीं चला ? "

जैसेकि कोई ध्यान की अवस्था में से अपनी प्रकृत अवस्था में लौट आता है, वैसे ही वह चौंककर कहने लगा : "धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद आपको। मुझे खेद है कि मेरी वजह से तुम्हें कष्ट उठाना पड़ा। "

"ठीक, ठीक है, क्या तुमने भगवान जगन्नाथ के दर्शन कर लिए?" तब तक वे एक सुरक्षित स्थान पर आ गए

थे।

"नहीं, मैंने उसे स्पष्ट रूप से दर्शन नहीं किए है, मगर मैं निश्चित रूप से दर्शन करना चाहता हूं। "

उस दिन बहुत मुश्किल से हर्षा ने बड़दांड के किनारे अपने सहेली के घर की छत पर जगह का इंतजाम किया था।

अगर हर्षा नहीं होती तो पता नहीं कितने डालर खर्च करने पड जाते अल्बर्टो को, फिर उसे भगवान जगन्नाथ के 'दर्शन हो पाते, इसमें संदेह था। रथ खींचते-खींचते अंधेरा हो गया था। तीर्थयात्रियों के समूह छत से नीचे उतर रहे थे।

सरिता हर्षा के कान के पास अपना मुंह लाकर फुसफुसाई, "यह गोरा कौन है? क्या दिल्ली से तुम्हारा परिचय हैं? "

"आह, तुम्हारा मतलब क्या है? इस आदमी को कुछ मिनट पहले तक जानती नहीं थी। जब मैं अपने प्रोजेक्ट पेपर की तैयारी के लिए कुछ तस्वीरें खींच रही थी, तो यह मूर्ख खचाखच भीड़ में चलते हुए रथों को देख रहा था। इतनी भीड़ में वह कुचल गया होता, अगर मैं उसे बाहर नहीं खींचती तो कल के समाचार पत्र में इसकी मृत्यु की खबर छपती। सच कह रही हूँ, मैं इसका नाम तक नहीं जानती। तुम्हारा घर छोड़ने के बाद हम अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे। "

हर्षा ने उस दिन सरिता से कहा था कि हम अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे, लेकिन क्या वह खुद अपने रास्ते जा पाई? उसके लिए अल्बर्टो की उपस्थिति अचानक और अप्रत्याशित थी जैसे कि किसी के जीवन में आकस्मिकताएँ और दुर्घटनाएं होती हैं।

"क्या आप ब्रिटेन के वासिन्दा हैं?" सरिता के घर से बाहर निकलते समय हर्षा ने पूछा।

"नहीं, नहीं, " अल्बर्ट ने अपना सिर हिलाया।
"तो क्या आप ऑस्ट्रेलिया या अमेरिका से हैं?"

"मैं पुर्तगाल से हूं, मेरा नाम अल्बर्टो पासोआ है। कभी मेरे माता-पिता गोवा में रहते थे। लेकिन मैं लिस्बोआ के नजदीक एक छोटे से गांव कॉकसीस में रहता हूं। "

"यह लिस्बोआ कहां है?"

"लिस्बोआ, पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन ही है। क्या तुम पुरी की रहने वाली हो ? क्या मैं तुम्हारा नाम जान सकता हूँ ?"
"हां, हम पुरी में रहते हैं और मेरा नाम हर्षा है। "
अल्बर्टो ने कहा, "बहुत अच्छा हुआ कि हमारी मुलाक़ात हो गई। "

"इसमें क्या अच्छा है?"

"मैं तुमसे पुरी और जगन्नाथ के बारे में बहुत कुछ जान सकता हूं। बेशक, मुझे पुरी के बारे में ईस्कॉन की पुस्तकों से कुछ जानकारी है। लेकिन तुमसे और ज्यादा जान सकूँगा। तुम्हें पता है, समुद्र तट पर एक फोटोग्राफर मेरे पीछे पड़ गया था? मुझे पता है कि मुझे इन  लोगों से सही जानकारी नहीं मिल सकती है। किसी तरह मैं उसके चंगुल से बचकर आया हूं। "

"सच में ?" हर्ष जोर से हँस पड़ी।

"हर्स, क्या तुम मुझे बता सकती हों कि जगन्नाथ का कलेवर इतना अमूर्त क्यों है?"

"ओह, आप गलत बोल रहे हैं, मेरा नाम हर्षा है, हर्स नहीं है। "

"मुझे बहुत खेद है कि मैं तुम्हारा नाम सही ढंग से नहीं कह पा रहा हूं। मगर मुझे तुम्हारे  नाम का अर्थ पता है। "

"क्या ?" हर्षा ने आश्चर्य से पूछा।

“तुम्हारे नाम का मतलब है आनंद, सुख, हैप्पीनेस, प्लीजिंग, ब्लिसफुल। क्या मैं ठीक कह रहा हूँ ?”

उस दिन वह सचमुच चकित हों गई थी कि एक विदेशी आदमी उसके नाम का अर्थ कैसे बता सकता है।
"वास्तव में, अल्बर्टो तुमने मुझे बहुत आश्चर्यचकित किया है। "

"मैं थोड़ा-थोड़ा संस्कृत जानता हूं। मुझे संस्कृत पसंद है। मैं देवनागरी स्क्रिप्ट पढ़ सकता हूं, मगर ज्यादा तेजी से नहीं। तुम्हारी भाषा संस्कृत से अलग है? मेरा मानना है कि तुम्हारी भाषा संस्कृत जैसी है। अन्यथा, तुम्हारा नाम हर्षा कैसे हो सकता है? "

"अरे, अल्बर्टो, आप जो चाहें कर सकते हैं, लेकिन मेरा नाम विकृत मत करो। "

अल्बर्टो हर्षा के असंतोष दुखी होने के बजाए हँस-हँसकर लोट-पोट हों गया। शायद इसी दौरान वह हर्षा के साथ थोड़ा सहज हो गया था।

" बचपन से ही भारत मेरी कमजोरी रहा है। भारत आने की बड़ी इच्छा थी। मुझे आशा थी कि निश्चित रूप से एक दिन वह इच्छा पूरी होगी। अब मैं दिल्ली में एक अतिथि प्रोफेसर के रूप में आया हूं। "

"क्या तुम दिल्ली में रहते हों ? मैं भी दिल्ली में पढ़ रही हूं। मैं दक्षिण दिल्ली में रहती हूं, फिर तो वहाँ कभी हमारी मुलाक़ात हों सकती हैं। "

"मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझूँगा। क्योंकि तुमने मेरे प्राण बचाए हैं। "

"सब 'कालिया' की इच्छा है, किसी का जीवन बचाने वाली मैं कौन हूँ? "

"यह 'कालिया' कौन है? 'कालिया' का मतलब क्या है?

"कालिया भगवान जगन्नाथ है। क्या तुमने देखा नहीं कि उसका चेहरा काला मुगुनी पत्थर की तरह है? "

" क्या ? मैंने ध्यान नहीं दिया। मगर तुमने यह नहीं बताया कि जगन्नाथ की अमूर्त कल्पना क्यों की गई है? "

" क्या भगवान का कोई रूप या आकार है? क्योंकि हम मनुष्य हैं, इसलिए हमने उन्हें मानवीय आकार दिया हैं। यदि पौधे, मवेशियों या पक्षियों में से कोई भी प्राणी अधिक बुद्धिमान और विवेकशील होता, तो वे भगवान को अपना रूप देते, है ना?

"हां, तुम सही कह रही हों" अल्बर्टो ने कहा, " फिर भगवान का रूप क्या हो सकता है? "

उस दिन उसने राजा इंद्रद्युम्न और रानी गुंडीचा की कहानी सुनाई और साथ ही, जगन्नाथ के आधे गढ़ने की कहानी भी सुनाई।

हर्षा के घर के नजदीक आकर उसने कहा, "मैं जा रहा हूँ। "

"हम कल मिलेंगे?"

"मैं नहीं कह सकती। "

"फिर दिल्ली में?"

"कैसे कह सकती हूं, अल्बर्टो? यह दुनिया इतनी बड़ी है, हम कहीं-न-कहीं एक-दूसरे से मिल सकते हैं, मगर सवाल यह है कि हम उस समय एक दूसरे को पहचानने की स्थिति में होंगे या नहीं? "

अल्बर्टो का चेहरा एक पल के लिए उदास हो गया। अगले ही पल उसने मुस्कुराहते हुए कहा: " मुझे लगता है कि तुम बड़ी निराशावादी हों। क्या मेरा अनुमान सही है? लेकिन इतनी कम उम्र में जीवन के प्रति इतनी  उदासीन क्यों हो ? "

"हे, तुम बहुत गंभीर हो गए हो, अल्बर्टो! बचपन के दिनों से हम समुद्र तट और बड़दांड पर विदेशियों को देख रहे हैं। सभी एक जैसे दिखते हैं। हमें पता नहीं चलता है कि कौन पुरी में पहली बार आया या दूसरी बार ? फिर कौन इतनी दूर बारबार आएगा और क्यों ? मैंने तुम्हें उन विदेशियों में से एक समझकर यह बयान दिया है। मगर मुझे लग रहा है कि तुम दूसरों से अलग हों। "

एक-दूसरे से विदा लेते समय अल्बर्टो ने हर्षा के मोबाइल नंबर लेते हुए कहा: "युधिष्ठिर कभी झूठ नहीं बोलता है, तुम देखोगी, मैं तुम्हें एक दिन दिल्ली में खोज लूँगा। "

घर पहुंचने के बाद हर्षा ने अपनी मां को अल्बर्टो के बारे में बताया। मां अल्बर्टो का नाम 'युधिष्ठिर' सुनकर बहुत हंसी। बहुत दिनों के बाद हर्षा के होंठों पर मुस्कुराहट देखकर पिता को राहत मिली। पिताजी कहने लगे कि जब वह स्कूल में पढ़ रहे थे तो उन्होंने 'जवा कुसुम संकासम' का जप करते हुए सूर्य भगवान को अर्घ्य देते हुए एक विदेशी को देखा था। लोग उसे 'गोरा पंडित' कहते थे। कुछ लोग उसे 'लंदन पंडा' कहते थे। उस दिन हर्षा पिताजी से लंदन पंडा की बात सुनकर खूब जोर से हंसी थी।

ओडिशा में रहने के बाद हर्षा दिल्ली लौट गई। वह ये सारी बातें भूल गई थी, पढ़ाई में व्यस्त रहने के कारण। अचानक एक दिन अल्बर्टो का फोन आया उसके पास।

“ ह्रासा, मुझे पहचान रही हो? मैं अल्बर्टो, युधिष्ठिर। क्या तुम्हें याद है, हम पुरी में मिले थे? "

"हां, अल्बर्टो, क्या तुम दिल्ली लौट आए हो? वापस कब आये ? यह वाकई बहुत बड़ी बात है कि तुमने मुझे याद रखा!”

“मैं कैसे भूल सकता हूँ ? तुम मेरी प्राण रक्षक हो। "

"नहीं, मैं नहीं, भगवान ने तुम्हें बचा लिया। "

"तुम्हारा भगवान में अगाध विश्वास है। "

"क्या तुम्हारा नहीं है ?"

"हां, मेरा विश्वास है, ह्रासा। मैं तुम्हें मिलना चाहता हूँ, बताओ, हम कहां मिल सकते हैं? "

"क्या कुछ काम है?"

"तुम्हें पूछने के लिए बहुत सारे सवाल हैं मेरे पास, फोन से पूछना संभव नहीं है, ह्रासा। मुझे बताओ, कौनसी जगह तुम्हारे लिए सुविधाजनक होगी। क्या मैं तुम्हारे घर आ सकता हूं? "

"नहीं, घर पर संभव नहीं है। इस घर में हम तीन सहेलियाँ एक साथ रहती हैं। मेरी सहेलियों को अच्छा नहीं लगेगा। ठीक है, क्या तुम ग्रीन पार्क आ सकते हो? मैं गेट पर तुम्हारा इंतजार करूंगी। "

हर्षा ने कभी नहीं सोचा था कि अल्बर्टो दिल्ली लौटने के बाद उसकी खोज-खबर लेगा। उसके मन में उत्सुकता पैदा हो गई कि अल्बर्टो का क्या काम हो सकता है? किस तरह के प्रश्न पूछना चाहता है वह ? इस बीच वह उसका चेहरा तक भूल गई है, क्या वह उसे पहचान पाएगी? भगवान ने उसे बचा लिया, वह एक यूरोपीयन से मिलने जा रही है, भारतीय से नहीं।

हर्षा विभाग से सीधे ग्रीन पार्क में गई। वह आदमी क्या सवाल पूछेगा, इस बारे में कोई संकेत भी नहीं दिया था, इसलिए एक भयानक चिंता उसके मन में हो रही थी। ऐसे क्या सवाल है जिसके उत्तर केवल हर्षा ही दे सकती हैं? खैर छोड़, इस बारे में चिंता करने का कोई फायदा नहीं है, मिलने पर अपने आप पता चल जाएगा। हो सकता हैं, वह आदमी झूठे सवालों के बहाने मुझसे दोस्ती करना चाहता हो।

दिल्ली में उसका कोई प्रेमी नहीं था। अंगुल से आए विष्णु महापात्र ने करीब आने के लिए बहुत रुचि दिखाई, तो वह सतर्क हो गई थी। इसी वजह से भैरवी और नवीना उस पर खूब हंसी थी। उन्होंने उसे छेड़ा भी, मगर वह यह कभी नहीं कह पाई कि उसे इस पुरुष- दुनिया से बहुत डर लगता है। वह विष्णु महापात्रा से डर गई थी, मगर कि वह अल्बर्टो के फोन पर कैसे बाहर आ गई? क्या भैरवी और नवीना कभी इस बात पर विश्वास कर पाएँगी? वे कहेंगी: "तुम्हारे जैसी रूढ़िवादी लड़की सीधे विदेशी दोस्त से मिलती है, बढ़िया! मान गए तुम्हें। विष्णु मूर्ख था, जो लाइन मार रहा था। "

क्या वह गलती कर रही थी? पता नहीं क्यों, वह डरी हुई थी। वह रिक्शा बदलकर घर लौट जाना चाहती थी। दिल्ली पुरी शहर की तरह नहीं है, वह एक अजनबी को मिलने के लिए दिल्ली जैसी अनजान जगह में बाहर आ गईं? लेकिन वह रिक्शे से नीचे नहीं उतर पाई और आखिरकार रिक्शा-चालक ने उसे गेट पर छोड़ दिया।

बहुत दिनों के बाद वह अपने खोल से बाहर आकर मानो बदलती दुनिया देख रही हो; कांपते-कांपते उसने गेट के भीतर प्रवेश किया। उसने एक दो कदम बढ़ाए नहीं होंगे कि उसकी नजर अल्बर्टो पर पड़ी।

"हाई, ह्रासा!" उसने हाथ हिलाकर उसे इशारा किया।

आदमी उसे देखते ही पहचान गया? हर्षा ने भी अपना हाथ लहराया। अल्बर्टो उसे देखकर बहुत खुश हुआ और कहा 'नमस्ते'

हर्षा हंसने लगी। यह आदमी भारतीय तौर-तरीके अच्छी तरह से जानता है। दोनों एक बेंच पर बैठ गए।

अल्बर्टो ने पूछा, " कैसी हो?"

"हां, मैं ठीक हूं। तुम कुछ पूछना चाहते थे? "

अल्बर्टो ने कहा, "हां, पहले आराम से बैठ तो जाओ। "

डर और चिंता की लकीरें उसके चेहरे पर दिखाई दे रही थी? क्या वह अल्बर्टो के पास सहज नहीं थी? उसे यहाँ कौन पहचानता है ? फिर इतना संकोच क्यों है ? दोनों चुपचाप बैठे रहे। शाम हो रही थी, कुछ बुजुर्ग लोग वहाँ से गुजर रहे थे। कुछ दूरी पर कुछ लोग अपने हाथ ऊपर उठाकर ज़ोर-ज़ोर से हंस रहे थे। शायद वे आर्ट ऑफ लिविंग का अभ्यास कर रहे थे। अल्बर्टो ने पूछा, "वे लोग इतनी जोर से क्यों हंस रहे हैं, ह्रासा ?"

"वे इस तरह अपने दुख, अवसाद, थकान और निराशा को दूर कर रहे हैं। "

"इस मेकेनिकल हंसी से ?"

"जीवन धीरे-धीरे इतना मेकेनिकल होता जा रहा है कि हम हंसना भूल जा रहे हैं। "

"क्या यह एक्सरसाइज़ है?" अल्बर्टो ने पूछा।

"नहीं, अल्बर्टो, नहीं ... वे जीवन जीने की कला सीख रहे हैं। ठीक है, मुझे बताओ, तुम क्या पूछना चाह रहे थे? "

"मैंने आज एक वेबसाइट में पढ़ा है कि गौतम बुद्ध ओडिशा में पैदा हुए थे, क्या यह सच है?"

"मुझे नहीं लगता कि यह सच है, " हर्षा ने कहा। "हां, यहां कुछ बौद्ध विहार हैं, प्रसिद्ध कलिंग युद्ध यहां लड़ा गया था, जिसके बाद अशोक 'चंडाशोक' से 'धर्माशोक' में बदल गए थे। लेकिन बुद्ध का जन्म यहां हुआ था? हां, कुछ लोग मानते हैं कि भगवान जगन्नाथ के 'नवकलेवर' के समय बुद्ध का एक दांत 'नाभि-ब्रह्म' में रखा जाता है। मगर मैं बुद्ध की जन्म-स्थली ओडिशा को मानने के लिए तैयार नहीं हूं। "

उस दिन उसने भगवान जगन्नाथ के 'नव-कलेवर' की कहानी अल्बर्टो को विस्तार से सुनाई थी। उसके बाद उसने कहा, "ह्रासा, यू आर वंडरफूल। "

"तुम मेरा नाम सही ढंग से उच्चारण करना कब सीखोगे ?" हर्षा ने मुस्कराते हुए पूछा।

"हे! मैं बहुत शर्मिंदा हूं!पता नहीं क्यों, मैं तुम्हारा नाम का ठीक ढंग से उच्चारण नहीं कह पा रहा हूं। "

"ठीक है, ठीक है। नाम केवल नाम है, इसमें क्या रखा है? तुम्हें जो पसंद है, उस नाम से मुझे बुलाओ। "

"सही है। मगर मैं दोषी महसूस करता हूं क्योंकि जब मैं तुम्हारा नाम सही ढंग से बोलने में असमर्थ हूं, तो मैं तुम्हारी संस्कृति कैसे जान सकता हूं? "

"अल्बर्टो नाम के संबंध में एक अच्छी कहानी है! सुनना चाहेंगे? "

"हां, निश्चित रूप से, " छोटे बच्चे की तरह उसकी दिलचस्पी बढ़ गई।

"मदालसा नामक एक महान महिला थी। बचपन से ही शास्त्रों का गहन अध्ययन कर उसने पांडित्य हासिल कर लिया था। उसका राजा शत्रुजीत के बेटे ऋतुध्वज से शादी हो गई। समय पर उसका एक बेटा हुआ। राजा अपने भावी वंशधर को देखकर बहुत खुश था। वीरता क्षत्रियों का सबसे बड़ी गुण होता है, इसलिए उसने अपने बेटे का नाम रखा विक्रांत। बेटा जब बड़ा हुआ, तो एक दिन मदालसा ने उसे कहा, ' तुम्हारा नाम विक्रांत रखा गया है, इसलिए किसी और दिए गए नाम से तुम्हारा कोई संबंध नहीं है। आत्मा ही एकमात्र सच्चाई है, शरीर और नाम चाप अस्थायी और मिथ्या हैं। इसलिए सांसरिक सुख-दुख में अपना समय बर्बाद किए बिना अनासक्त भाव से सच्चाई की तलाश करो। ' अपनी मां के उपदेश से विक्रांत ने संन्यास ग्रहण कर लिया, अपने आपको राजसिंहासन से दूर रखते हुए। धीरे-धीरे समय बीतता गया, उनके दूसरे बेटा पैदा हुआ। इस बार राजा ने उसका नाम सुबाहू रखा। फिर एक और बेटा हुआ, जिसका नाम शत्रुमर्दन रखा गया। उन नामों का मदलासा उपहास करने लगी। मां के संस्पर्श से इन दोनों पुत्रों ने 'आत्म-ज्ञान' प्राप्त किया और इस दुनिया को मिथ्या माना। राजा हमेशा अवसाद में रहने लगा, यदि सारे पुत्र संन्यासी बने गए तो राजा कौन बनेगा ?

कौन शासन की बागडोर कौन संभालेगा? जब चौथा बेटा पैदा हुआ था, तो राजा ने उसे नाम नहीं दिया और उसे एक उपयुक्त नाम देने के लिए मदलासा से अनुरोध किया। मदलासा ने उसका नाम रखा 'अलर्क', जिसका अर्थ है पागल कुत्ता। राजा यह नाम सुनकर दुखी हुआ। विक्रांत, सुबाहू या शत्रुमर्दन जैसे नाम दिए बिना रानी ने उसका नाम रखा 'अलर्क'। रानी ने कहा कि दुनिया में अधिकांश लोग नाम और उपाधि पाने के लिए लगभग पागल कुत्ते बन गए हैं, जबकि ये नाम या उपाधि व्यक्ति की वास्तविक सच्चाई को छिपाती है। इसलिए यदि आप खराब नाम रखते हैं, तो बेटे का नाम के प्रति ज्यादा लगाव नहीं होगा। अंत में अलर्क ने ही सिंहासन की जिम्मेदारी उठाई और अपना शेष जीवन 'वानप्रस्थ' में बिताया।

अल्बर्टो यह कहानी सुनकर बहुत खुश हुआ था, "वास्तव में बहुत अच्छी कहानी है। क्या मैं तुम्हें मदालसा कह सकता हूँ? "

"नहीं, तुम इस नाम का भी सही ढंग से उच्चारण नहीं कर सकते हो। तुम मुझे उस नाम से पुकार सकते हो, जिसका तुम आसानी से उच्चारण कर सकते हो। "

"क्या मैं तुम्हें हाना कह सकता हूँ? यह पुर्तगाली नाम नहीं है, बल्कि एक जर्मन नाम है। तुम जानती हो, मेरी पत्नी क्रिस्टीना जर्मनी में पैदा हुई। "

"वास्तव में ?"

"वह बहुत दिनों से पुर्तगाल की निवासी बन गई हैं। "

"ठीक है। क्या तुम्हारे नामों का हमारे नामों की तरह अर्थ होता हैं, अल्बर्टो ? "

"निश्चित रूप से, उदाहरण के लिए, मेरा नाम 'अल्बर्टो' को इंग्लैंड या जर्मनी में 'अल्बर्ट' कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'एक स्वच्छ उदार मन। '

"और हाना का अर्थ क्या है?"

" लड़की, हम एक छोटी लड़की को ऐना या हाना कहते हैं। "

उस दिन से अल्बर्टो उसे हाना नाम से बुलाने लगा। मगर हर्षा अल्बर्टो को युधिष्ठिर के नाम से नहीं बुलाती थी, क्योंकि वह नाम उसकी त्वचा के रंग से मेल नहीं खा रहा था। "

"ठीक है, तुम्हारे पास पूछने के लिए बहुत सारे सवाल थे?"

"हाँ थे तो; मैं सोच रहा हूँ कि मैं उन्हें कल पूछूंगा। "

"फिर कल?"

"क्या कोई दिक्कत है, हाना?" अल्बर्टो बेंच से उठा। फुसफुसाते हुए कहने लगा, "मुझे पता नहीं चला, तुम्हारे साथ समय कितना जल्दी बीत गया। अगर हमारी कल मुलाक़ात होती हैं तो मुझे बहुत खुशी होगी। "

"देखते हैं। " कहकर हर्षा उठ गई।

3

वह बहुत बेचैन महसूस कर रही थी। हर पल एक युग की तरह लग रहा था। अपनी उत्कंठा को दबाने में असमर्थ होकर वह बार-बार बालकनी की ओर दौड़ रही थी। यद्यपि वह बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि उसकी दौड़ निरर्थक थी।
सड़क के उस तरफ से और न ही इस तरफ से कोई रास्ता नहीं था।
अल्बर्टो ने कई बार अपने यहाँ आने के लिए कहता था, मगर हर्षा इंकार कर देती थी। जबकि वह वहां पहुंच जाती थी, जहां अल्बर्टो उसे आने के लिए कहता था। अल्बर्टो उसके इस व्यवहार से आश्चर्यचकित था। उत्तर में हर्षा ने समझाया, "नहींअल्बर्टो, मैं नहीं चाहती कि कोई हमारे खिलाफ टिप्पणी करें। तुम जानते हो; मैं अकेले इस घर में नहीं रहती, मेरी सहेलियाँ मेरे साथ रहती हैं। मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता है कि अगर कोई तुम्हारे विरुद्ध कुछ भी बुरा कहता है। "

अल्बर्टो ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था: "क्यों कोई हँसेगा? हर व्यक्ति को अपना जीवन जीने का अधिकार है, अपनी गोपनीयता की सुरक्षा का अधिकार है। क्यों दूसरे उनके जीवन में झांक कर देखेंगे ? यूरोप में कोई भी किसी के निजी जीवन में सिर नहीं खपाता है। "

बार-बार मना करने वाली हर्षा सोच रही थी कि अगर अल्बर्टो यहाँ पहुंच जाता तो बहुत अच्छा होता। मगर अगले ही पल डर और संकोच उसे जकड़ लेता था। अपराध-बोध कीभावना से खुद को मुक्त नहीं करा पाती थी। यह अपराध-बोध क्यों ? कभी-कभी वह दृढ़ हो जाती थी तो कभी-कभी उसकी सारी दृढ़ता चूर-चूर हो जाती थी।

पहले-पहल ध्रुव-तारा की तरह अल्बर्टो उसके लिए कौतूहल था; धीरे-धीरे वह आदत बन गया और अब नशे की लत। हर दिन घंटे-दो घंटे बात नहीं करने पर उसे बेचैनी लगने लगती। मन के साथ पैर दौड़ना चाहते थे। पहले उसके सवाल अप्रासंगिक लगते थे, फिर बहुत दार्शनिक या तर्कसंगत लगते थे, फिर उसका संसर्ग अच्छा लगने लगा।

धूप धीरे-धीरे नरम होती जा रही थी, फिर भी मोबाइल नीरव था जैसे कि वह गहरी नींद में सो गया हो। उसने सारे दिन अलग-अलग समय में अल्बर्टो के नंबर लगाने का प्रयास किया था। कभी 'पहुँच से बाहर', कभी 'मोबाइल स्विच ऑफ है' या कभी 'यह नंबर मौजूद नहीं है' की सुरीली ध्वनि मोबाइल पर सुनाई देती थी।

हर्षा ने उस दिन अल्बर्टो के लिए सात सवाल तैयार किए थे। एक बार वह जानना चाहती थी: "तुम्हारे पुर्तगाल में प्रश्नोत्तरी का खेल क्यों खेला जाता है? क्या व्यक्तियों से मिलकर उनके गुणों या प्रकृति को नहीं जाना जा सकता है, उनके विधिवत साक्षात्कार की आवश्यकता क्यों है? "

"क्या प्रश्नोत्तरी का खेल हमारे देश में ही प्रचलित है, क्या तुम्हारे यहाँ नहीं है? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यक्षराज ने 'युधिष्ठिर-यक्षराज संवाद' में झील के किनारे युधिष्ठिर को बगुला बनकर सारे प्रश्न पूछे थे ?"

पुरानी कपड़ों के लुप्त होते रंग की तरह कई आख्यान-उपाख्यान हर्षा के मन से लगभग उतर चुके थे। उसने जवाब दिया: "हां, मुझे कुछ-कुछ याद आ रहा है। "

"महाभारत में इतने सारे संवाद हैं: 'अष्टावक्र-वली संवाद', 'भीष्म-कर्ण संवाद', 'इंद्र-अंबरीश संवाद ' आदि। क्या मैं सही कह रहा हूं न ?"

"उस दिन हर्षा ने माना कि अल्बर्टो कोई छोटा खिलाड़ी नहीं था। अगर उसने महाभारत के सबसे अंदरूनी प्रसंगों से कुछ पूछा तो वह कहीं की नहीं रहेगी। मगर वह यह जानकर प्रसन्न थी कि उसे भारतीय संस्कृति के बारे में काफी जानकारी है और उसे भारतीय संस्कृति से प्यार है। कितने विदेशी लोग होंगे, जो सही ढंग से भारत के बारे में जानकारी रखते हैं! ऐसे विद्वान व्यक्ति के लिए प्रश्नावली तैयार करना आसान नहीं था। उसने बहुत मेहनत कर सात सवाल तैयार किए थे

पहला प्रश्न: तुम्हारा सपना क्या है?

दूसरा प्रश्न: तुम्हारी नजरों में एक महिला के लिए क्या गुण होने आवश्यक है?

तीसरा प्रश्न: प्यार के बारे में तुम्हारी क्या राय है?

चौथा प्रश्न: तुम किस काम के लिए खुद को दोषी मानते हैं?

पांचवां प्रश्न: भीतर से तुम्हें क्या सहज लगता है?

छठवां प्रश्न: तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ी गलती क्या है?

सातवां प्रश्न: क्या भौतिकवादी दुनिया तुम्हें विचलित करती है?

हर्षा ने सभी सवालों को एक छोटे से कागज में लिख रखा था, मगर पूरे दिन अल्बर्टो का कोई अता-पता नहीं था। यह अप्रत्याशित था। दिल्ली लौटकर आने के बाद से वह उसके साथ नियमित संपर्क में था। कभी अगर विभाग में काम होता या उसे पुस्तकालय में जाना पड़ता, तो वह उसे फोन पर पहले से सूचित कर देता था।

शाम होने जा रही थी। न अल्बर्टो का फोन आया और न ही नवीना या भैरवी रूम में लौट आई। हर्षा को बहुत अकेलापन और बेचैनी लग रही थी। हालांकि भैरवी या नवीना से उसकी बनती नहीं थी, मगर उनकी अप्रासंगिक बातों में समय गुजर जाता था। छात्रावास में सीटें नहीं मिलने के कारण उन तीनों ने किराए पर एक मकान लिया था। कभी वे बारी-बारी से ख़ाना बनाते थे तो कभी होटल

से मंगा लेते थे। दोनों लड़कियां उससे दो-अढ़ाई साल छोटी थी। वे अपनी वेश-भूषा और आचार-व्यवहार में काफी आधुनिक थीं। मगर हर्षा पुरी के रक्षणशील परिवार की लड़की थीं। वह दस प्रेमियों के साथ डेटिंग की कल्पना कभी नहीं कर सकती थी। इसके अलावा, उसने जीवन की जिसकड़वाहट का सामना किया है, ऐसा कोई कर सकता है ?

हर्षा को कभी-कभी लगता था कि वह एक घने जंगल से घिरी हुई है। वह घने जंगल में अपना रास्ता खो चुकी है और चारों तरफ इधर-उधर भटक रही है। समाप्त नहीं होने वाले इस जंगल में क्या कोई उसका हाथ पकड़कर उसे आश्वस्त करेगा, चल मैं तुझे रास्ता दिखा देता हूँ। चल, समय रहते-रहते इस घने जंगल से बाहर निकल चलते हैं। वह यह नहीं जानती कि अल्बर्टो एक राजकुमार है या लकड़हारा, मगर इस अनन्त जंगल में वह उसे मिला है। सुनहरे देवदूत की तरह वह उसके सामने हाजिर हुआ था उसकी आँखों से आँसू पोंछकर उसके होठों के कोने में थोड़ी-सी मुस्कुराहट पैदा करने के लिए। ऐसा हो सकता है कि वह कल जंगल से कहीं गायब हो जाएं। हालांकि, वह अल्बर्टो के संसर्ग में इस भयावह जंगल को भूल गई थी।

पागल अल्बर्टो सब-कुछ जानने के लिए उत्सुक था। कभी-कभी हर्षा उससे पूछती:"तो आज कौनसा चैनल लगेगा ?"

"क्या मैं तुम्हें बोर कर रहा हूँ?" अल्बर्टो ने शर्म से पूछा।

"बिल्कुल नहीं, तुम्हारे साथ गप लगाने के लिए मैं पूरे दिन इंतजार करती रही। मगर क्या मैं तुम्हें हमेशा अपने देश के बारे में बताऊंगी, क्या तुम मुझे अपने देश के बारे में नहीं बताओगे?”

"क्यों नहीं बताऊंगा? तुमने कभी मुझसे पूछा? हाना, मुझे नहीं पता कि तुम्हारी वास्तव में इसमें रुचि हैं। क्या तुम मेरे देश को प्यार करती हो, जैसे मैं तुम्हारे देश को प्यार करता हूं? "

"क्या तुम वास्तव में मेरे देश से प्यार करते हो?" हर्षा ने उलटा प्रश्न किया।

"हां, मैं भारत को बहुत प्यार करता हूँ। क्या तुमने अभी तक नहीं देखा है? मैं भारत को प्यार करता हूँ, और मैं तुम्हें भी। मैं सही कह रहा हूँ, हाना, तुम जानते हो कि युधिष्ठिर कभी झूठ नहीं बोलता है। "

"मैं तुम्हें भी प्यार करता हूं। "अल्बर्टो ने इस तरह से कहा कि वह उसे प्यार करता है, क्योंकि वह भारत से प्यार करता है। मगर यह समझ में नहीं आ रहा था कि उस प्यार में उसके लिए वास्तविक प्रेम है या नहीं। एक अन्य मौके पर अल्बर्टो ने उससे पूछा था: "क्या तुम मुझे प्यार नहीं करती हो, हाना?"

"इस विदेशी पक्षी से ? आज यह है, कल नहीं हो सकता है?" हँसते हुए उलटा प्रश्न किया हर्षा ने। उसने हास-परिहास के बीच संयमित भाव से एक सत्य को छुपा दिया। नहीं, वह खुद को किसी भी परिस्थिति में नहीं खोलेगी। किसी भी हालत में यह गोपनीय रहेगा। क्या उसके मन में डर

है? यदि उसे सच्चाई पता चल गई , तो वह पास से दूर चला जायेगा? फिर उसे इस घने वन में अकेले चलना पड़ेगा?

"मगर मैं भारत को प्यार करता हूं; हाना, मुझे उसके महान लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्ति स्वातंत्र्य से प्यार है। मुझे वेद-वेदांत अच्छे लगते हैं। मैं शंकराचार्य के दर्शन 'ब्रह्म सत्य-जगत मिथ्या' से प्रभावित हूँ। मुझे तुम्हारी परंपराओं से प्रेम है। "

धत्! यह अल्बर्टो कितना अजीब है! उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करना भी नहीं आता है। वह यह कह सकता है, मुझे घर से प्यार है, मुझे इस मिट्टी से प्यार है, उसके बगीचे से प्यार है, मगर यह नहीं कह सकता है कि मुझे घर में रहने वाले मनुष्य की आंखों से प्यार है, उसके होंठ और सरल हृदय से प्यार है। वह पूछ सकता था कि मैंने उसे एक विदेशी पक्षी क्यों कहा? क्या प्रवासी पक्षी हर साल इस धरती पर नहीं आते है? हर्षा अनुभव करने लगी कि दोनों के भीतर हिलोरे ले रही छटपटाहट अभी भी संकोच की स्थिति को पार नहीं कर पा रही है।

वह अल्बर्टो के फोन का इंतजार करते-करते थक गई थी। उसने मन-ही-मन यह भी निर्णय लिया कि ऐसी कल्पनाओं से अब वह दूर रहेगी। रविवार सोचकर वह अल्बर्टो को लंच के लिए बाहर जाने का प्रस्ताव देने वाली थी। वह भैरवी और नवीना की तरह डेटिंग पर नहीं जा सकती थी, मगर वह अल्बर्टो के साथ कुछ घंटे बाहर बिताए तो क्या नुकसान होगा? उसने कभी नहीं सोचा था कि रविवार पूरी तरह बर्बाद चला जाएगा।

वह खुद अपने स्वयं के रूपान्तरण से आश्चर्यचकित थी। उसके माता-पिता ने कितने विश्वास के साथ उसे दिल्ली भेजा था, क्या वह सही कर रही थी? बेशक, उन्होंने उसे नहीं भेजा था, बल्कि वह अपनी जिद्द पर आई थी। पिताजी चाहते थे कि वह उनके साथ रहें और पीजीडीसीए जैसा कंप्यूटर का कोई कोर्स पूरा करें। यदि नहीं तो वह विश्वविद्यालय से पोस्ट-ग्रेजुएशन करें। मगर वह पुराने वातावरण से मुक्ति चाहती थी। वह अपनों से इतना दूर जाना चाहती थी कि उनकी छाया तक उस पर नहीं पड़ें। उसके इस विद्रोह के सामने किसी की नहीं चली। उन्होंने सोचा कि केवल कुछ ही दिनों की बात है, उसे जाने दो, समय आने पर अपने आप ठीक हो जाएगी। क्या दिल्ली उसे इस तरह की जिंदगी के लिए बुला रही थी?

अल्बर्टो के फोन करने का कोई निर्दिष्ट समय नहीं था। वह समय-असमय फोन करके कहता था: "हाना, आई नीड़ यू। "

"तुम ऐसा क्यों कहते हो, आई नीड़ यू? हर्षा ने शिकायत की, "उसके दिल में कुछ अजीब-सा अनुभव होने लगता है। "

"क्या अजीब-सा अनुभव होता है?" अल्बर्टो ने आश्चर्य से पूछा "मैंने तो ऐसे खराब शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया। ओह, मुझे खेद है कि मेरी अंग्रेजी इतनी अच्छी नहीं है। फिर 'नीड़ यू' शब्द का प्रयोग कहाँ किया जाता है, हाना? वास्तव में, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता था। तुम जानती हो, हाना, हमारे देश के अधिकांश लोग अंग्रेजी नहीं बोल सकते हैं। मैंने अपनी इच्छा से तीन साल तक अंग्रेजी

का अध्ययन किया था। हाना, मैं बहुत अच्छी तरह फ्रेंच बोल सकता हूं, पढ़ सकता हूं और लिख सकता हूं। मुझे स्पेनिश भी आती है। मैं जर्मन पढ़ सकता हूं। मगर मुझे उनकी बोलचाल की भाषा समझ में नहीं आती हैं। सबसे दिलचस्प बात यह है कि मेरी पत्नी भी जर्मन है। "

"क्या तुम ये सब बातें बता कर मुझे प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हो?"

" प्रयास करने में क्या बुराई है? मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम्हारे सामने मुझे मेरी छवि तैयार करने की आवश्यकता नहीं है? क्या तुम जानती हो, हाना, तुम्हारी कौनसी चीजमुझे सबसे ज्यादा पसंद है? "

"कौनसी चीज?" हर्षा जानने के लिए उत्सुक थी। उसने सोचा कि अल्बर्टो कहेगा, आकाश से उतरते बादलों की तरह उसकी आंखें, उसकी खूबसूरत नाक या कमर तक लटकते लंबे बाल। मगर अल्बर्टो के जवाब ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया: "मैं तुम्हारी बुद्धि से प्रेम करता हूं: मुझे तुम्हारा साफ हृदय पसंद है। "

"तुम शरीर के भीतर खोपड़ी के किसी कोने में छिपी हुई बुद्धि को समझ सकते हो; तुम छाती के भीतर हृदय की सफाई देख सकते हो, मगर मेरे पांच फीट चार इंच ऊंचे शरीर ने तुम्हारा ध्यान आकर्षित नहीं किया ?"

आँखों से चश्मा उतारकर पोंछते हुए अल्बर्टो ने कहा: "मेरी आँखें दिन-ब-दिन कमजोर होती जा रही है। मैं साफ-सुथरा चेहरा नहीं देख पाता हूँ। क्या किया जा सकता है?"

हर्षा ने अल्बर्टो को पीटने के लिए अपना मनी पर्स उठाया।

"मुझे लगता है कि तुम मजाक करना बहुत अच्छी तरह जानते हो। "

"सच बोल, हाना, मेरी आँखों में कुछ समस्या नहीं दिखाई दे रही है। "

हर्षा ने कोई जवाब नहीं दिया। जैसे कि विषाद उसके मन के नीचे गहराने लगा हो। अगर वह उसके चेहरे की तारीफ करती, तो क्या वह झूठ बोलती? कौन जानता है? उसने पहले से बहुत दर्द झेला है। कभी-कभी उसे अपने शरीर से घृणा होती थी। शरीर में कहीं छलकते पानी पर नरम पंखुड़ियों पर बैठता है मन , मगर कुछ लोगों को यह नहीं पता चलता है। वह पहले इस विचार से भयानक पीड़ित थी। अब वह दुखी इसलिए थी कि जो आदमी उसे प्यार करता है, वह उसके शरीर की तरफ एक बार भी ध्यान नहीं देता है।

वह जानती थी कि यूरोपीय लोग सेक्स-टाबू से ग्रसित नहीं हैं। मगर जब वह अल्बर्टो का संयम देखती है तो उसे संदेह होने लगता है। अल्बर्टो के प्यार के बारे में भी संदेह होने लगता है।

किसी काम से तो अल्बर्टो कहीं बाहर नहीं चला गया? बाहर जाने से पहले वह कम से कम हर्षा को सूचित नहीं कर सकता था? हर्षा का प्रेम पर बहुत पहले से विश्वास उठ चुका था। उसकी धारणा बन गई थी कि अपनी भूख को मिटाने के लिए आदमी को महिला की जरूरत पड़ती है। यदि

भूख नहीं होती तो पता नहीं, उसे नारी की आवश्यकता होती भी या नहीं? अल्बर्टो से मिलने के बाद उसके पहले वाले विचारों में बदलाव आया था। यह कहना मुश्किल होगा कि क्या वास्तव बदलाव आया, मगर वहएक बिन्दु पर स्थिर हो गई थी, जहां से वह आगे नहीं सोच सकती थी। अल्बर्टो अक्सर कहता था: "हाना, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। " मगर यह कहने के अलावा, वह कुछ और चाहता था, कहने में वह बहुत कंजूस था। क्या उसे एशियाई त्वचा के प्रति घृणा है? या फिर वह मानसिक स्तर पर अधिक रक्षणशील है ?

मन-ही-मन हर्षा सोचने लगी कि वह अल्बर्टो के बुलाने पर और नहीं जाएंगी। मगर वह उसका फोन आते ही खुद को रोक नहीं पाई। वे कुछ पार्क या रेस्तरां में कुछ समय बिताते थे। यह जानकार भैरवी और नवीना मजाक में पूछने लगी : "तुम्हारे शाकाहारी संबंध कहाँ तक पहुंचे?" उनके व्यंग्य से हर्षा अंदर से आहत हुई थी, मगर इस बात से आश्वस्त थी कि जो हुआ ठीक हुआ क्योंकि उसे भविष्य में अल्बर्टो के साथ अपने रिश्ते की सफाई नहीं देनी पड़ेगी।

जब हर्षा को यकीन हो गया था कि अल्बर्टो का और फोन नहीं आएगा, बस उसी समय उसका मोबाइल कंपन के साथ बज उठा था। दौड़कर बिस्तर से मोबाइल फोन उठाकरजैसे ही उसने ऑन का स्विच दबाया, दूसरी तरफ से अल्बर्टो की आवाज सुनाई पड़ी: "मैं बहुत बीमार हूं, हाना। आज हमारी मुलाक़ात नहीं हो सकती हैं। "

हर्षा चिंतित हो गई थी, "क्या हो गया अल्बर्टो को? तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? तुम अभी हो कहाँ पर ? मैं पूरे दिन तुमसे संपर्क करने की कोशिश करती रही, मगर असफल रही। क्या तुम मुझे अपना नहीं मानते हो? फिर तुमने मुझे अपनी बीमारी के बारे में क्यों नहीं बताया? "

"तुम इतनी चिंतित क्यों हो? कुछ भी नहीं हुआ है; बदहजमी के कारण दस्त लग रहे थे। अब मैं ठीक हूँ, मगर मुझे थोडी कमजोरी लग रही है। "

"पागल , तुम मुझे पहले बता सकते थे ? मैं आ रही हूं, अल्बर्टो। "

"नहीं, मत आओ। मैं अब केवल सोना चाहता हूँ, हम कल मिलेंगे। "

यह कहकर उसने मोबाइल डिस्कनेक्ट कर दिया। हर्षा सोचने लगी कि अल्बर्टो उससे कुछ छिपा रहा है। वह अभी तक ठीक नहीं हुआ है। वह विदेश में है, अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के बिना। साउथ ब्लॉक में उसका अपार्टमेंट हर्षा के घर से ज्यादा दूर नहीं था। वह उससे मिलने के लिए हडबड़ाकर बाहर निकली।

शाम का समय होने के कारण यातायात जाम था, फिर भी वह आधे घंटे के अंदर उसके घर पहुंच गई। अल्बर्टो ने कहा, "तुम क्यों आई हो? मैं बिल्कुल ठीक हूं। "

"तुम चुपचाप बैठो। तुम्हें सफाई देने की आवश्यकता नहीं है। पहले बताओ कि तुम्हारी यह हालत कैसे हुई। "

"तुम्हारे देश के भोजन-पानी के कारण। " अल्बर्टो ने मुस्कराते हुए कहा।

"तुम तो बहुत दिनों से मेरे देश के भोजन-पानी के आदी हो। मज़ाक मत करो, सच बताओ। "

"प्रोफेसर नंदी के घर में कल डिनर था। सभी आइटम तैलीय और मसालेदार थे। तुम्हें पता है, मैं एक लैक्टोज शाकाहारी हूं, इसलिए जो भी कारण हो, पानी भी हो सकता है। जो भी तुम कहो, दिल्ली में पानी की अवस्था बहुत हॉरीबल है। "

हर्षा ने कहा, " हमारे यहाँ एक कहावत है: 'जब तुम रोम में हो, रोमन बनो। ' तुम्हें इसे मानना पड़ेगा; जब हमारे लोग तुम्हारे देश जाते हैं, तो क्या वे तुम्हारे देश का खाना खाकर नहीं जीते हैं? इसके अलावा, आवश्यकता पड़ने पर मनुष्य को बांस की जड़े खाकर भी जिंदा रहना पड़ता है। इस बात से मुझे एक अच्छी कहानी याद आ गई।

"सुनाओ", बहुत रुचि दिखाई थी अल्बर्टो ने। उसके पास विभिन्न देशों के मिथकों की एक किताब थी। हर्षा ने देखा उसमें महाभारत की अनेक कहानियां प्रकाशित हुई थी। इसलिए जब भी उसने हर्षा से कहानी सुनाने के लिए कहा, तो उसने कभी संकोच नहीं किया। मगर उसके बीमारी की अवस्था में कहानी सुनाना उचित होगा?

"तुम बीमार हो, " हर्षा ने कहा।

"ओह, हाना, मैं मर नहीं जाऊंगा। कृपया सुनाओ न। "

"तब सुनो। यह 'त्रेता' और 'द्वापर' युग के संक्रमण-अवधि की कहानी है। कई सालों से बारिश नहीं होने के कारण संसार विनाशकारी अकाल की चपेट में आ गया। किसी भी आदर्श या आचार संहिता का उल्लंघन करते हुए लोग भोजन की तलाश में विभिन्न देशों में चले गए। मां अपने बेटे के लिए उद्दिष्ट खाना खाने में संकोच नहीं करती थी। लोग खाद्य-अखाद्य पदार्थों के बीच भेद नहीं करते थे। तुम जानते हो, जब दुनिया में जीवों की संख्या सीमा से अधिक बढ़ जाती है, प्राकृतिक विपदाएँ पैदा होती हैं। संसार आधे प्राणियों के विनाश के बाद ही राहत की सांस लेता है। "

"ऐसी स्थिति में महर्षि विश्वामित्र ने सपरिवार अपना निवास-स्थान छोड़कर भोजन की तलाश में विभिन्न गांवों में भटकने लगे। जहां भी वे जाते थे, खाद्य तो दूर की बात मकई का एक दाना नसीब नहीं होता था। गृहस्थी के रूप में अपने परिवार के पोषण की ज़िम्मेदारी उनकी थी। भोजन की तलाश में यहां-वहाँ भटकते हुए एक दिन उन्होंने शहर के किसी बाहरी इलाके के एक विशेष स्थान के आस-पास बहुत सारे कौओं को उड़ते देखा। उन्हें उम्मीद बंधी कि वहां कुछ खाना अवश्य मिलेगा। इस जगह की ओर आगे बढ़ने के लिए, अपने परिवार को उन्होंने एक पेड़ के नीचे छोड़ दिया। शहर के बाहरी इलाके में चांडाल बस्ती थी। नजदीक पहुँचने पर उन्होंने कुत्तों और गधों को विचरण करते हुए देखा। उन्होंने अनुमान लगाया कि इस बस्ती में खाने का अभाव नहीं होगा। सड़क पर चलते समय

उन्होंने कई लोगों को मांस खाकर शराब पीने के बाद एक दूसरे को गाली-गलौच करते हुए देखा। वे आश्चर्यचकित थे और यह सोचकर प्रसन्न भी थे कि यह बस्ती अकाल की चपेट से कैसे बच गई। जो हो, उन्होंने सोचा कि इस बस्ती से भिक्षा मांगकर खुद और अपने परिवार को बचाया जा सकता है। वे दरवाजे से दरवाजे जाकर भिक्षा मांगने लगे, मगर किसी ने उनकी प्रार्थना नहीं सुनी। बल्कि उपहास से लोग उन पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करने लगे। द्वार-द्वार भिक्षा मांगते-मांगते विश्वामित्र थक गए थे। वह और एक कदम नहीं चल सकते थे। तभी उन्हें एक चांडाल के घर के दरवाजे की फांक से बीच में कुत्ते का मांस पड़ा हुआ दिखाई दिया और वह आराम करने के बहाने वहाँ बरामदे में सो गए। अंदर में चांडाल और उसके दोस्त लोग शराब पीकर कोलाहल करने लगे। धीरे-धीरे शाम हो गई। दोस्त लोग चले गए। जब विश्वामित्र ने घर में शराब के नशे में चूर चांडाल को अकेले देखा तो वह कुत्ते के मांस को लेने के लिए उसके घर में प्रवेश किया। उसी क्षण हाथ में तेज चाकू लिए चांडाल गरजने लगा, मेरे घर में घुसकर कौन मांस की चोरी कर रहा है? बहुत शर्मिंदा होकर विश्वामित्र ने अपना परिचय दिया, यह सुनकर चांडाल आश्चर्यचकित था। उसने माफ़ी मांगी, मैं आपको अंधेरे और नशे की वजह से पहचान नहीं सका, मुझे माफ कर दो। मगर मेरे मन में एक प्रश्न आया है। क्या यह काम आपके जैसे महान व्यक्ति के लिए अच्छा है?'

"तुम जानते हो कि विश्वामित्र ने क्या जवाब दिया? मैं अपने काम से शर्मिंदा हूँ। मेरे पास कोई रास्ता नहीं था । मेरे भूखे परिवार के लिए भोजन ढूंढना ही मेरा एकमात्र कर्तव्य था। भिक्षा नहीं मिलने के कारण जब मैं निराश हो गया, तभी मेरी नजर इस कुत्ते के मांस पर गिरी, इसलिए मैं अपने परिवार की जान बचाने के लिए चोरी कर रहा था।

चांडाल ने फिर से कहा, "आप ब्राह्मण होकर भी एक चांडाल के जूठे भोजन को लेने के लिए तैयार थे, क्या यह धर्म के अनुसार अभक्ष्य नहीं है? तुम जानते हो अल्बर्टो, विश्वामित्र ने क्या जवाब दिया? उन्होंने कहा: बुभुक्षित या मरने वाला व्यक्ति अपनी जान बचाने के लिए जो कार्य करता है, वह धर्म के अनुसार है और सही कर्म है। " हर्षा ने कहानी को समाप्त करते हुए कहा, "जब तक तुम मेरे देश में रहते हो, तब तक तुम्हें मेरे देश का भोजन-पेय लेना पड़ेगा। "

अल्बर्टो ने कहानी को सुनने के बाद हर्षा से पूछा कि क्या चांडाल विश्वामित्र की बात सुनकर चुप रहा।

"नहीं, उनके बीच काफी तत्व-चर्चा और तर्क-वितर्क हुआ था, मगर मैं उन सभी बातों को भूल गई हूं। "

अल्बर्टो ने कहा, "यू आर रियली वंडरफूल लेडी। इसलिए जिस दिन तुमसे नहीं मिलता हूँ तो खाली-खाली लगाने लगता है। "

एक दिन के भीतर उसका चेहरा सुखकर काला काठ हो गया था। हर्षा बाहर चौकी पर बैठी हुई थी और घर में चारों तरफ किताबें-ही-किताबें नज़र आ रही थी। टेबल पर किताबों के ढेर पड़े हुए थे।

बिस्तर के पास  प्लास्टिक की टोकरी में ओआरएस घोल के कवर पड़े हुए थे। वह अल्बर्टो के फ्लैट में पहली बार आई थी।

"हाना, थोड़ी देर प्रतीक्षा करो, मैं अभी आ रहा हूं। " कहकर वार्डरोब से कपड़ों की एक जोड़ी लेकर बाहर चला गया अल्बर्टों और एक नीली पैंट और आसमान-नीली शर्ट पहनकर जल्दी लौट आया।

"तुम  सूटेड-बूटेड होकर कहाँ जा रहे हो? तुम  बीमार हो! तुम कमजोर हो!"

"मुझे लगता है कि बाहर घूमकर आने से अच्छा लगेगा। दिन भर घर में बैठे-बैठे बहुत खराब लग रहा है। "

"ठीक है चलो, मगर ज्यादा दूर नहीं, तुम क्या कहते हो?"

थोड़ा चलने के बाद वे बच्चों के पार्क में बैठ गए।

" कैसा लग रहा हैं, अल्बर्टो?"

“ आगे से अच्छा लग रहा है। बंद कमरे से बाहर निकलने पर खुला-खुला लग रहा है।

आज सवाल पूछने की तुम्हारी बारी थी। हाना, क्या तुम्हें याद हैं? "

"नहीं, आज नहीं। किसी और दिन। आज मुझे देर हो रही है। मैं ज्यादा समय नहीं बैठ पाऊँगी। अगर मैं तुम्हारे पास एक घंटे या उससे ज्यादा बैठती हूं तो लौटते-लौटते मुझे अंधेरा हो जाएगा। तुम तो जानते हो, दिल्ली आजकल बिलकुल सुरक्षित नहीं है। मैंने तुम्हारे लिए सात सवाल तैयार करके रखे हैं। "

" वास्तव में, फिर क्यों नहीं पूछ रही हो ? पूरे दिन न तो पढ़ाई और न ही चर्चा होने के कारण खराब हो गया। यहां तक कि मैं भी तुम्हारे साथ अच्छी तरह समय नहीं बिता सका। यदि तुम मुझे प्रश्न पूछोगी तो अच्छा लगेगा। ”

" नहीं, देर हो जाएगी, अल्बर्टो। "

"  मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आऊँगा। मुझ पर तुम्हें क्या इतना विश्वास नहीं है?”

“ भरोसा है तभी तो मैं बिना किसी झिझक के तुम्हारे पास आई हूँ। ” हर्षा ने कहा।

“ ठीक है, तुम्हारे लिए पहला सवाल  :तुम्हारा सपना क्या है, अल्बर्टों? "

“सपना?” उसने अपने नीचे वाले होठ को ऊपर वाले होठ से दबाया; उसके माथे पर एक शिकन दिखाई दे रही थी। “ अकेलेपन से मुक्ति”

हर्षा अल्बर्टो के इस उत्तर पर आश्चर्यचकित थी। क्या कोई इस तरह का जवाब देता है? अपने जीवन का सपना अकेलेपन से मुक्ति है? वह इतना अकेला क्यों है? उसके चारों ओर बहुत से लोग हैं, इतनी भीड़ हैं, फिर भी वह अकेला है?

"तुम्हें इतना अकेलापन क्यों लगता है, अल्बर्टो? क्या तुम साठवें दशक के अस्तित्ववाद से प्रभावित तो नहीं हो? "

" नहीं, नहीं" अल्बर्टो ने कहा।

" किसी से प्रभावित होने से अकेलापन क्यों महसूस होगा? अकेलापन फैशन नहीं है; न यह असंगत है। जो व्यक्ति किसी लक्ष्य को पाने के लिए दौड़ता है, वह अकेला हो जाता है। तुम गौतम बुद्ध या आइंस्टीन का उदाहरण देखो, सभी किसी समय अकेलेपन का शिकार हुए थे। "

" तब तुम तो महान संत हो ?" हर्षा ने पूछा।

" नहीं, हाना, मैं एक संत नहीं हूँ। तुम्हारे महात्मा गांधी भी एक दिन अकेले थे। याद करो, जब अंग्रेज़ भारत छोड़कर जा रहे थे, तो भारत का पहला प्रधानमंत्री कौन बनेगा, विषय पर विवाद चल रहा था? जिन्ना या नेहरू :? गांधी भूख हड़ताल पर बैठे थे, कोई भी उन्हें समझ नहीं सकता था। क्या कम बड़ा अकेलापन नहीं था!"

" तुम्हारे पास अकेलेपन से मुक्त होने का कोई रास्ता तो होगा ?" हर्षा ने पूछा।

"मैं ईश्वर के साथ एक होना चाहता हूं। मुझे मोक्ष चाहिए। अब यह तुम्हारी बारी है, हाना, तुम मुझे बताओ, तुम्हारा सपना क्या है? "

"मुझे सपने देखने में बहुत डर लगता है। आंखें बंद होने पर मुझे अंधेरा नजर आता है। क्या मैं कभी सपने देख पाई हूँ? हमेशा ही बुरे सपने। बुरे सपनों से मुझे कोई राहत नहीं मिली। मैं अपने अतीत को भूलना चाहती हूं। तुम इसे मेरा सपना मान सकते हो। "

"तुम इतनी उदास क्यों हो, हाना? इस दुनिया में किसे कोई दुख नहीं है? इसके बावजूद क्या जीवन किसी एक बिंदु पर रुक जाता है? कभी-कभी नकारात्मक दृष्टिकोण हानिकारक सिद्ध होता है, क्या तुम इसे नहीं जानती हो? तुम्हारा अतीत क्या है? "

"छोड़ो अभी, कभी दूसरे दिन बात करेंगे। अब मुझे बताओ, तुम्हारी नजरों में एक महिला के आवश्यक गुण क्या है ? "

"दूसरों को अच्छी तरह से समझने का गुण और प्यार देने में कंजूसी न करने का गुण। "

"अँग्रेजी में जिसे तुम 'सेंस' एंड 'सेन्सुअलिटी' कह सकते हैं। " अल्बर्टो के हाथ को दबाते हुए वह हँसने लगी।

"एक असामान्य बयान! एक संन्यासी के मुंह से 'प्रेमालाप' शब्द ?

"आह, तुम्हें क्या लगता है कि महिला भोलीभाली होने से ही मुझे पसंद आएगी ? क्या यह सही नहीं है कि एक नारी में प्रेमिका का हृदय होना चाहिए? अब तुम्हारी बारी है, हाना, तुम बताओ, नारी कैसी होनी चाहिए? "

"कभी-कभी मैं क्या सोचती हूँ जानते हो, अल्बर्टो? मुझे लगता है नारी जैसी भी हो, उसके होने या न होने, उसके अच्छे गुण या बुरे गुण- ये सब अर्थहीन हैं। ज्यादातर लोगों के पास ये सब देखने का समय नहीं है। वे इतना पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं कि वे उसे नरक का द्वार, ईर्ष्यालु और बच्चा पैदा करने वाली मशीन मानते हैं। पुरुष भी ईर्ष्यालु हो सकता है? क्या वह पतन के रास्ते में नहीं जाता है ? क्या केवल नारी को प्यार देना चाहिए, पुरुष को नहीं? छोड़ो, मैं ये सारी बातें तुम्हें क्यों कह रही हूं? नारी को हमेशा मृदुभाषी और दृढ़ होना चाहिए। मुझे बताओ, प्यार के बारे में तुम क्या सोचते हो ? देखते है संन्यासी के लिए प्रेम का क्या अर्थ है? "

" क्यों मुझे संन्यासी कह रही हो ? मैं संन्यासी नहीं हूं, हाना। मैं क्रिस्टीना को बहुत प्यार करता हूँ। क्या तुम नहीं जानती हो कि तुम्हारे लिए भी मेरा प्यार असीम है? What is though lovestwell remainsthe rest is trash.' 'कहकर चुपचाप हर्षा की ओर देखने लगा अल्बर्टो।

हर्षा ने सोचा कि इस आदमी को मेरे प्रेम-निवेदन की कला मालूम नहीं है, मगर वह हर्षा से बहुत प्यार करता है। तब फिर उसने यह नहीं कहा होता कि वह क्रिस्टीना से बहुत प्यार करता है और तुमसे भी। उसने स्पष्टवादी अल्बर्टो की तरफ देखा; नहीं, वह झूठ नहीं बोल रहा था। नहीं, वह ढोंगी नहीं है। मन-ही-मन हर्षा उसे मूर्ख कह रही थी, वह इसे और अधिक अच्छे ढंग से नहीं कहसकता था?

हर्षा ने कहा, "दुनिया में सबसे सुंदर चीज प्यार है। मुझे नहीं पता कि तुम्हारे जैसे दार्शनिक क्यों इसे माया कहते हैं? "

" तुम शंकराचार्य की बात कर रही हो ? नहीं, हर्षा, मेरा प्यार कोई माया नहीं है। तुम ऐसा क्यों सोचती हो?"

" मैं बहुत खुश हूँ कि तुम इस समय दार्शनिक की तरह बात नहीं कर रहे हो। वरना, मैं निराश हो जाती। "

हर्षा अपने चौथे प्रश्न को बदलना चाहती थी। उसका चौथा सवाल था, "तुम किस काम के लिए खुद को दोषी मानते हो?" वह इस प्रश्न को थोड़ी देर बाद पूछने का सोच रही थी। अल्बर्टो के मन की बात जानने के लिए वह उस पल ऐसा प्रश्न पूछना चाहती थी, जिससे उसके अंदर छिपी हुई भावना प्रकट हो।

" परकीया प्रेम के बारे तुम्हारे क्या विचार है, अल्बर्टो ?"

" अगर किसी को कोई क्षति नहीं होती है तो असुविधा क्या है ?"

इस बौद्ध की इस राय पर हर्षा को आश्चर्य हुआ। उसकी धारणा थी कि अल्बर्टो इसे अन्यायपूर्ण और पाप मानेगा। मगर अल्बर्टो के अंदर से कोई प्रेमी बोल रहा था।

"मैं एक और सवाल पूछूंगी, जो थोड़ा व्यक्तिगत हो सकता है, मुझे डर है कि कहीं तुम मुझे गलत न समझ लो। "

"हाना, तुम हमारे खेल के नियम भूल रही हो, पहले हम दोनों एक ही सवाल का जवाब देंगे, मगर तुमने पिछले प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। "

"हाँ, मैं भूल गई थी। तुम तो जानते हो कि मैं प्यार को कितना महत्त्व देती हूं, इसलिए समाजिक बाधा-बंधन मेरे लिए अर्थहीन हैं। लेकिन अल्बर्टो, मुझमें सामाजिक आचार-संहिता का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं है। मैं रक्षणशील परिवार में पैदा हुई। मेरे पिता हाई स्कूल के हेडमास्टर थे, वह थोड़ा उदारवादी थे। लेकिन मेरे दादा पूरी तरह से अलग, कठोर और रूढ़िवादी थे। वह पुरी के जगन्नाथ मंदिर के मुक्तिमंडप के पंडित थे। उन्होंने वेद-वेदांतों का काफी अध्ययन किया था; लेकिन उन्हें अपने एक कुलीन ब्राहमण होने का कम गर्व नहीं था। मैंने उन्हें साष्टांग दंडवत तीर्थयात्रियों के सिर पर अपने पैरों से विष्णु-मुद्रा में आशीर्वाद देते हुए देखा हैं। पाप-पुण्य का हिसाब मानो उनकी उंगलियों पर हो। जानते हो, मेरी बुआ की आठ साल की उम्र में शादी हुई थी, पैतालीस वर्ष के पंडित के साथ। दुर्भाग्यवश, यौवन प्राप्त करते-करते वह विधवा बन गई। सारे कठोर अनुष्ठानों, व्रत-उपवास का पालन करते हुए उन्हें वैधव्य-जीवन बिताना पड़ा। जब मेरे सनातन मामा आते थे तो बुआ को अच्छा लगता था। जिस दिन वे चले जाते थे, मैं बुआ की आँखों में आँसू देखती थी। मैंने आज तक यह बात किसी से नहीं कही। चाहे आप स्पर्श करें या न करें, व्यक्त करें या न करें, प्रेम वायवीय रूप से जोड़ सकता है। मेरी बुआ की तुलना में मैं अधिक स्वतंत्र हूँ , लेकिन हिम्मत ?"

"तुम तो एक निजी सवाल पूछना चाहती थी, हाना, पूछो। "

"नहीं, रहने दो। ," हर्षा ने कहा।

"मैं तुम्हारे सारे सवालों का जवाब देने के लिए तैयार हूं, बिना किसी झिझक के पूछ सकती हो। "

हर्षा पहले असमंजस में पड़ गई कि कैसे प्रश्न पूछा जाए।

"मैंने सुना है कि पश्चिमी देशों में तुम्हारे जीवन में कोई सेक्स-प्रतिबंध नहीं है, मतलब तुम लोग अपनी पत्नी के अतिरिक्त भी...। "

"हे, हाना, इतनी झिझक? तुम सीधे क्यों नहीं पूछती? मैंने शुरु से कह चुका हूँ, मैं अपने जीवन की सारी बातें बताऊंगा, उसका कोई मतलब नहीं है। मगर मैं तुमसे कभी झूठ नहीं बोलूँगा। जब मैं कॉलेज में था, मेरा दो सहेलियों के साथ शारीरिक संबंध थे, लेकिन मेरी शादी के बाद अब ऐसे कोई संबंध नहीं है। मेरे लिए बिना प्यार के शारीरिक संबंध असंभव है। तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि मैं कभी वेश्यालय नहीं गया हूं। "

हर्षा ने कहा, "तुम तो बहुत अच्छी तरह से जानते हो कि मैं कैसे परिवार से आई हूं। तुम मेरी स्थिति की कल्पना कर सकते हो। मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कैसे दे सकती हूं? आज यहां तक ही, बाकी प्रश्न और किसी दिन पूछूंगी। "

अल्बर्टो उठ खड़ा हुआ। "जब मैं बारह साल का था, तब स्कूल में यौन-शिक्षा दी जाती थी। इस तरह की शिक्षा भारत में भी दी जानी चाहिए। "

हर्ष हँसने लगी। "क्या तुम पागल हो गए हो? तुम्हारे वहाँ यौन-शिक्षा दिया जाने से क्या अच्छा हुआ है? अभी भी समलैंगिकता, समलैंगिक-विवाह तुम्हारे देशों में अधिक है। खैर छोड़ो, यूरोपीयन लोगों की और बात नहीं करूंगी। "

" देन व्हाट्स द रोंग? मुझे समलैंगिकता में कुछ खराबी नहीं लगती। "

"प्लीज बंद करो। आज और नहीं। और कभी इस विषय पर चर्चा करेंगे " अल्बर्टो ने अचरज से उसे देखा। फिर वह कहने लगा, "चलो, मैं तुम्हें छोड़ आता हूँ। "

"मैं चली जाउंगी। ज्यादा देर नहीं हुई है। तुम चिंता मत करो। मैं जा रही हूँ। "

## ***4.***

अल्बर्टो ने हर्षा को उसे लेडी ऑफ फातिमा की कहानी सुनाने के लिए बुलाया। तेरह अक्टूबर, रविवार का दिन था। नवीना पारेख नवरात्रि-उत्सव के लिए अहमदाबाद चली गई थी। भैरवी चक्रवर्ती 'षष्ठी' पर अपना सूटकेस लेकर कलकत्ता चली गई। घर पर हर्षा को बोर लग रहा था। अल्बर्टो का फोन आया, ' क्या कर रही हो, हाना? मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी फिल्म लाया हूँ। क्या तुम आ सकती हो? हम एक साथ फिल्म देखेंगे। रविवार अच्छे ढंग से कट जाएगा। इसके अलावा, आज मेरे लिए एक स्पेशियल दिन है। यह मेरे देश के लिए विशेष दिन है। आज का दिन निश्चित रूप से मेरे देश में मनाया जाता है। "

"स्पेशियल दिन किस खुशी में है, अल्बर्टो? क्या तुम्हारा कोई त्योहार है?”

“ आज फातिमा-दिवस है। लेकिन तुम क्या फोन पर सब-कुछ जानना चाहती हो? तुम आओ, मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाऊँगा। "

हर्ष का मानना था कि इन विदेशियों के आम तौर पर अधिक त्योहार नहीं है, इसलिए वे फादर डे, मदर डे, वेलेंटाइन डे आदि जैसे दिनों के नाम से त्योहार मनाते है। फातिमा कौन है? जिसके नाम पर 'डे' मनाया जाता है?

इस बार वह दुर्गा पूजा पर घर नहीं गई। उसकी माँ बार-बार फोन पर उससे पूछ रही थीकुनी" :, तुम नहीं आओगी तो मैं अकेले पूजा देखने कैसे जाऊँगी? क्या तुम मेरी गठिया की बीमारी के बारे में नहीं जानती हो? मैं न तो बैठ सकती हूं और न ही झुक सकती हूं,। तुम्हारे पिता नौ दिनों तक निष्ठा से पूजा करते हैं। तुम्हारी बुआ को आँखों से दिखता नहीं है। "

हर्षा के सामने मां ने जितना संभव था, उतनी अपनी असहायता को प्रकट किया।

हर्षा को बहुत अच्छी तरह से पता है कि मां आजकल जोड़ों के दर्द के कारण उठ-बैठ नहीं पा रही है। वह जानती है कि उसका भाई विदेश में है। वह कैलिफ़ोर्निया से तुरंत यहाँ उड़ कर नहीं आ सकता। उसकी बुआ भी काम की नहीं रही; मगर हर्षा चाहती तो आसानी से अपनी मां की सहायता कर सकती थी। वह वास्तव में अपनी मां, पिता, अपने आप पर और भगवान पर रुष्ट थी। वह केवल गुस्से के कारण जगन्नाथ मंदिर में भी नहीं जाती थी। आजकल उसने उपवास-व्रत करना छोड़ दिया है। सभी से उसका विश्वास उठ गया है। उसे अपने लोग भी अजनबी लगने लगे हैं। उसे अपने माता-पिता परभी भरोसा नहीं रहा। पता नहीं क्यों, उसे ऐसा लग रहा है कि उसके खिलाफ कोई साजिश चल रही है। उसे संदेह हो रहा है कि उसकी मां के फोन के पीछे भी कुछ गुप्त मकसद हो सकता है। उसके मन में हर मनुष्य के प्रति अविश्वास पैदा हो गया है, फिर भी पता नहीं किस फांक से अल्बर्टो उसके जीवन में घुस गया था।

छोटे बच्चे के रोने पर लॉलीपॉप खिलाने की तरह पिता ने शायद उसे दिल्ली भेज दिया था। वे सोच रहे थे कि जब वह दो साल में अपनी पढ़ाई पूरी कर लेगी, तब तक उसका मन बदल जाएगा। कोई भी उसकी पीड़ा नहीं समझ पा रहा था? यही कारण है कि हर्षा नाराज होकर खुद उन लोगों से दूर चली गई। इस दौरान माँ ने चार- पांच बार फोन किया था। हर्षा कभी पढ़ाई का बहाना कर, कभी चुप रहकर और कभी विरोधकर उनसे दूरी बनाए रखती थी। वह मुक्ति चाहती थी, दर्द से मुक्ति। उसने हर एक को मनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश की थी, लेकिन कोई उसे समझ नहीं पाया। किसी के पास उसकी आर्तनाद नहीं पहुंची।

अल्बर्टो ने सब-कुछ भूला दिया था उसे। कम से कम बुरे सपने की तरह पुराने दिन उसके अस्तित्व को मिटाने के लिए उद्यत नहीं होते थे। जीवन उस पर और अधिक बोझ नहीं डाल रहा था। पता नहीं क्यों, उस समय उसे अल्बर्टो बहुत करीब और अंतरंग लग रहा था। अल्बर्टो का विचारशील चेहरा और मुस्कुराहट क्लोज-अप बनकर उसकी आंखों के सामने तैरने लगा। उनका पसंदीदा रंग नीला था। हर्षा ने एक नीले रंग की राजस्थानी कढ़ाई वाली पोशाक पहन ली थी। लंबे समय से उसने चेहरे पर पाउडर नहीं लगाया था, अब उसने लगाना चालू किया था। उसने कभी लिपस्टिक का

इस्तेमाल नहीं किया था, नवीना के अलमारी से निकालकर इसे भी लगा दिया हल्का-हल्का। उसका यह रूप देखकर उसकी दोनों सहेलियाँ पता नहीं क्या टिप्पणी करती? चिढ़ाने लगती ? तुम इतनी सज-धज किसके लिए रही हो ? कहीं तुम उस गोरे के प्यार के चक्कर में तो नहीं पड़ गई हो ? वास्तव में इसलिए तुम इस बार घर नहीं गई ?"

हर्षा उन्हें कैसे समझाती? पुरी नहीं जाने के क्या कारण हो सकते है? अचानक वह उदास हो गई। दर्पण में उसका चेहरा ऐसा दिख रहा था मानो किसी कब्र पर फूलों का गुलदस्ता रखा हो।

अल्बर्टो उसकी प्रतीक्षा में होगा। उसे जाना चाहिए। लेकिन इस पोशाक में? वह क्या सोचेगा? कहीं यह नहीं सोचेगा कि खास तैयारी के साथ वह क्यों आई है? नहीं, वह उसके सामने अपनी दुर्बलता का पर्दाफाश नहीं करेगी। बाथरूम में जाकर हर्षा ने अपने चेहरे को साफ धोया। उसके बाद पता नहीं क्यों उसे सहज लगने लगा।

पड़ोसी घर की छोटी लड़की उसे अपने घर में पूजा के लिए आमंत्रित करने आई थीं। इसलिए हर्षा कमरे में ताला लगाकर बाहर आ गई। उसे याद आने लगा कि इन दिनों उसके घर में कितने उत्सव मनाए जाते थे। दो चाचा घर आते थे। दादाजी नौ दिन उपवास करते थे। भले ही वे वैष्णव थे, मगर शक्ति की पूजा उनके घर में लंबे समय से चलती आ रही थी। फालाहर और दूध को छोड़कर उसके दादाजी इन नौ दिनों में कुछ भी नहीं छूते थे। मगर उनके घर में खिचड़ी और पीठा बनते थे। दादाजी कहते थे, जगतधात्री माँ परम वैष्णवी है। कन्या-रूप में उसकी पूजा की जानी चाहिए।

यही कारण है कि शायद मेरी सबसे बड़ी बुआ की पूरी जिंदगी 'कन्या-रूप' में बीत गई। कन्या नहीं है, तो और क्या है? आठ साल की उम्र में उनका बाल-विवाह हुआ था। जब वह रजस्वला हुई तो उसके ससुराल वाले उसे एक नई दुल्हन के रूप में पारंपरिक उपहारों के साथ ससुराल ले जाने की जिद्द करने लगे। दादाजी जिस बैलगाड़ी में वीर पुरुषोत्तमपुर गए थे, उसी शाम उसी गाड़ी में बुआ को ले आए थे। नहीं, बुआ की सुहाग रात भी नहीं हुई थी। दादाजी ने कहा कि उसकी सबसे बड़ी बुआ एक परम वैष्णवी है। कोई भी पुरुष उसे स्पर्श नहीं करेगा। कन्यादान नहीं करने के पाप से बचने के लिए उसकी कहीं शादी करा दी गई थी।

दादाजी को तर्क में हराने वाले उस समय बहुत कम लोग थे। वे ग्रंथों और पुराणों से उदाहरणों का हवाला देते हुए सभी को परास्त कर देते थे।

उसी दादाजी की इच्छा के कारण उसका जीवन बदल गया था। उस समय वह लगभग बीस या उससे थोड़ी अधिक होगी, उसके विवाह का निर्णय लिया गया था। जब कोई बुआ की पीड़ा को नहीं समझ पाया तो उसकी पीड़ा समझने के लिए किसी से क्या उम्मीद की जा सकती थी ? हर्ष ने याद आ गया- दक्षिण दिशा में खुली खिड़की, वह खिड़की जो कभी बंद नहीं हुई थी। वह खिड़की फोटो-फ्रेम की तरह उसका क्लोज-अप बांधकर रखती थी। कभी–कभी प्रतीक्षा करते-करते सुबह की ठंडी हवा में उसकी आँख मूँद जाती थी और उस झरोखे के पास अनिद्रा से उठकर उसने कई रातें गुजारी थीं। वह मिट्टी के गीले लोथड़े की तरह खिड़की के रेलिंग के पास ढुलक जाती थी।

कभी वह आदमी सुबह-सुबह लौट आता था, कभी आधी रात को। कभी वह पूरी रात पैर पसारे फाटक के पास पड़ा रहता था, जबकि दक्षिण दिशा की खिड़की के पास प्रतीक्षारत हर्षा कुछ भी समझ नहीं पाती थी।

जब हर्षा अल्बर्टो के घर पहुंची तो वह अपने लैपटॉप पर टाइपिंग कर रहा था। हर्षा को देखकर कहने लगा, "तुमने बहुत देर कर दी, हाना। आज मैंने तुम्हारे लिए विशेष भोजन बनाकर रखा है। "

"इसका मतलब आज अच्छा खाना मिलेगा। "

लैपटॉप से अपना चेहरा ऊपर उठाकर उसने कहा, "वाह, वाह, यू आर लुकिंग ब्युटीफूल। " हर्षा चौंक गई थी। क्या उसके होंठों पर लिपस्टिक अभी भी लगा हुआ है ? पता नहीं क्यों उसने इसका उपयोग किया, वह थोड़ी शर्मा गई। अल्बर्टो ने उसे बताया कि नीला उसका पसंदीदा रंग है। वह कहने लगा, "तुम इस नीले रंग की पोशाक में बहुत आकर्षक दिख रही हो, लेकिन मुझे लग रहा है कि तुम मानसिक रूप से परेशान हो। क्या कोई दिक्कत है? "

"नहीं" हर्षा ने जवाब दिया।

"लेकिन ऐसा लग रहा है मानो बादलों की ओट में चाँद छुप गया हो। "

" तुम साहित्यकार कब से बन गए हो?" कहकर हर्षा हंसने लगी, "अच्छा, तुमने मुझे फातिमा-दिवस पर आधारित कहानी सुनाने के लिए कहा था। "

"हां, निश्चित रूप से। "  लैपटॉप बंद करते हुए उसने टेबल पर रख दिया। वह कहने लगा, "फातिमा के नाम पर पुर्तगाल में एक जगह है। यह 1917 के मई महीने की बात होगी। हां, वह 13 तारीख थी। लुसिया सैंट्रोस, फ्रांसिस्को मार्टो और जसिंतिया नामक तीन औरतें  अपनी-अपनी भेड़-बकरियों का चराते समय ध्यान रखती थी। मदर मेरी फातिमा के पास उन्हें दिखाई दी। बाद में उन्होंने प्रसार किया कि उन्होंने मदर मैरी को देखा और उन्हें तीन गुप्त चीजें पता चल गई हैं। तत्कालीन शासक ने उन्हें 13 अगस्त को राजनीति प्रेरित दावे के कारण गिरफ्तार कर लिया था। लेकिन 13 अक्टूबर, 1917 को जनता की मांग पर उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। मगर एक शर्त पर कि पोप  उनके मुकदमे पर विचार करेगा। पोप ने उनकी सारी बातें सुनी और अंत में  उन्हें तीन सत्य में से दो सत्यों को लोगों के बीच प्रचार करने की इजाजत दी।  वे दोनों सत्य साबित हुई: पहला, उन्होंने समुद्र में से आग के फुव्वारों को आसमान की ओर छूटते हुए देखा और उसी अग्नि-वर्षा के भीतर वीभत्स दिखाई दे रहे पशु तुल्य भयानक राक्षसों को बाहर निकलकर पृथ्वी की तरफ भागते देखा। दूसरा सत्य था मदर मेरी ने निर्देश दिए थे कि वे रूस के साथ युद्ध न करें, वरन शांति का प्रस्ताव रखें। यह मानव जाति के लिए अच्छा होगा और तीसरे सत्य को पोप ने खुद उन्हें सन 2000 के ईस्टर तक गुप्त रखने का निर्देश दिया। सत्य यह था कि पोप की हत्या की जाएगी। ”

"क्या तुम जानती हो, हाना, “लेडी ऑफ फातिमा” के नाम से प्रसिद्ध लूसिया कौन थी? वह मेरी दादी थी। जिनका पिछले साल 97 साल की उम्र में देहांत हो गया। "

हर्षा ने पूछा, " इसका मतलब तुम एक ऐसे परिवार से संबंध रखते हो, जिसे मदर मैरी का आशीर्वाद प्राप्त है?"

अल्बर्टो ने मुस्कराते हुए कहा: "कभी-कभी अविश्वसनीय घटना भी घटित हो जाती है, है ना? अब मुझे बताओ कि क्या तुम पहले खाना खाओगी या फिल्म देखना पसंद करोगी? "

"क्या तुमने मुझे फिल्म दिखाने की सौगंध खाई हैं?"

"यदि तुम चाहो तो, प्रश्नोत्तरी-खेल भी खेल सकती हो। "

"नहीं, अल्बर्टो, आज नहीं। फिल्म देखकर खाना खाएँगे। दो काम एक समय में क्या नहीं कर सकते हैं? ठीक है, चलो पहले फिल्म देखते हैं। " अल्बर्टो ने डीवीडी चालू किया। रूसी सिनेमा, 'द मिरर' शुरू हुई।

"देखो, तुम इस फिल्म को कितनी बार देखोगे ? जहां तक मुझे याद है, तुमने पहले भी मुझे इस फिल्म के बारे में बताया था। "

"सच में ? मैं भूल गया। वैसे भी, तुम्हारे साथ एक बार और इस फिल्म को देख लूँगा तो क्या नुकसान हो जाएगा ? "

हर्षा अल्बर्टो के अकेलेपन का अहसास कर सकती थी। फिल्म देखना केवल बहाना था, केवल एक साथ बैठकर समय व्यतीत करने का। वह फिल्म देखने में मशगूल हो गया था। वह उसके चेहरे पर कभी प्रसन्नता, कभी गंभीरता, कभी हँसी देख सकती थी। लेकिन हर्षा को सिनेमा में मजा नहीं आया। सोचने लगी, इसमें ऐसा क्या खास है कि अल्बर्टो इसे बार-बार देखना पसंद करता है? हर्षा मोबाइल को कान पर लगाकर बाहर आ रही थी, तो अल्बर्टो ने सिनेमा की आवाज कम कर दी और कहने लगा कि यहीं बात कर लो।

उसके पिता का फोन था। शुरु में हर्षा को थोड़ा असहज महसूस हुआ। पुरी का नंबर देखकर उसने पहले सोचा कि यह उसकी माँ का फोन होगा, अपने दुखों को बताने के लिए। मगर दूसरी तरफ उसके पिताजी थे।

" कुनी तुम्हारी तबीयत कैसी हैं?"

"मै ठीक हूँ। " हर्षा ने कहा। बहुत दिनों से उसने पिताजी से बात नहीं की थी। केवल नाराजगी के कारण। स्कूल में पढ़ते समय उसके पिता नीलकंठ दास की तरह बहुत ही मुखर और व्यवहार-कुशल थे। वे सभी सामाजिक नियमों और प्रथाओं को तोड़कर प्रगति के रास्ते खोलना चाहते थे। हेडमास्टर के रूप में उन्होंने स्कूल के लिए नए नियम तैयार किए थे, लेकिन घर में दादाजी के खिलाफ कभी नहीं गए। हर्षा जानती थी कि वे दोनों अलग-अलग खंभे हैं, फिर भी पिताजी ने दादाजी के नीति-नियमों का कभी विरोध नहीं किया था। पर क्यों? बुआ ही क्यों, हर्षा ही क्यों, सभी दादाजी की

इच्छानुसार चलेंगे? उसके पिता कम से कम एक बार तो विरोध कर सकते थे? हर्षा की अपने पिता के खिलाफ कई शिकायतें थीं। उसे पता नहीं क्यों लग रहा था, मनुष्य के आदर्श एक तरफ और मनुष्यता दूसरी तरफ। जिनमें उनके मामूली स्वार्थ, उद्देश्य, सपने और आकांक्षाएं शामिल थीं।

पिताजी ने कहा: "तुम्हारी माँ के हाथ जल गए हैं। "

"जल गए! यह कैसे हुआ?" हर्षा बहुत परेशान हो गई थी।

"पानी की हांडी उठाते समय गर्म पानी उसके हाथों पर गिर गया। "

"अब कैसी है, माँ ?" हर्षा के स्वर में व्यग्रता झलक रही थी।

"डॉक्टर ने घाव पर मलहम लगाने के लिए दिया है। पूजा समाप्त होने में केवल एक दिन बाकी था, पता नहीं क्यों, यह विघ्न पड़ा। माँ की चिंता से तुम परेशान हो जाओगी, इसलिए मैंने तुम्हें फोन किया। ”
"पूजा जैसे चल रही है, चलने दे, इसके बारे में ज्यादा चिंता न करें। मगर माँ पर अनावश्यक दबाव न डाले। उसे आराम करने के लिए कहे। " पता नहीं क्यों, हर्षा को अविश्वास हो रहा था। क्या कोई इस बात के लिए इतना बड़ा झूठ बोल सकता है?

पिता ने फोन रख दिया था। हर्षा माँ की बुरी खबरो से उदास हो गई थी। माँ उसे बार-बार पुरी आने के लिए कह रही थी; अगर वह चली जाती तो शायद यह घटना नहीं घटती। पूरे घर में मां ही उसकी बात को थोड़ा-बहुत समझती थी। उसकी मानसिक वेदना समझकर अकेले में रोती थी। माँ ने पिताजी से जिद्द कर उसे टाटा से वापस लाया था। अवश्य, वह कुछ दिनों के भीतर यह समझ गई थी कि शादीशुदा बेटी को हमेशा अपने पति से अलग घर में रखना संभव नहीं है। माँ उसे सांत्वना देने की कोशिश कर रही थी: "अपनी बुआ को देखो, उसे किस तरह की खुशी मिली? उसका जीवन उसके लिए बोझ बन गया था। अगर वह मर जाती तो शायद दुनिया से तर जाती। तुम क्या जानती हो कि मन कितने जुनून और इच्छाओं का भंडार है? मैंने देखा है तुम्हारी बुआ को पंद्रह साल तक कष्ट भोगते हुए। वह पागल हो गई थी, इसलिए उसे चैन से बांधकर रखा जाता था। किसी भी आदमी को देखकर वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ती थी, इस वजह से कोई भी पड़ोसी हमारे घर में कदम रखने की हिम्मत नहीं करता। तुम्हारा भाई था बहुत ही जवान, उसके गाल पर इतनी निर्दयता से चिंकुटी काटी कि वह घंटों भर रोता रहा। दो दिन तक उसे बुखार रहा। गुस्से से तुम्हारे दादा ने एक कमरे के कोने में एक चैन से बांधना शुरू किया। तुम छोटी बच्ची थी, तुम नहीं समझ पाओगी कि इस शरीर में कितनी आग होती है?

“आग? माँ किस आग की बात कर रही थी?” वह सोचने लगी।

अब हर्षा बहुत अच्छी तरह समझ सकती थी कि उसके मां के कहने का मतलब। राख के नीचे छुपे अंगार की तरह उस सुप्त कामना का अर्थ। जिसकी वजह से उसकी बुआ एक दिन पागल हो गई। अब बुआ अपने पिछले जन्मों के पापों को 'हविश' (पूरे दिन में एक बार खाना) कर मिटाना चाहती थी?जबकि ऐसा कोई पाप बुआ ने किया था ?

अल्बर्टो ज़ोर से हंसने लगा।

"तुम इतने जोर से क्यों हंस रहे हो?"

अपनी हंसी को बहुत मुश्किल से रोकते हुए वह कहने लगा: "हे भगवान, क्या तुम अन्यमनस्क थी? क्या तुमने फिल्म नहीं देखी ? "

हर्षा ने कहा, "नहीं, "

"अरे! क्या हुआ ? तुम ठीक हो? फोन कहां से आया था? क्या कोई बुरी खबर थी? "अल्बर्टो ने एक बार में बहुत सारे सवाल किए। फिल्म को आधे में बंद करते हुए वह कहने लगा: "मुझे गलत मत समझो, मैंने तुम्हारी तरफ ध्यान नहीं दिया; यह स्वार्थपरता नहीं तो और क्या है? मुझे बताओ, बिना झिझक के बताओ, हाना, मैं तुम्हारी मदद कैसे कर सकता हूँ ? "

हर्षा ने कहा, "पिताजी की फोन आया था। गरम पानी से मेरी मां का हाथ जल गया है। "

"ओह! बड़े दुख की बात है! चिंता मत करो, सब-कुछ ठीक हो जाएगा। क्या किसी डॉक्टर को दिखाया है ? तुम ऐसी मानसिक स्थिति में फिल्म देख पाओगी ? चलो, फिल्म देखना बंद करते हैं। बेहतर है, खाना खा लेते हैं। "

हर्षा सोच रही थी, अगर वह आदमी कभी अल्बर्टो की तरह बात करता तो आज उसका जीवन अलग होता। भीतर जाकर अल्बर्टो ने प्लेट पर कुछ खाना लाया। हर्षा ने कहा: "अल्बर्टो, कृपया बैठो, मुझे बताओ कि क्या करना है, मैं कर दूँगी। "

"'अतिथि देवो भव:' - अतिथि देवता-तुल्य होते हैं-आपके यहाँ कहा जाता है। इसलिए तुम चुपचाप बैठ जाओ। ऐसे भी तुम परेशान हो। "

रसोई-घर से दो गिलास जूस लाकर अल्बर्टो कहने लगा: "मैंने 'फातिमा-दिवस' मनाने के लिए तुम्हारे लिए खास भोजन की व्यवस्था की है। "

उसने छैना की दो प्लेटें लाई।

" यह छैना तुम्हारा विशेष भोजन है?"

" गलत हैं, यह चीज़ छैना नहीं है, यह सेटन है। "

"उस सेटन क्या है?"

"ओह, तुमने सेटन को पहले नहीं चखा ? यह तुम्हारा एशियाई भोजन है। यह पहले बौद्ध भिक्षुओं के लिए चीन में तैयार किया जाता था। यह एक प्रकार के आटे से बनाया गया है। वास्तव में, आटे से माँड़ निकालकर प्रोटीन बचा कर रखा जाता है। बौद्ध भिक्षु मांसाहार नहीं लेते थे, उन्हें यह सेटन दिया जाता था। यह सेटन मेरा पसंदीदा भोजन है। "

हर्षा इस बौद्ध को कर्म, मन और प्राण में देख रही थी। बौद्ध भिक्षुओं को सेटन खिलाया जाता था, इसलिए वह भी सेटन खाता है।

हर्षा ने कहा, "क्या हमारे भोजन-पेय का हमारे धार्मिक विश्वासों, पूजा-पाठ, अनुष्ठानों या 'साधना' में कोई संबंध हैं, जैसा तुम कह रहे हो? स्कूल में हमारे पाठ्यक्रम में गौतम बुद्ध के बारे में एक कहानी थी। उन्होंने कठोर तपस्या के लिए उरुवेला शहर में एक सुंदर जगह का चयन किया था। उन्होंने छह वर्षों तक वहाँ पर कठोर तपस्या की थी। तपस्या की इस अवधि के दौरान उन्होंने अपनी सभी सामान्य आदतों को छोड़ दिया। भोजन, पेय और नींद से वंचित रहने और निरंतर तपस्या के कारण वह बहुत कमजोर हो गए। उनकी कठोर तपस्या की जानकारी मिलने के बाद कुछ शिष्य उनके आस-पास इकट्ठा हो गए। वे आपस में फुसफुसाने लगे कि उन्हें बहुत ही जल्दी 'सिद्धी' प्राप्त होगी। एक दिन गौतम अत्यधिक कमजोरी के कारण बेहोश हो गए। जो शिष्य उनके आस-पास इकट्ठे हुए थे, वे कहने लगे कि गौतम की तपस्या करते-करते मृत्यु हो गई। हम व्यर्थ में उनके पास रहे, इस श्रमण ने कोई ज्ञान प्राप्त नहीं किया था। जब गौतम की चेतना लौटी तो उन्हें लगा कि वह मौत की दहलीज से लौटे है। इस तरह भोजन-पेय लिए बिना शरीर को यातना देकर ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है; वरन मृत्यु अनिवार्य है। इसलिए उन्होंने भिक्षा माँगना शुरू किया। इस बार वे संन्यासी कहने लगे कि गौतम बुद्ध छह साल की कठोर तपस्या के बावजूद ज्ञान प्राप्त करने में नाकाम रहे, क्या अब वह भोजन-पेय लेते हुए बिना तपस्या के बुद्धत्व प्राप्त कर सकेंगे ? इस आदमी के पीछे चलने का कोई फायदा नहीं है। वे लोग गौतम को छोड़कर चले गए। मगर गौतम ने महसूस किया कि कृच्छ साधना से शरीर को कष्ट देने की तुलना में सामान्य जीवन जीते हुए सत्य का अनुसंधान करना बेहतर है। "

हर्षा की कहानी खत्म होने के बाद खुशी से अभिभूत अल्बर्टो कहने लगा, "यही कारण है कि मैं तुम को इतना प्यार करता हूँ। मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। यू आर वंडरफूल माय गर्ल। तुम मुझसे वादा करो, हाना, जब तक मैं तुम्हारे देश में हूं, तब तक तुम मुझे छोड़कर नहीं जाओगी। तुम्हारे देश में ही क्यों, मैं तुम्हें सारे जीवन के लिए चाहता हूँ, हाना। ओह, माय स्वीट बेब! "

हर्षा ने अल्बर्टो की भावनाओं पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। केवल कुछ महीनों से वे एक-दूसरे को जानते थे। आज वह यहाँ है, कल वह कहाँ रहेगा, क्या पता। दोनों ने अपनी प्लेटें सिंक में डालने के लिए उठाईं। हर्षा ने टैप के नीचे प्लेटों को साफ किया और अल्बर्टो ने गमछे से उन्हें पोंछकर शेल्फ में रख दिया।

अल्बर्टो ने पूछा: "क्या तुम फोन आने के बाद थोड़ा निराश हो गई थी?"

"हाँ, यह सच है। मगर एक और बात है, मुझे नहीं पता कि कैसे कहूँ। "

"चिंता करने की कोई बात नहीं है। यदि तुम सहज महसूस करती हो तो कह सकती हो, नहीं तो बाद में बता सकती हो। अच्छा, 'रोमांस', के बारे में तुम्हारी क्या धारणा है ? "

“रोमांस?" अल्बर्टो क्या जानना चाहता है ? अचानक ऐसा सवाल क्यों? हर्षा ने होठ भींचते हुए कहा, “ जब मैं पहली बार कॉलेज गई थी तो हमारे अंग्रेजी अध्यापक ने छात्रों को एक कविता समझाने से

पहले यह सवाल पूछा था। हमें यह प्रश्न समझ में आ गया था और उसका इसका जवाब भी। लेकिन हम अनुभव कर सकते थे, पता नहीं, सही उत्तर क्या होगा। एक सौ अट्ठाईस छात्रों में से केवल एक ने अपना हाथ ऊपर उठाया। उसका जवाब था 'सम अनयुजूयल फीलिंग्स'। मुझे नहीं पता कि वह सही उत्तर था या गलत। आज भी मुझे रोमांस का अर्थ नहीं मालूम है। "

हर्षा ने आँखें मूंदकर महसूस किया:

साफ-सुथरा छोटा घर
गोबर लिपा आँगन-द्वार
छप्पर पर लौकी पत्ते व पंख ,
घर के अंदर से गुंजित होता शंख ;
घर से सटा हुआ एक छोटा तालाब
तालाब में मछली , पेड़ों पर पक्षियों की रब
तालाब को घेरे छोटा बगीचा
बगीचे में हरी घास का गलीचा
रात में चमकता चाँद
चाँद का सिर्फ प्रेम मन

" रोमांस कहने से सिर्फ इतना ही कि आँखें बंद करो तो उभर आता है एक चित्र किशोरावस्था का। मन में और ज्यादा कुछ नहीं आता है। घर के लोगों के बारे में नहीं सोचा जा सकता है। सोचा नहीं सकता उनके नाक, नक्शा या चरित्र के बारे में कुछ भी। जब तक आँखें बंद रहती हैं तब तक चांदनी में स्नान करती है घर की छत। जब खुल जाती है, तो कुछ भी नहीं नजर आता है। रोमांस, रोमांस, रोमांस, 'रोमांस' कुछ है भी क्या, अल्बर्टो?

"कैंडल लाइट डिनर, जाज, बोटींग, ये क्या हैं, हाना ?"

"क्या यह दार्शनिक अल्बर्टो का उत्तर है?"

"हां, तुमने सही कहा। " अल्बर्टो ने कहा, "रोमांस कोहरे की तरह है, एक ऑप्टिकल भ्रम है, यहाँ है, यहाँ नहीं। जो है, वह नहीं है। जो नहीं है, वह है। बंद आँखों के तले हम जीवन का आधा हिस्सा जीते है, और आधा खुली आँखों से। जब तक बंद आँखों के तले कुछ भी दिखाई नहीं देता है कि जीवन जीना एक आदत बन जाता है। "

“हां, जीवन अभ्यस्त हो जाता है। ” तकिये को गोद में लेते हुए हर्षा ने अपनी आँखें बंद कर दीं। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। कोई घर नहीं, कोई बाग नहीं, कोई मछली नहीं और न ही लौकी की लता, यहां तक कि चाँद भी नहीं। केवल एक चीज उसकी आंखों के सामने दिखाई देने लगी, वह थी दक्षिण दिशा की खिड़की। ऐसा लग रहा था जैसे कि कोई उसे आधी रात को नाम लेकर बुला रहा हो। कोई दरवाजे पर दस्तक दे रहा हो। बार-बार कॉलिंग-बेल की घंटी बज रही थी, एक छोटे बच्चे द्वारा गुणन तालिका के रटने की तरह। फिर भी हर्षा उठकर दक्षिण दिशा की खिड़की की ओर नहीं गई। हर्षा मानो निबुज कोठारी में बदल गई हो, उसके पास कोई आवाज नहीं पहुंच रही हो। नहीं, वह

दरवाजा नहीं खोलेंगी। उस आदमी को बाहर रहने दो। उसके दाँत भींच रहे थे। दरवाजे पर कोई बार-बार किक मार रहा था। सुनते हुए भी अनसुना करते हुए बैठी हुई थी वह। धीरे-धीरे सब-कुछ शांत हो गया। आह! आदमी सर्दी की इतनी ठंडी रात में बाहर ठिठुर जाएगा। झरोखे के पास से उठकर वह धीरे-धीरे दरवाजा खोलने के लिए आगे बढ़ी। आदमी अभी तक जमीन पर लुढ़का नहीं था।

"तुम इतनी देर क्या कर रहे थे, पियक्कड़?"

उस शराबी ने हर्षा को धक्का दिया और खुद वहीं जमीन पर ढेर हो गया। उसके बाद सब-कुछ शांत, नीरव और स्थिर। हर्षा आदमी को उठाकर बिस्तर पर ले गई। वह रात में बिस्तर पर मृत मछलियों की तरह दिख रहा था, लेकिन सुबह उसने हर्षा को अपने प्रचंड पौरुष और पूंजीभूत आक्रोश से छिन्न-भिन्न कर दिया था। उसने विरोध किया, " अभय, आई एम इन पेन। मेरे पेट में भयानक दर्द है। देखो, आज मेरे लिए यह संभव नहीं है। तुम तो एक डॉक्टर हो, तुम मेरी स्थिति को अच्छी तरह से समझ सकते हैं। मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ? क्या तुम कुछ दिनों के लिए संयम धारण नहीं कर सकते हो ? "

"कैसा अंधविश्वास है? सब फालतू बात है। " वह आदमी परेशान होकर ब्याज समेत सब वसूल करना चाहता था, जैसे कि वह रात का गुस्सा नहीं भूल पाया हो। हर्षा विकल होकर पूछने लगी, "मेरे दर्द का क्या? मेरी पीड़ा कुछ नहीं ? क्या यह कुसंस्कार हैं, क्या यह फालतू है?" हर्षा की आँखों के दोनों किनारों से आँसू गिरने लगे। दांत भींचकर सूखी मिट्टी की तरह पड़ी रही।

"क्या हुआ, हाना? तुम रो क्यों रही हो? क्या हुआ, मुझे बताओ। " अल्बर्टो उसके पास आकर बैठ गया। "याद रखो, हाना, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं, सुसमय-दु:समय में भी। हे हाना, माय स्वीट, मेरी प्रियतमा, जब तुम यहां आई थी, तब से मैं समझ गया था। तुम्हारे सीने में दुख के काले बादल भरे हुए हैं, जानता हूँ तुम किस कारण से उदास हो। मैंने तुम्हें अपनी सीमित क्षमता के भीतर दु:ख की दुनिया से उबारने का बहुत प्रयास किया। मैंने तुम्हारे चेहरे पर मुस्कराहट लाने की कोशिश की, लेकिन दुर्भाग्य से मैं विफल हुआ। "

अल्बर्टो की उंगलियां हर्षा के बालों को सहला रही थी। जैसेकि वह उसके सारे दुखों को पोंछना चाहता हो। मानो हर्षा के आँसूओं से धीरज का तटबंध टूट गया हो।
"हम यूरोपीय कभी किसी के निजी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारा दर्द क्या है, लेकिन मैं तुम्हारा दोस्त हूं, मैं तुम्हारा साउलमेट हूं, तुम्हारा आत्मीय हूँ। " कहते-कहते वह उसे अपनी छाती के नजदीक ले आया। मानो नदी लंबे समय से सूख गई थी और उसके किनारे सूखी रेत पर अल्बर्टो और हर्षा दोनों वहां खड़े हुए थे। चारों ओर तेज धूप। क्षितिज में दूर-दूर तक एक भी पक्षी दिखाई नहीं दे रहा था। अचानक अल्बर्टो के स्पर्श से नदी छलक उठी, बांध तोड़कर लहरें रुक नहीं पाई।

उसने अल्बर्टो के होठों को स्पर्श किया: "तुम मेरी केवल सहेली नहीं हो, हाना, उससे अधिक हो। जानती हो न, हम दोनों एक ही हैं? हम दोनों निर्जन सपने देखने वाले हैं। देखो, हमें भाग्य ने कैसे जोड़ा? "

अल्बर्टो की छाती शरण-स्थली हो। दोनों सुरक्षा के वलय में थे। "माय हनी, माय गर्ल, प्लीज डोंट क्राय , तुम फोन से बहुत परेशान लग रही हो, कोई बुरी खबर है? "

कई दिनों से हर्षा को झिझक हो रही थी। पता नहीं, कैसे एक झटके में बाहर निकल आई हो: "मैंने तुम्हें एक बात नहीं बताई, अल्बर्टो। लेकिन आज मैं इसे बोलना चाहती हूं। मैं स्वतंत्र नहीं हूँ, मेरा जीवन अभी भी किसी के साथ बंधा हुआ है। मुझे आज़ाद होना चाहती हूँ। मुझे नहीं मालूम कि मुझे आजादी मिलेगी या नहीं। लेकिन मुझे आजाद होना है। वरना मेरा जीवन व्यर्थ हो जाएगा। इंसान के रूप में पैदा होने की कोई सार्थकता नहीं रहेगी। तुम जानते हो, अल्बर्टो, उसने मुझे फिर से फोन किया था। "

" किसने फोन किया था ? पिताजी ने ? "

"पिता ने मुझे अभी फोन किया है, लेकिन उसने मुझे दो दिन पहले फोन किया था। "

" कौन है? किसकी बात कर रही हो? "

मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरा विवाह कर दिया गया था। मेरे दादा बहुत बूढ़े हो गए थे। प्राय: वह बीमार रहते थे। जिद्द कर रहे थे कि मरने से पहले अपनी नातिनी की शादी देखेंगे। "

"गजब ! तुम्हारे जीवन का निर्णय दूसरा क्यों लेगा ? "अल्बर्टो ने प्रतिक्रिया व्यक्त की, "हमारे देश में हम इस संबंध में पूरी तरह से स्वतंत्र हैं। वास्तव में तुम्हारे साथ बहुत अन्याय हुआ है। "

" घर में दादाजी की चलती थी। मेरे पिता में भी उनका विरोध करने की हिम्मत नहीं थी। वास्तव में, वह मेरे दादाजी को दुखी करना नहीं चाहते थे। उस समय मेरी उम्र बीस वर्ष थी। "

"ओह, इट इज होरीबल। यह होना उचित नहीं है। मैंने सुना है कि तुम्हारे यहाँ शादी से पहले जाति और जन्मकुंडली का भी मिलान किया जाता हैं। कुल अजनबी के साथ किसी की मानसिकता कैसे मिल सकती है? यह पूर्व और पश्चिम के बीच अंतर है। "

पता नहीं दूसरा समय होता तो हर्षा इस मुद्दे पर अल्बर्टो से झगड़ा करती, लेकिन अभी वह एक स्रोत में बहती जा रही थी। वह इतनी तेजी से बहती जा रही थी कि उसमें खुद को रोकने की क्षमता नहीं थी। वह कहने लगी, "शादी के लिए उम्मीदवारों की खोज चल रही थी। मेरे पिता एक हेडमास्टर थे, तब भी वह प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकते थे, उस समय उन्हें मेरी इच्छा-अनिच्छा का ध्यान नहीं आया। मेरा रोना-धोना सब व्यर्थ गया। "

अल्बर्टो ने हर्षा को और निबिड भाव से कस लिया। जैसे कि वह यह कहना चाहता हो कि चिंता की कोई बात नहीं है, कोई नहीं होने पर भी वह उसके साथ है। "देखो, मैं देवदूत की तरह कैसे आया हूं। दुख होने के कारण क्या हम जीना छोड़ देंगे? नहीं, यहीं संदेश देने के लिए मैं पुर्तगाल से आया हूं। "

“जानते हो, मैं  बहुत अच्छी छात्रा थी। मेरी प्रतियोगी परीक्षा पासकर आईएएस या अलाइड बनने की तीव्र इच्छा थी। मगर मेरे सपनों से किसी को कोई मतलब नहीं था। बारंबार मुझे दूल्हे के उम्मीदवारों के सामने नाश्ता  और चाय की ट्रे लेकर जाने के लिए कहा जाता था। बहुत बार मुझे उनके अप्रासंगिक प्रश्नों का जवाब देना पड़ता था। किसी ने मुझे गाना गाने के लिए कहा, मगर मुझे गाना नहीं आता था।

"लेकिन, यह सब क्यों ? तुम्हें ऐसा क्यों करना पड़ा ? "

"दिस इस द वे। इस तरह वे लड़की को अपने जीवन-साथी बनाने के लिए चुनते हैं। रूप और बुद्धिमता, चाल- चरित्र, स्वभाव और सामर्थ्य - इन सभी चीजों की परीक्षा होती है। घर से भागने की इच्छा हो रही थी, लेकिन सभी लड़कियां ऐसा नहीं कर सकतीं, अल्बर्टो। सभी लड़कियां तो क्या अधिकांश लड़कियां घर छोडकर नहीं भाग पाती है। ज्यादातर लड़कियां अपने परिवार के फैसले को स्वीकार कर लेती हैं। वह आदमी टाटानगर में डॉक्टर था। उनके पिता डीएसपी थे, पश्चिमी ओडिशा के बरगढ़ में। वह मेरे पिता के बचपन के दोस्त थे, नौकरी के खातिर वहाँ रह रहे थे। फोटो देखकर उस आदमी ने मुझे पसंद कर लिया था। उसने मुझे शादी से पहले एक बार भी नहीं देखा था। मेरा ससुराल पुरी से कुछ किलोमीटर दूर था। पिताजी  और दादाजी के अनुसार वह कुलीन परिवार का लड़का था। "

शादी के बाद, आदमी ने दिल का दरवाजा पीटने की बजाय उसके शरीर का दरवाजा पीटने लगा। हर्षा चुपचाप बैठी हुई थी। अल्बर्टो अपनी उंगलियों से उसके बाल सहला रहा था। अचानक उसने उसे कमर से पकड़कर बाहों  में लेते हुए उसके होठों पर अपने होठ सटा दिए, मानो वह उसके सारे दुःखों को पीना चाहता हो। लंबे समय से जैसे सूखी नदी अचानक उफान पर आ गई हो। जैसे अनियंत्रित बाढ़ की तरह चारो ओर पानी ही पानी होता है, वैसे ही उत्तेजना की बाढ़ हर्षा में उमड़ पड़ी थी। दोनों पक्षी बंधन तोड़कर आजाद हो गए। अल्बर्टो ने पूछा: "इस चीज से ऐसी क्या नाराज़गी?"

"ओ, अल्बर्टो, देट न्यूड बॉडी, सो अगली, आई हेव नोट इमेजीन एवर। उस आदमी का चेहरा देखने से पहले मैंने उसका नग्न शरीर देखा था। "

"ओह, सो क्रेज़ी, " अल्बर्टो ने कहा।

" उस आदमी की आवाज सुनने से पहले मैंने उसकी हुंकार सुनी थी। हे भगवान! देट इज द डेस्टिनी ऑफ ए वूमेन।  तुम विरोध नहीं कर सकती हो, क्योंकि ऐसा करने का उसे अधिकार नहीं दिया गया है। तुम्हें चीरा जाएगा, तुम्हारे टुकड़े किए जाएंगे, तुम्हें दबाया जाएगा, मारा जाएगा, निचोड़ा जाएगा, चूसा जाएगा, घुस जाएगा और अंत में उलटी में डुबोया  जाएगा। तुम कुछ नहीं कह सकती हो क्योंकि तुम्हारे ऊपर उसका कब्ज़ा हैं।  वह चावल की थाली में शराब डाल सकता है, तुम उसे ऐसा करने से रोक नहीं सकती हो। "

दक्षिण दिशा की ओर खिड़की खोलकर रात भर इंतजार कर रही उस लड़की के बारे में जरा सोचो। अल्बर्टो के दिमाग में क्या ख्याल आएगा, अगर उसने दरवाजा नहीं खोला ? उसके लिए उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। इससे बच नहीं सकते हैं।

"मेरे माथे पर निशान देख, टेबल के किनार से मुझे मारा गया। प्रतिरोध करने का यह नतीजा है। देख मेरी  दाहिनी हथेली पर छोटे-छोटे निशान, सिगरेट की तरह, देख सकते हो, अल्बर्टों ? "

लाल लोमश छाती एक गेहूंआ शरीर से भीग गई थी। "हाना, माय डार्लिंग, माय स्वीटेस्ट गर्ल ऑफ ईडन, डोंट क्राय। फील मी, आई एम नोट देट मेन, माय हाना, माय प्रिंसेज। "

"मैंने कई दिन खाना नहीं खाया। चारदीवारों के भीतर मेरा हृदय हाहाकार कर रहा था। अस्पताल का चपरासी घर के लिए मटन लाया। रोगियों ने बहुत सारे उपहार दिए थे। मगर घर में चावल नहीं, दाल नहीं, उस आदमी ने कभी मेरे दाल-रोटी के संसार के बारे में कोई जानकारी नहीं ली।

कई बार सुबह-सुबह उठने के बाद  मैंने देखा कि वह आदमी मेज पर सुबह सात बजे से शराब की बोतल लेकर बैठा हुआ है; तुम उसका विरोध नहीं कर सकती हो। यदि तुम ऐसा करती हो तो वह तुम्हारा अस्तित्व अपनी  लम्बी जीभ से चाट जाएंगा। तूफान से भी ज्यादा प्रचंड, हड्डियों को चूर-चूर करने वाला आक्रोश, अज्ञात शहर में खोए हुए रास्तों का अंधकार, वमन कराने जैसी कुत्सित गंध,  पूरे शरीर पर मानचित्र, सीने में आर्त, आँखों के कोने में आँसू - ऐसे दृश्य किसी भी समय घटित हो सकता है। घर एक निर्जन द्वीप की तरह दिखाई देने लगा। आँखें घुमाने पर ओडिशा काफी दूर नजर आने लगा। बार–बार आंखों के सामने नजर आने लगता था सागर किनारे वाला छोटा शहर पुरी। क्या यह सब मेरा प्रारब्ध है? या यह एक महिला का भाग्य है? "
थक गई थी हर्षा। पूरी तरह से क्लांत। अल्बर्टों के स्पर्श से उसकी आँखें मूँदने लगी थी। अल्बर्टों के सम्मान उसे ठंडी समुद्री हवा का अनुभव होने लगा। उसकी पलकें बंद होती जा रही थी। खोलना चाहने पर वह नहीं खोल पा रही थी।

## 5

“ कार्येषु दासी, कर्णेषु मंत्री
भोज्येषु माता, शयनेषु रंभा
क्षमाया धरित्री ”

डॉक्टर शुक्ल ने यह श्लोक उस दिन सुनाया था। उस समय उस आदमी की हालत गंभीर थी। लीवर सिरोसिस से पीड़ित था वह। वह आदमी लगभग लगातार उल्टी करने से निस्तेज होकर पड़ा हुआ था। शरीर का तापमान कम नहीं हुआ था। यद्यपि हर्षा शुरु से ही उस आदमी को पसंद नहीं करती थी, मगर वह संकट के समय  उसे नहीं छोड़ सकती थी। वह बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि वह ठीक हो जाएगा तो अपना दोगुना पौरुषत्व दिखाएगा।

ऐसा कहा जाता है कि इंसान का दिल इतना नरम होता है कि यदि कोई व्यक्ति कुछ दिनों तक शैतान के साथ रहता है,  तो भी दोनों माया के बंधन से बंध जायेंगे। बेशक,  वह उस आदमी के साथ छह महीने रही। लेकिन पता नहीं क्यों उसके सीने में ममता का फूल नहीं खिला ?

मेरे पिताजी और चाचाजी शादी से पहले दामाद की स्थिति देखने गए थे। वह मेरे पिताजी के पुराने दोस्त के पुत्र थे, इसलिए आपत्ति होने का सवाल ही नहीं था। मगर औपचारिकतावश दोनों टाटानगर गए थे। वह अस्पताल में नहीं मिला। चपरासी उन्हें क्वार्टर में ले गए। घर अंदर से बंद था। पड़ोसियों ने बताया कि उन्होंने कल सुबह से डॉक्टर को घर से बाहर नहीं देखा था। अंदर सो गए लगते है। दोपहर का समय था। मेरे पिताजी और चाचाजी दोनों दरवाजा खटखटाते-खटखटाते थक गए थे। भीतर कोई होता तो निश्चय बाहर आ जाता। पड़ोसी और क्या कहते? कहने लगे, अगर बाहर गए है तो उन्हें मालूम नहीं है। पिताजी और चाचाजी ने दरवाजे की फांक से अंदर झांकते हुए देखा कि वह आदमी फर्श पर सो रहा है। उसने अपनी पैंट में पेशाब किया था, जिसकी छाप फर्श पर दिखाई दे रही थी, जिसके चारों ओर चींटियां ही चींटियाँ। अगर उन्हें उसके खर्राटों की आवाज नहीं सुनाई पड़ती, तो वे सोचते कि वह आदमी मर चुका था। मेरे पिताजी बहुत निराश हो गए थे। उन दिनों वे भयानक मानसिक द्वंद्व से गुजर रहे थे। मेरे चाचाजी ने बताया कि जिस अस्पताल में वह काम कर रहा है, वह बहुत बड़ा था। डॉक्टर के रूप में उसकी उच्च प्रतिष्ठा है। क्वार्टर भी बहुत बड़ा था। तुम्हें इतना चिंतित होने की जरूरत नहीं है, शादी के बाद वह निश्चित रूप से बदल जाएगा। सभी लोग चाचा की बातों से सहमत हुए थे। हर्षा से किसी ने राय नहीं पूछी। चाचाजी ने उत्साहित होकर कहा, " हम जिस टैक्सी से स्टेशन से उसके घर गए थे, टैक्सी वाला कह रहा था कि डॉक्टर साहब का ऑपरेशन में हाथ बहुत साफ है। लेकिन ..."

'लेकिन' शब्द ने मेरी माँ को चौंका दिया था। आखिर वह एक माँ थी; उस आदमी के पीने की आदत की खबर पहले ही उसके कानों में पहुंच चुकी थी, वह अपनी बेटी को उस आदमी के हाथ में देने से डर रही थी वह। "

"'यह एक आदत है", चाचाजी ने कहा, 'अकेला आदमी है इसलिए। सब-कुछ शादी के बाद ठीक हो जाएगा। "

हां, उस आदमी का अच्छा नाम था, शल्य चिकित्सा में सिद्ध-हस्त, मगर उसका हृदय ? यही कारण है कि उसने हर्षा के हृदय को छूने से पहले उसके शरीर को छुआ।

वह जैसे ऑपरेशन टेबल पर है
श्वेत-चादर से ढका उसका निर्जीव शरीर
हरे रंग के अप्रोन- मुखौटे के नीचे
दो आँखें चमक रही थी
उसके एक हाथ में चाकू और दूसरे में फोरसेप
उसके दुःख-दर्द उसकी पहुंच से परे
हृदय से कविता की एकाध पंक्ति तक नहीं

जैसे वह केवल जानता हो
अलिंद, निलय, शिरा-प्रशिरा,
हृदय केवल एक मांसल यंत्र
नहीं, उसे मालूम नहीं, कहाँ छुपा है

कविता का ठिकाना

उसने हर्षा को निचोड़ा-दबाया
दर्द से बिलबिलाती
देह बनकर वह ऑपरेशन टेबल पर

उसकी यंत्रणा उस आदमी की पहुंच से परे।
दस्ताने उसके दोनों हाथों में
उसके कोमल युग्म-फूलों पर
उसके हाथ
सिहरनविहीन, कर्कश
जो स्पर्श उसे सिहरित करता
उससे वह आहत, जर्जरित
तभी क्रूर व्यक्ति का चाकू के साथ अंधेरी गली में प्रवेश
मानो अनेक युगों से भूखा एक
अपनी अभुक्त क्षुधा मिटाने हेतु
लग गया हो एक आसुरी खेल में निरंतर

डॉ शुक्ला, सी॰एम॰ओ॰ ने अपने कनिष्ठ डॉक्टर की स्थिति की जांच की। हर्षा एक कुर्सी में उसके पास बैठी हुई थी। ड्रिप बहुत धीमी गति से चल रही थीं। जैसे बूंद-बूंद कर जीवन भीतर घुस रहा हो। हर्षा की इच्छा हो रही थी कि ड्रिप की गति तेज कर दें ? उसे डिटोल और आयोडिन की तेज गंध वाले अस्पताल से मुक्ति मिल जाती। रिश्तेदार अभी तक उस जगह नहीं पहुंचे थे। डॉ॰ शुक्ला ने उसे अपने कक्ष में बुलाया। वे उसके पिताजी की उम्र के सज्जन व्यक्ति लग रहे थे। उन्होंने कहा, "बैठो बेटी ! तुम्हें कुछ कहना है। तुम मेरी बेटी की तरह हो। इसलिए मैं कह रहा हूँ। तुम नव-विवाहित हो। महापात्र क्यों नहीं संभालती हो? उसकी हालत देख रही हो? यदि तुम चाहोगी तो सब-कुछ ठीक कर सकती हो। "

हर्षा की आंखों में आँसू छलक पड़े। पता नहीं क्यों, डॉ॰ शुक्ला ने कहा, "मुझे पता है, तुम पर कितना अत्याचार हो रहा है। मैं तुम्हारे दुख कोसमझ सकता हूं। तुम्हारा तो जीवन अभी शुरू हुआ है। अभी बहुत दूर तक जाना है। जो भी वह करता है, तुम दोनों के लिए हानिकारक है। केवलमहिला ही उसे ऐसा करने से रोक सकती है। क्या वह तुम्हारी बात नहीं सुन रहा है? तुम्हें पता है, वह एक बहुत अच्छा डॉक्टर है। लेकिन इस आदत केकारण उसका केरियर कभी भी खराब हो सकता है। तुम तो देख रही कि हम सभी को उसे सामान्य स्थिति में वापस लाने के लिए कितना प्रयास कर रहेहैं। ठीक होने में थोड़ा देर हो सकती है, लेकिन वह अच्छे हो जाएंगे। लेकिन दोबारा ऐसी अवस्था नहीं होनी चाहिए। डॉक्टर कोई भगवान नहीं है, जो किसी को जीवन-दान दे सकते हैं। "

हर्षा पत्थर की मूर्ति की तरह बैठ रही। कह नहीं पाई, दक्षिण-दिशा की खिड़की खोलकर सारी रात इंतजार करने वाली लड़की की कहानी। कह नहीं पाई कि वह केवल एक शरीर है, आत्मा नहीं।

डॉ शुक्ला ने कहा, " मनु का एक श्लोक यादनहीं है? एक पत्नी को कितनी अलग अलग भूमिकाएं निभानी पड़ती है?”

“ कार्येषु दासी, कर्णेषु मंत्री
भोज्येषु माता, शयनेषु रंभा
क्षमाया धरित्री ”

हर्षा को इस पुराने डॉक्टर पर बहुत गुस्सा आ रहा था। वह उसे उपदेश क्यों दे रहा है ? हर्षा इस आदमी अलग-अलग भूमिका क्यों निभाएगी, चाहे वह उसे प्यार करता है या नहीं, यह भी अभी तक उसे मालूम नहीं है ? वह यह भी नहीं जानती कि यह आदमी रात भर कहाँ गया था। डॉ॰ शुक्ला ने उसे उपदेश देने के बजाय आदमी को क्यों निलंबित नहीं किया? क्या उसे मालूम है कि अगर हर्षा ने अपना मुंह खोलेगी तो वह उसे बेरहमी से पीटेगा?

क्या सोचकर मनु ने नारी को टुकड़ों में बाँट दिया? ऐसा क्यों नहीं सुझाया कि आदमी को औरत का दिल कैसे जीतना चाहिए? हर्षा समझ नहीं सकी कि क्या मनु का यह नियम नारी की रक्षा के लिए था, या नारी की दुरावस्था इस नियम के कारण है।

समाचार मिलते ही उस आदमी के माता-पिता वहां पहुंच गए। कुछ दिनों तक उन्होंने अपने बेटे को विशृंखलित जीवन के लिए दोषी ठहराया, लेकिन धीरे-धीरे उनकी राय बदलती गई। उसकी सासूजी ने कहा: " उसके मन में बहुत दुख है। तुम्हारे पिता ने दो लाख रुपये दे दिए और फिर चुप बैठ गए। उनके स्टेटस के अनुसार दो लाख ठीक है? तुम्हारे पिताजी मेरे पति के बचपन के दोस्त हैं, इसलिए हम चुप रहे। मगर बेटे का मन शांत नहीं हुआ है ? आजकल ऐसे लड़के पाना वास्तव में मुश्किल है। देखो, उन्हें डॉक्टर जैसा दामाद कैसे मुफ्त में मिल गया ? "

पैसों के साथ हृदय का क्या संबंध है ? अगर पिताजी ने ज्यादा दहेज दिया होता तो क्या आदमी बदल गया होता ? क्या वह पीने की पुरानी आदत छोड़ देता? क्या वह पूरी दुनिया हर्षा पर बलिदान कर देता ? क्या वह उस पर प्रेम-चांदनी न्यौछवार करता ? क्या वह उसे सुरीले गीतों से झूले में झूलाता ? अगर किसी नारी के लिए डॉक्टर या किसी अधिकारी का कोई मूल्य है, तो क्या वह अपने प्यार से वंचित रहेगी ?

एक दिन उसकी ननद ने उसे एक प्रिय सहेली की तरह बताया कि किश्कू अपने भाई के पतन के लिए जिम्मेदार है।
"किश्कू? यह किश्कू कौन है? "

"मेरा भाई मरीयम किश्कू नामक एक आदिवासी महिला डॉक्टर से शादी करना चाहता था। ब्राह्मण होने के नाते, एक ईसाई के साथ शादी कैसे हो सकती थी? जानती हो, भाभी, किश्कू बहुत दारू पीती थी। भाई के पीने की आदत वहीं पैदा हुई। "

किश्कू ने उसे पीना सिखाया था, उसने उसे प्रेम भी सिखाया होगा, हर्षा ने सोचा, लेकिन प्रेम कहाँ गायब हो गया? नहीं, ये सब झूठ हैं,। केवल सांत्वना, केवल बहानेबाजी है।

हर्षा ने फोन पर अपनी मां को बताया: "आपने मेरी इच्छा के विरुद्ध विवाह कर दिया। मेरा जीवन इस आदमी के साथ नरक बन गया है। आओ और देखो कि आपकी बेटी इस नर्क में कैसे जी रही है। "

"जब तक तुम्हारे बच्चे नहीं होते है, तब तक मैं तुम्हारे घर कैसे आ सकती हूं? जब तुम्हारे बच्चे हो जाएंगे, देखोगी, अपने आप सब-कुछ ठीक हो जाएगा। उसका अपने परिवार और घर के प्रति मोह पैदा हो जाएगा। जो भी हो, बच्चे अपना खून होते हैं। "

कब से उसका शरीर सूखे खेत की तरह हो गया था। दरारें पड़ने लग गई थी मिट्टी में, वह आदमी व्यर्थ में बीज बोते जा रहा था। जब मिट्टी से कोई लगाव या स्नेह नहीं होगा, तो कभी फसल उग सकती है। फसल? व्यर्थ। हर्षा को कभी भी इस बात का खेद नहीं था। बल्कि वह खुश थी कि वह मुक्ति के मार्ग की कल्पना कर सकती थी। जब भी वह घर लौटगी, तो अपने पिताजी को बताएगी कि उन्होंने घाटे का सौदा किया है। "आप एक असफल व्यापारी हो, आपने जिसे दो लाख रुपए में खरीदा था, उसकी अच्छे ढंग से पूछताछ क्यों नहीं की। "

हर्षा आदमी से कुछ भी नहीं बोल पाती थी। एक बार उसने विरोध किया था, तो उस आदमी ने उसे धक्का दे दिया था। "तुम एक बित्ता की लड़की हो और मुंह लगती हो। "

टेबल के किनारे से टकराकर वह धराशायी हो गई थी। उसे चिढ़ाने के लिए उसने अपने लंबे पाँव टेबल पर रखकर बोतल पीने लगा। उसके बाद वह घर छोड़ कर चला गया और उस दिन नहीं लौटा।

पास-पड़ोस के लोग उसकी पीने की बुरी आदत के कारण उसके घर जाना पसंद नहीं करते थे। लेकिन जब वह बीमार हुए तो वे लोग देखने अवश्य आए। एक बार शराब पीकर क्लब में अपनी पैंट खोल दी थी, इसलिए कोई भी महिला उसके घर आने की हिम्मत नहीं करती थी। लेकिन फिर भी कहते कि वह बहुत अच्छा डॉक्टर है। मरीजों को स्पर्श करते ही ठीक हो जाते थे। भगवान का यह कैसा प्रहसन है ? शैतान के हाथ में जादू की छड़ी दे दी है ? छूते ही रोगी स्वस्थ हो जाते हैं? जबकि वह उसके नरम दिल को छूने में समर्थ नहीं है ? इसमें हर्षा की गलती कहाँ है? वह किश्कू की जगह लेने यहां नहीं आई थी। इसके अलावा, उसके और किश्कू में बहुत अंतर है। अगर उसे प्रेम मिले, तो क्या वह उसे बदले में प्रेम नहीं देगी ?

नहीं, किश्कू कारण नहीं थी। हर्षा को एहसास हुआ कि यदि किश्कु ने भी उस आदमी से विवाह किया होता, तो उसका भी भाग्य वैसा ही होता। सास ने कहा कि बचपन से ही इसको बहुत लाड़-प्यार मिला था; वह छह बेटियों के बाद इकलौता बेटा पैदा हुआ था, इसलिए उसकी मांगों को तुरंत पूरा किया जाता था, नहीं तो फिर प्रलय हो जाता। एक बार जब वह चार साल का था, तो उसके पिताजी उसे पेशाब कराने के लिए बाहर ले जा रहे थे। लेकिन वह इतना क्रोधित हुआ था कि उसने पिता के ऊपर पेशाब कर दिया। मगर पढ़ाई में वह बहुत तेज और बुद्धिमान था।

हर्षा आश्चर्यचकित थी अपने पिताजी पर उसके पेशाब करने की कहानी को उनकी सास दिग्विजय के रूप में सुना रही थी।

उसके दादाजी की मृत्यु हो गई। हर्षा पुरी आई। वह अपने पति के घर और नहीं लौटेगी, इस जिद्द पर अडिग थी। "जिनके लिए आपने मेरी शादी करवाई थी, वे तो अब दुनिया में नहीं है, अब आपको किसी भी तरह की

सफाई नहीं देनी पड़ेगी, आप मुझे यहाँ रहने दे, मैं वहां नहीं जाऊंगी। सच कहती हूँ, मैं किसी पर बोझ नहीं बनूँगी। मुझे जाने के लिए और मत पूछना। "

घर में तूफान पैदा हो गया था।

पिताजी ने कहा, "मैं अपना चेहरा कैसे दिखाऊंगा? किसे क्या जवाब दूंगा ? लोग क्या कहेंगे मुझे ? तुम छोटी हो ये सारी बातें तुम्हारी समझ में नहीं आएगी। "

" अगर मैं छोटी बच्ची हूँ तो आपने मेरी शादी क्यों करवाई ? मेरी सहेलियाँ स्नातकोत्तर कर रही हैं, मैं भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकती थी। "

वह आदमी भी उसे छोटी लड़की कहता था। लेकिन इतनी छोटी लड़की देखकर चेहरा क्यों बिगाडता था! हर्षा नाखुश थी। उसकी उम्र थी चौतीस साल, उससे चौदह वर्ष बड़ा। लगातार पीने से मोटापा बढ़ गया था। हर्षा ने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा आदमी उसके जीवन में आएगा। काश! वह नहीं पीता होता और नहीं वह पीकर अपने होश खोता। पता नहीं, शराब का नशा उतर जाने के बाद उसके शरीर में दर्द नहीं होता। शायद सब कुछ भूलकर उसने अपनी भावनाओं के साथ समझौता कर लिया था। अधिक नहीं तो, एडजस्टमेंट करने से जीवन कट जाता। मगर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, वह आदमी कभी भी उसका दोस्त नहीं बन सका।

हर्षा अपनी मां को सब-कुछ नहीं बता पाई। वह आदमी शराब के बोतल की तरह उसके शरीर से प्यार करता था। वह आदमी उसके शरीर से प्यार करता था क्योंकि उसे शराब से प्यार था। शराब की बोतल के प्रति उसकी ममता थी, लेकिन उसके प्रति कोई लगाव नहीं था। माँ ने कभी ध्यान नहीं दिया कि शरीर के अंदर एक सूक्ष्म मन भी है। "मेरी बातों को बच्चों की बातें समझकर नजरंदाज मत करो, इस शरीर और मन को दुख पहुंचता है। "

माँ ने हर्षा की करीबी सहेली सरिता को बुला दिया, हर्षा के मन की वेदना को जानने के लिए। सरिता हर्षा की बातें सुनकर हंसने लगी: "क्या तुम पागल हो? यह नहीं मिलने से लड़कियां पागल हो जाती हैं और तुम कहती हो कि यह तुम्हारे दुख का कारण है, तुम्हारी वेदना का कारण है।

वह सरिता को समझा नहीं सकी अथवा सरिता उसे समझ नहीं पाई ? सरिता समझने लगी कि हर्षा नखरे कर रही है। सभी की यह ही राय थी। दया करने के बजाय उन्हें क्रोध आने लगा।

हर्षा किसी को भी अपना दुःख या पीड़ा नहीं समझा सकी। वह अपनी सबसे बड़ी बुआ के पास गई और कहने लगी, "महिलाओं को इतना दुख क्यों मिलता है?"

बुआ ने हँसते हुए कहा: "सभी कान्हा की लीला है। तुम किस दुख के बारे में बात कर रही हो? मुझे क्या पता, ससुराल या पति का प्यार क्या होता है? कान्हा का ध्यान करो और सब-कुछ ठीक हो जाएगा। "

धत्! उसे बुआ से सुझाव नहीं लेना चाहिए था, जिसने सुहाग-रात तक नहीं देखी हो? हर चीज उसकी कल्पना है जैसे कि उसका कान्हा।

छोटी बुआ भी हर्षा को समझाने आई। "यह बात तुम्हारे ससुराल तक न चली जाए, इसलिए तुम बात को मत बढ़ाओ, बेटी। पुरी से तुम्हारा ससुराल है कितनी दूर! अगर ये बातें उनकी कानों तक पहुंच गई तो वे तुम्हारे चरित्र पर संदेह करेंगे। छोटी बुआ ने शादी के समय आई॰ए॰ पूरा किया था, उसके बाद वह फूफाजी के प्रयास से वह बी॰ए॰, बी॰एड॰कर प्रशिक्षित स्नातक बन गई। अब वह एक शिक्षिका थी। फूफाजी साई कॉलेज में व्याख्याता

थे। बुआ ने फूफाजी को हर्षा की समस्या के बारे में अवश्य बताया होगा। घर में सभी को मालूम है यह बात। पहली बार उसे संकोच महसूस हो रहा था। अपने माता-पिता पर बहुत गुस्सा आ रहा था।

छोटी बुआ ने उसे सांत्वना दी: "तुम्हारी बातें सुनकर लोग हंसते हैं? मुझे सच बताओ, क्या वह आदमी तुम्हारे साथ अप्राकृतिक संबंध रखता है? "

"'अप्राकृतिक' का मतलब क्या है? "

सरिता के समान उसकी भी यह ही राय थी: "यदि संबंध अप्राकृतिक नहीं है, तो समस्या क्या है?"

" मेरे अंतरात्मा में भयानक दर्द है। मुझे लगता है कि आदमी मेरे और वेश्या के बीच कोई अंतर नहीं समझ रहा है। नशे में उसे बर्दाश्त किया जा सकता है। हां, नशे की हालत में उस आदमी पर दया आती है। लेकिन अगर वह नशे में नहीं है, तो मुझे ज्यादा अपमान लगता है। जानती हो, सरिता, हर बार इस शरीर के रथ पर चढ़ने समय वह मुझे कुछ-न-कुछ उपहार देता है। कभी झुमके की जोड़ी, कभी साड़ी। कभी मेरी गोद में बहुत सारे सिक्के डाल देता है। क्या मुझे इन सभी की आवश्यकता है? यदि वह आदमी घर सजाने में मेरी मदद करता, खाना बनाने में मेरी मदद करता और झुमके के बजाए मेरे लिए कुछ 'जलेबी' खरीदकर लाता, तो मुझे बहुत अधिक खुशी होती। वह आदमी मेरे शरीर का मालिक बनता है तो कम से कम एक बार ही सही वह इस शरीर की प्रशंसा तो कर सकता था। मुझे पता है, आप लोगों को मेरी पीड़ा कभी महसूस नहीं होगी। "

सरिता ने पूछा: "यदि तुम्हें कोई और दुःख है, तो बताएं; हम कुछ रास्ता खोज लेंगे। "

हर्षा ने उत्तर दिया: "आप लोग क्या उपाय करेंगे? क्या आप जानते हैं, वह आदमी निर्लज्ज है। यहां तक कि घर में सभी की उपस्थिति में भी वह मुझे अंदर ले जाता है और अंदर से दरवाजा बंद कर देता है। उस पल मैं अपने शरीर को धिक्कारने लगती हूँ। "

सरिता कुछ समय के लिए चुप बैठी रही। जैसे वह उत्तर की तलाश कर रही हो। केवल इतना कहने लगी:"मुझे देखो? मेरे माता-पिता मेरे लिए वर खोजते-खोजते परेशान हो गए हैं, लेकिन सब व्यर्थ। इस संदर्भ में तुम कितनी भाग्यशाली हो! जिसका ससुर डीएसपी हो, पति डॉक्टर हो, ऐसे कितने भाग्यशाली हैं? "

"भाग्य?" हर्षा उदास हंसी हंसने लगी "मैंने कितनी रातें दक्षिण-खिड़की के पास बिताई हैं इंतजार करते हुए, गेट के चरमराने, कालिंग बेल की आवाज या दरवाजे के कड़ों की खनखनाहट सुनते हुए, सिल्हूट दूरी से जूतों के आवाज की कल्पना करते हुए। सरिता, क्या तुमने कभी कल्पना की उस आदमी की , जो नशे के घोड़े पर सवार होकर आधी रात या सुबह-सुबह घर लौटता हो? "

सरिता ने पूछा: "क्या तुम सच कह रही हो या बढ़ा-चढ़ाकर ? कभी-कभी मुझे विश्वास नहीं होता तुम्हारी बातों पर। बीच-बीच में डाक्टरों को आपातकालीन ड्यूटी करनी पड़ती है। कभी-कभी उन्हें आधी रात को बुलाया जाता है। कभी-कभी उन्हें बाहर बहुत समय बिताना पड़ता हैं। वे रोगी को मौत के मुंह में छोड़कर नहीं आ सकते है। "

हर्षा उस आदमी के प्रति सरिता की सहानुभूति देखकर आश्चर्यचकित थी। क्या वह उसकी सहेली है या मेरी ? उसने केवल इतना ही कहा: "मैं इतनी छोटी नहीं हूं कि मुझे ये सब बातें समझ में नहीं आएगी। ठीक है, तुम मेरी सहेली नहीं हो, अगर होती तो मेरी मानसिक यातना को समझ पाती। "

सरिता से उसका विश्वास उठ गया था। लंबे समय से जीवन के प्रति भी उसका विश्वास खत्म हो गया था। इस बीच एक-दो महीने बीत गए, लेकिन वह वापस नहीं लौटना चाहती थी। धीरे-धीरे वह पूरे घर पर एक बोझ बन गई। जितना वह नहीं रोई , उससे ज्यादा उसकी मां रोई। बेटी ससुराल जाना नहीं चाहती थी। पिताजी पूरी तरह

से परेशान हो गए थे। कैलिफोर्निया से भाई ने उसे मनाने की पूरी कोशिश की। अंत में, केवल उसने ही उसका दर्द समझा। वह आदमी जरूर टार्चर करता है, अन्यथा  हर्षा क्या पागल है जो अपने ससुराल नहीं जाना चाहती है ?

जैसे ही हर्षा ने अपनी आँखें बंद की तो उसे अपने सामने भयंकर अंधेरा नजर आने लगा, मानो उसके सपने टुकड़े-टुकड़े हो गए हो,  उसके जीवन का अंत हो गया हो और आगे कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। आँखें खोलते ही चारों ओर शून्य ही शून्य। उसे किसी से भी बातें करना अच्छा नहीं लग रहा था। मां रोते-रोते छत पर चली गई। क्या मां यह चाहती है कि वह फिर से यातना के कुएं में डुबकी लगा दें ?

उसने स्वयं को सभी से पृथक कर लिया था। घर में बैठकर किताबें पढ़ने लगी। शेक्सपियर से लेकर दादाजी की पुरानी पुस्तक-पत्र सभी। वेदों और उपनिषदों को पढ़कर उसने अनेक चीजों की जिनकी उसे जानकारी नहीं थी, पढ़ने लगी। वह इन बौद्धिक गतिविधियों में अपने सारे दुःखों को भूल गई थी।

उसके ससुराल वाले पुरी आए। कितने बहाने कर हर्षा की वापसी को घर वाले रोक सकते थे ? सास ने पूछा, " और कितने महीनों तक अपनी बेटी को रखोंगे?"

"बेटे को वहाँ दिक्कत हो रही है। "

हर्षा ने जिद्द पकड़ ली कि वह और नहीं जाएंगी। अंदर से दरवाजा बंद कर बैठी रही। उसके पिता, मां और अन्य सभी ने दरवाजा खटखटाया, लेकिन उसने कुछ जवाब नहीं दिया। मँझली बहन भोपाल से आई थी।

" तुम यहाँ क्या नाटक कर रही हो? रिश्तेदार तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं, "माँ ने कहा "दरवाज़ा खोलो, हर्षा, अन्यथा मैं ज़हर खा लूंगी, सच कह रही हूँ। "

घर में शोरगुल, दरवाजे पर खटखटाहट, रोना-धोना उसके ससुराल वालों के कान में कैसे नहीं पहुंचता ?

सास ने पूछा: "क्या आपकी बेटी पहले किसी और से प्यार करती थी? पुलिस अधिकारी की पत्नी होने के कारण पूछताछ कैसे  नहीं करती ? "

"हे भगवान, मैं पहले यह जानती तो उसे बहू के रूप में बिलकुल स्वीकार नहीं करती। "

माँ ने दहलीज पर अपना सिर पीटना शुरू किया। हर्षा अपने को और संभाल नहीं पाई , इसलिए उसने दरवाजा खोल दिया। नहीं, वह अपने बारे में और नहीं सोचेंगी। भले ही, वह उस आदमी द्वारा बार-बार बलात्कार का शिकार हो जाएगी, मगर वह अपने माता-पिता को कभी दुखी नहीं करेगी।

उसने अपनी मँझली बहिन की सहायता से सूटकेस सजाया। अपनी साड़ी बदली। माँ उसे अपने ही हाथों से पखाल (चावल) खिलाना चाहती थीं, लेकिन हर्षा खा नहीं सकी, उसे बार-बार उल्टी करने का मन हो रहा था।

सास ने उससे कहा, जितनी जल्दी हो सके तैयार हो जाओ, क्योंकि उन्हें गांव के रास्ते से जाना है और देर होने से अंधेरा हो जाएगा।

हर्षा का चेहरा लाल, नथुने लाल और आँखें  लाल हो गई , फिर उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। वह गाड़ी में बैठ गई। पिताजी ने कहा: " पहुंचने के बाद फोन करना, बेटी"। हर्षा ने उनकी आँखों में आँसू की छुपी हुई बूंदें देखी। अभी तक पिताजी चिंताग्रस्त थे, कभी उनकी आँखों में आँसू नहीं आए थे, उसके ससुराल पहली बार जाते समय भी, लेकिन इस बार उनकी आँखों में आंसू आ गए थे। आखिर, वह कर भी क्या सकते थे?

“देट इज द डेस्टिनी ऑफ ए वुमेन। "

वे लोग पुरी से बाहर आए। उसका सिर घूमने लगा। रास्ता-घाट धुंधले दिखाई देने लगे। अंधेरा छाने लगा था। उसके पेट में दर्द होने लगा। उसे उल्टी जैसा लगने लगा। चारों ओर धुंधला अंधेरा। उसकी इच्छा हो रही थी, किसी को कहने की। अंधेरे में वह बिन्दु होती जा रही थी।

सास को लगा, शायद कुछ खा लिया है: "देखो, उसके साथ क्या हुआ है? क्या हुआ? क्या? उसके अंग सुन्न और बेजान होते जा रहे हैं, क्या कुछ लिया है? सच बताओ, तुमने क्या खाया है? देखो, उसने क्या किया है?"

गाड़ी बंद कर ससुर पीछे की सीट पर पहुंचे।

"गाड़ी चालू कर, चलें, चलो, आस-पास कहीं अस्पताल। "

"सच बता, तुमने क्या खाया है?" सास बार-बार पूछ रही थी। हर्षा कोई शब्द नहीं बोल पाई। दाँत भींच रहे थे। वह अंधेरे में एक बिन्दु बनकर रह गई थी। सास मुंह लटकाकर उस पर पड़ी हुई थी। उसकी आँखें बंद होती जा रही थीं। वह इसे रोक नहीं पा रही थी। सास चिल्लाने लगी:"तुमने क्या खाया है, चांडाली? मैंने तुम्हें क्यों लाया?"  कहीं पर गाड़ी रुकी। कोई उसे उठाकर ले जा रहा था,  वह अभी भी तंद्रावस्था में थी। किसी ने उसे टेबल पर सुला दिया। "हमें बताओ कि तुमने क्या खाया है?"

वह तकलीफ से जीभ उठाने का प्रयास कर रही थी, बहुत कष्ट से होंठ हिलाने की चेष्टा कर रही थी। बहुत ज़ोर लगाकर कुछ कहने की कोशिश कर रही थी।

उसके चेहरे पर झुककर किसी ने पूछा, "क्या तुमने ज़हर लिया है?"

"नहीं, आल आऊट , आ...ऊ....ट .....आऊट। "

## 6.

पता नहीं, रात के कितने बजे होंगे, कांपते कोमल पत्ते की तरह पहली वर्षा की बूंदों से देह में उठती सिहरन की तरह, सुनसान रात में झरने की कल-कल की तरह कंपन करते हुए नीरव हो गया उसका मोबाइल फोन। हर्षा को नींद नहीं आ रही थी। सुख-दुःख के सारे अनुभव टुकड़े-टुकड़े होकर भावनाओं के कोलाज बन गए। बिस्तर पर पड़े-पड़े बार-बार वह करवट बदल रही थी, शायद तभी एक मैसेज उसके मोबाइल पर आया। लेकिन इतनी रात को ? इस समय किसने  एसएमएस भेजा होगा ? उसने तकिया के नीचे से मोबाइल बाहर निकाला।

पिताजी ने उसे दिन में फोन किया था, जब वह अल्बर्टो के पास थी। भाई उसे कभी भी एसएमएस नहीं भेजता था। तब और कौन हो सकता है ? भैरवी या नवीना?

" माय स्वीट हार्ट, हाना, माय लव। सॉरी फॉर माय बिहेवियर व्हिच माइट हर्ट यू। माय डार्लिंग, आई एम सेंडिंग दिस टू टेल यू, हाऊ मच आई नीड़ यू एंड वांट यू। ए बिग किस, अल्बर्टो। "

हर्षा का शरीर पसीने से भीग गया था। उसने कमरे में लाइट लगाई। फिर से वह अल्बर्टो का मैसेज पढ़ने लगी। इतने दिनों के दौरान अल्बर्टो से पहला एसएमएस उसे मिला था। संभवत: वह एसएमएस से कुछ कहना चाहता था, जिसे वह मुंह से नहीं बोल पा रहा हो। क्या अल्बर्टो इतनी रात तक सोया नहीं ? वह बैठे-बैठे क्या कर रहा होगा? वह खुद पुस्तकों के ढेर में छिपा होगा या वह उसकी तरह सो नहीं पा रहा हो ? मानसिक द्वंद्व के कारण वह बिस्तर पर करवट बदल रहा होगा।

उस दोपहर में ऐसा क्या हुआ, जिसने उसका जीवन बदल दिया ? क्या उसने कभी सोचा था कि जिंदगी उसे ऐसे मुकाम पर लाएगी ? जैसे कोई उसके शरीर के चारों ओर एक सरीसृप की तरह, एक लता की तरह लिपट गया हो। कोई शायद  नरम हथेलियों से उसके दोनों कोमल फूलों को स्पर्श कर रहा हो। कोई उसके कान में फुसफुसा रहा हो, समय बहुत कम है, बहुत कम; देखो, चंद्रमा आकाश में सिर के ऊपर है। किसी ने उसके होंठ छुए? कोई उसके शरीर को भेद रहा हो ? क्या इस शरीर में इतना सुख है जो शरीर भेदकर आत्मा को स्पर्श कर रहा हो? वह यह जानने में सक्षम नहीं है कि इस महेंद्र वेला में किसने दिया या किसने लिया?

हर्षा दोपहर के अनुभव से सिहर उठी। अल्बर्टो के बिस्तर पर उसने संतुष्ट किया था अपना रतिक्लांत शरीर। उसे नहीं पता था कि यह सब कैसे घटित हुआ। अपने दुःखों का पिटारा खोलकर बैठी वह, जिसे उसने कभी किसी से पहले नहीं कहा था। इतने दिनों के बाद निबुज कोठरी के सारे दुख बाहर निकल गए थे। क्या कुछ आँसू दुःखों के साथ लुढ़क गए थे? तब अल्बर्टो ने उसे अपनी छाती तक क्यों उठाया? उनके शरीर की दीर्घ जड़ता अचानक टूट गई और दोनों अनजाने में एक-दूसरे में विलय हो गए।

अल्बर्टो के स्पर्श से उसकी आँख लग गई। पता नहीं, कब वह पिघलना शुरू हुई।

*“ उसने अपने आपको चारे की तरह फैला दिया था*
*झुक गए ईश्वर उस पर क्षुधार्त भंगी से*
*उसकी सारी नसों में दौड़ रही थी, एक प्रचंड क्षुधा*
*बुझाने के लिए ईश्वर की आशा*
*उसी ने 'विश्वरूप' सृष्टि का रहस्य दिखाया*
*ऊर्जा का मूल स्रोत, विज्ञान के सभी संसारिक तत्व*

*झुक गए ईश्वर उस पर प्रणाम भंगी से*
*लता गुल्म बिखरकर देखा ईडन का सेव-उद्यान*
*वासुकी की जीभ से चखी पहली कोमलता*
*होंठ से चाँटी अमृत-पात्र की आखिरी बूंद*
*शैतान भी बदल गया था उस पल*
*जिसे पाप समझ रही थी*
*अब पुण्य लगने लगा था। ”*

पूर्णगर्भा नदी की तरह हर्षा परम तृप्ति से सो रही थी। अल्बर्टो बिस्तर पर मुंह मोड़कर सो गया था। वह उसके मन के भाव समझ नहीं पा रही थी। मानो वह सब-कुछ दान देकर निर्धन हो गया हो। हर्षा को उसे छूने से डर लग रहा था। दोनों निरुत्तर थे। जैसे बात करने के लिए कुछ भी नहीं था, न ही सुख और न ही दुख की बात। जैसे पहली बार हर्षा अनुभव कर रही हो। अपने शरीर में बहते हुए झरने को। जैसे उसका जीवन पहले बार पूर्णता से भर गया हो। जबकि अल्बर्टो पास में लाश की तरह पड़ा हुआ था। धीरे-धीरे पैर संभालकर हर्षा बिस्तर से उठी। मगर अल्बर्टो वैसे ही मुंह मोड़कर पड़ा रहा। बहुत मन हो रहा था अल्बर्टो को सहलाने का। वह उसकी भावनाओं को जानना चाहती थी। यह दुर्बल आदमी उसे सबसे सुंदर दिखाई देने लगा। उसने कहा: "अल्बर्टो। "

अल्बर्टो बिस्तर से उठकर बैठ गया। उसकी दृष्टि में थी एक अद्‌भूत शून्यता। जैसे वह भीतर ही भीतर टूट रहा हो। जैसे वह भीतर से शून्य हो गया हो। कोई व्यथा उसकी आँखों से झलक रही थी। कुछ भी कहने से हर्षा को डर लग रहा था। अल्बर्टों हंसने लगा। वह हंसी उसके उदास मुंह पर अच्छी नहीं लग रही थी।

"तुम ठीक हो, अल्बर्टो? तुम दुखी नहीं हो तो?" वह इस तरह के बहुत सारे प्रश्न करना चाहती थी, मगर उसे डर लग रहा था। ऐसी घटना से किसी भी नारी का परेशान होना स्वाभाविक है। अपराध-बोध होना स्वाभाविक है। उसका अस्तित्व टूटकर टुकड़े-टुकड़े होना स्वाभाविक है। सब-कुछ हर्षा ने खोया था, मगर हो रहा था विपरीत। अल्बर्टो क्या अपने संयम खोने से दुखी था ? क्या यह बौद्ध अपने मन और आत्मा से अपने पाप-आचरण के लिए टूट गया है ? निवृत्ति मार्ग का अनुसरण करने वाला क्या यह आदमी प्रवृत्ति मार्ग की ओर कदम बढ़ाने के लिए दुखी है ? नहीं, ऐसे प्रश्न उठाने का यह समय नहीं है। उसे अकेले छोड़ देना ही बेहतर है:

"मैं जा रही हूँ , अल्बर्टो", हर्षा ने कहा।

नींद से उठते हुए अल्बर्टो कहने लगा: "बाय"

वह उसे छोडने के लिए बाहर तक भी नहीं आया। छाती में अतृप्त भावना के साथ वह बाहर निकली।

हर्षा को लगा कि जैसे कोई संन्यासी पथ-भ्रष्ट होकर दुःख में टूट गया हो, ऐसी स्थिति में वह उसे छोडकर आ गई। जो कुछ भी हुआ था, वह बिल्कुल पूर्व निर्धारित नहीं था, बल्कि केवल एक आकस्मिकता थी। मानो एक सुप्त कामना बहुत दिनों से इस मौके का इंतजार कर रही हो। एक पल के लिए इंद्रजाल के भूलभुलैया की तरह एक मायावी दुनिया में दोनों हाथ पकड़कर प्रवेश कर रहे हो। अल्बर्टो 'निर्वाण' की बात भूल गया था। हर्षा भी अपनी हिम-जड़ता को भूल गई। भूल गई अपनी पीड़ा।

फिर भी, वह नहीं जानती थी, क्यों वह अपराध-भावना से कुंठित हो गई है। और उस भयावह पल में उसे वह आदमी याद आने लगा। यद्‌यपि उसके और अल्बर्टो के बीच में स्वर्ग-पाताल का अंतर था। कभी भी उस आदमी ने उसे प्यार से अपने सीने से नहीं लगाया था; कभी सहलाते हुए दिलासा नहीं दिया था: "मैं हूँ, मैं तुम्हारे साथ हूं। " उसने उसके होंठों की कोमल पंखुड़ियों को छुआ तक नहीं। अल्बर्टो से उसे, जो कुछ भी क्षणिक सुख प्राप्त हुआ, वह उसे सारे जीवन कभी नहीं मिलेगा। अब कोई बात नहीं, अगर वह अहिल्या की तरह पत्थर भी हो जाए।

अल्बर्टो का पीला उदास चेहरा, उसकी सार-शून्य आंखें हर्षा का पीछा नहीं छोड़ रही थी। इससे तो प्राच्य-पाश्चात्य दर्शन के बारे में उनके तर्क, उनका प्रश्नोत्तरी खेल, दो गोलार्धों में सांस्कृतिक विभेद को लेकर उनके मतभेद की लड़ाई ज्यादा बेहतर थी। आखिरकार उसे लंबे समय के बाद दोस्त मिल गया था।

वह अपने कमरे में लौट आई। मगर अल्बर्टो का कोई फोन नहीं आया। उसे उम्मीद थी कि वह उसे शाम को फोन करेगा। मगर नहीं। क्या कहीं वह अपने अंतरंग दोस्त को खो तो नहीं देगी ? उसे डर लगने लगा। अगली

बार जब वह अल्बर्टो से मिलेगी तो वह उसे बता देगी: "चलो भूल जाओ, जो कुछ हुआ। मैं तुम्हारा दुख समझ सकती हूँ, अल्बर्टो, पाप क्या शरीर में होता है? क्या यह शरीर की प्रवृति है? शरीर तो केवल एक नौकर है। मन उसे हमेशा चलाता है। और मन क्या है? मुझे बताएं कि मन से ज्यादा और कौन लंपट है ? मन ही लंपट मुनि है। "

कई बार अल्बर्टो को फोन करने की उसकी इच्छा हो रही थी। वह कहना चाहती थी कि बेहतर होगा कि जीवन को दर्शन के ढांचे में ढालने की तुलना में जीवन से दर्शन का आवरण हटाकर सामान्य तरीके से आगे बढ़ने दिया जाए।

"हे अल्बर्टो! ब्रह्मांड में मूल-शक्ति काम-शक्ति को मानने वाला व्यक्ति क्या शरीर से नफरत करेगा ? एक बार तुम्हीं ने प्रश्नोत्तरी के खेल में उत्तर दिया था कि ब्रह्मांड का मूल-उत्स यौन ऊर्जा है, फिर आज की इस घटना से आप दुखी क्यों हैं? क्यों तुम्हारी आँखों में कंगाल होने जैसी शून्यता दिखाई दे रही है?

अल्बर्टो! क्या तुम्हें लगता है कि ये सारी चीजें तुम्हारे 'साधना के रास्ते की बाधा हैं? क्या तुम नहीं जानते कि ज्ञान की संपूर्णता, केवल 'विद्या' या केवल 'अविद्या' से संभव नहीं है। सत्य दोनों 'विद्या' और 'अविद्या' के सामंजस्य से प्राप्त होता है। याद रखें, तुम्हें प्रवृति से दूर नहीं रहना है, बल्कि प्रवृति से होते हुए निवृत्ति मार्ग की ओर चलना हैं। शरीर और मन के सारे दरवाजे और खिड़कियां खुली रहनी चाहिए। प्रचुर आलोक, उत्ताप और जल से भर जाने दो तुम्हारा शरीर और मन। देखोगे उसके बाद तुम्हें कोई झिझक नहीं होगी; कोई भूख नहीं, कोई उम्मीद नहीं होगी और न ही कोई लालसा। मेरी छोटी बात मन पर मत लगाना। "

हर्षा को अचानक कहानी याद आ गई, पता नहीं कहाँ से, जिसे उसने अपने बचपन में सुना था। वह यह कहानी अल्बर्टो को सुनाकर उसकी प्रतिक्रिया देखना चाह रही थी।

एक बार एक गुरु और उसका शिष्य लंबा रास्ता तय कर गांव पहुंचे। वहाँ पहुँचते-पहुँचते थक गए थे। उन दोनों को बहुत भूख लग रही थी, मगर देर से पहुंचने के कारण उन्हें खाने के लिए कुछ नहीं मिला। आखिरकार एक गृहस्थ ने उनसे कहा कि अगर मांस खाने में आपको कोई आपत्ति नहीं है, तो आपका स्वागत है, क्योंकि मेरे घर में मांस के सिवाय कुछ नहीं है। गुरु ने निमंत्रण स्वीकार करते हुए मांस खाया, मगर शिष्य ने बीमारी का बहाना किया और बिना भोजन रह गया। अगले दिन वे एक और जगह के लिए रवाना हुए। उस घटना के बाद शिष्य की मानसिक शांति खत्म हो गई। वह अचानक इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उसके गुरु बाहर से जैसे दिखाई देते हैं, वास्तव में वैसे नहीं हैं। गुरु के प्रति उसकी भक्ति कम होने लगी। धीरे-धीरे उसके मन में गुरु के प्रति घृणा पैदा हो गई और वह उनके साथ रहना पसंद नहीं करता था। एक दिन उसने गुरु के सामने अपनी इच्छा व्यक्त की। गुरु ने इसका कारण पूछा कि उसने उस दिन का घटना-प्रसंग सुना दिया कि किस प्रकार उसका मोहभंग हुआ था। उसे सुनने के बाद गुरु हँसे और कहने लगे, "मैं उसी दिन पूरी तरह से भूल गया था, जिस दिन मैंने मांस खाया था, मगर तुम इसे अभी तक नहीं भूले हो, भले ही, तुमने उसे स्पर्श नहीं किया। बताओ, फिर तुम अपने मन को 'साधना' तक कैसे साध सकते हो?

हो सकता है अल्बर्टो ने ऐसा विचार नहीं किया होगा, हर्षा ने अनुमान लगाया। शायद वह अपनी खूबसूरत पत्नी क्रिस्टिना के साथ किए गए विश्वासघात से परेशान हो गया हो। मगर एक दिन प्रश्नोत्तरी खेल के दौरान हर्षा विवाहेतर संबंधों पर उसकी राय जानना चाहती थी; अल्बर्टो ने कहा था कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है, अगर किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचता है तो।

पता नहीं क्यों, शुरू में हर्षा अल्बर्टो के इस व्यवहार पर अपमानित अनुभव करने लगी थी। ऐसा होगा, यह उसकी कल्पना से परे था। जो कुछ घटा उसे सहज स्वाभाविक मानकर स्वीकार किया जा सकता था। क्या

जरूरत थी यह नाटक करने की ? उस आदमी ने कई बार उसे अपमानित किया था, अल्बर्टो ने भी उसके प्रति अपनी मनोभावनाओं से घृणा व्यक्त की थी।

अल्बर्टो उसे क्या समझ रहा है, जानने की उत्सुकता उसके मन को दुखी कर रही थी, उसी वक्त उसका एसएमएस आया: " माय स्वीट हार्ट, हाना, माय लव। सॉरी फॉर माय बिहेवियर व्हिच माइट हर्ट यू। माय डार्लिंग, आई एम सेंडिंग दिस टू टेल यू, हाऊ मच आई नीड़ यू एंड वांट यू। "

हर्षा ने उस एसएमएस का जवाब नहीं दिया। हालांकि वह जानती थी कि अल्बर्टो भयानक मानसिक दबाव से गुजर रहा है। फिर से मोबाइल बजने लगा और उस तरफ से अल्बर्टो पूछने लगा: "तुमने मेरे एसएमएस का उत्तर क्यों नहीं दिया? क्या तुम सो गई थी? "

“मगर बदले में वह क्या जवाब देती? नहीं, मैं तुम्हारे व्यवहार से दुखी नहीं हूं ? या तुम्हारे व्यवहार पर मैं आश्चर्यचकित हूं? क्या इस तरह के जवाब का कुछ अर्थ हैं? मगर इस तरह की घटनाओं से आप जितना दूर रहेंगे, उतना ही बेहतर है। कुछ घंटों पहले अल्बर्टो वासना के दलदल में कूद पड़ा था। वही वासना अल्बर्टो के शून्य दृष्टि से उड़ गई थी बहुत समय से। भूल से वह चला गया था अंधेरे, घने जंगल के रास्ते में, मगर फिर से उसे अपने परिचित रास्ते पर लौटना पड़ेगा। हर्षा नहीं समझ पाई यह पहेली। आखिर, उसकी हर्षा से क्या उम्मीद थी? क्या उसे सचमुच पश्चाताप हो रहा है अपने किए पर या वह उसे खोने के डर से परेशान है? हर्षा ने मैसेज भेजा: "देट ओके। डेफ़िनेटली आई विल नॉट। " उसने मैसेज भेजने के बाद मोबाइल बंद कर दिया। नहीं तो सारी रात सवाल पूछकर वह परेशान करेगा।

वह देर रात तक नहीं सो पाई। इसलिए अगली सुबह उठने में उसे देर हुई। अगर कोई दरवाजे पर नहीं खटखटाता तो वह दोपहर तक सोती रहती। पड़ोसी घर की छोटी बेटी 'नवमी पूजा' की 'प्रसाद' लेकर बाहर खड़ी थी। पूड़ी, हलवा, मिठाई, नमकीन और तरकारी हर्षा को पसंद नहीं थी। पास घर की राजस्थानी महिला ने उसे नवमी के दिन कन्या-पूजा के बारे में बताया था। एक दिन पहले उसने आस-पड़ोस की छोटी लड़कियों को खाने पर बुलाया था, और हर्षा को उसकी सहायता करने के लिए कहा था। मगर हर्षा पूरी तरह से भूल गई और दिन में दस बजे तक सोती रही। वह स्त्री क्या सोच रही होगी उसके बारे में ? हर्षा जानबूझकर उसकी मदद करने नहीं आई? पड़ोसी फ्लैटों के छोटे बच्चों का कोलाहल होने लगा, शायद वे पूजा में भाग लेकर अपने घर वापस लौट रहे होंगे। हर्षा ने उस लड़की से पूछा: "क्या पूजा खत्म हो गई है?" उस लड़की ने अपना सिर हिलाकर हामी भरी और दौड़कर वहाँ से चली गई।

वह अभी तक नहाई नहीं थी। वह उसके घर कैसे चेहरा दिखा सकती थी ? उसे फिर से अपनी मां की याद आ गई और वह उदास हो गई। यदि वास्तव में माँ का हाथ जल गया होगा तो उसे कितना दुख हो रहा होगा। क्या उसे अपनी मां की देखभाल नहीं करनी चाहिए थी ? कल की घटना से वह इतनी परेशान थीं कि वह अपनी मां को फोन करना भूल गई। माँ के साथ एक बार बात करना ठीक रहेगा, सोचकर उसने मोबाइल स्विच ऑन किया। जब वह ब्रश, पेस्ट और कपड़े लेकर बाथरूम में जाने वाली थी, तो एक मैसेज आया:"मैं आ रहा हूं। अल्बर्टो। "

हर्षा चिंतित हो गई, आज ही सब-कुछ उलट-पुलट होना था। वह 'नवमी' के दिन दस बजे उठ रही है। वह एक छोटी जिम्मेदारी भी नहीं ले सकी , पड़ौसन क्या सोचती होगी ? फिर अल्बर्टो को आज ही आना था ? वह पहले कभी नहीं आया था। उसकी सहेलियाँ नवीना और भैरवी यहाँ नहीं है, तभी शायद वह यहाँ आना चाह रहा है।

अल्बर्टो ने कहा था, "हम यूरोपीयन किसी भी व्यक्ति के भीतर नहीं झाँकते हैं। हर किसी को अपनी गोपनीयता की रक्षा करने का अधिकार है। मगर तुम्हारे देश के लोग बेकार ही दूसरों के मामलों में टांग अड़ाते हैं। मेरी बात को अन्यथा नहीं लें, मगर क्या यह सच नहीं है? "

वही अल्बर्टो बिना किसी आमंत्रण के उसके घर आ रहा है। ?

जल्दी से हर्षा ने अपने बिस्तर व्यवस्थित कर दिए। नवीना और भैरवी के कागज-पत्र, कपड़े भी। नहीं, वह अल्बर्टो को मना नहीं कर पाएगी। कल उसने पूरा दिन उसके घर में बिताया था। किस मुंह से वह उसे अपने घर आने से इंकार कर सकती है ? घर सजाकर वह बाथरूम में जल्दी से घुस गई। कम से कम अल्बर्टो के पहुँचने से पहले उसे नहाने-धोने के काम पूरे कर देने चाहिए।

जब हर्षा स्नान कर रही थी , तो मोबाइल फिर से बज उठा। फिर किसने उसे फोन किया ? मोबाइल में रिंग होती रही और फिर बंद हो गया ; उसने फोन नहीं उठाया। बाथरूम से निकालकर जब वह अपने बाल सुखाने लगी, तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया। अल्बर्टो आ गया है? सिर पर तौलिया लपेटकर उसने दरवाजा खोला।

"हे, तुम सुबह-सुबह यहाँ ?सब-कुछ ठीक है? भीतर आओ। " उसने उसे घर में आमंत्रित किया, "बैठो, मैंने अभी स्नान किया है। मुझे बहुत देर हो गई, आज उठते-उठते। "

अल्बर्टो ने चौकी खींच ली और उस पर बैठ गया। हर्षा ने कहा: "हमारा घर बहुत छोटा है। "

"नहीं, नहीं, यह ठीक है, " अल्बर्टो ने जवाब दिया।

अपने सिर से तौलिया खोलकर हर्षा ने बालकनी में सूखा दिया। अपने गीले बालों में कंघी घुमाते हुए वह पूछने लगी:"क्या तुम्हारे पास आज पूछने के लिए बहुत सारे सवाल हैं?"

"क्या तुम्हें लगता है कि मैं केवल सवाल पूछने के लिए तुम्हारे पास आऊँगा, अन्यथा नहीं? तुमने कल संक्षिप्त मैसेज भेजकर अपना मोबाइल बंद कर दिया था, इसलिए मैं चिंतित था। क्या तुम मुझसे नाराज हो, अब भी? "

"मैं तुमसे क्यों नाराज होऊंगी? लेकिन सही कह रही हूँ, मैं तुम्हारी मानसिकता नहीं समझ पाई। "

अल्बर्टो उसकी सारी बातें सुनने के बाद चुप रहा। हर्षा बालकनी के पास खड़ी होकर अपने बाल संवार रही थी। दोनों के भीतर चुप्पी प्रबल थी। पीठ के पीछे बाल लहराती हुई वह बाथरूम में अपने हाथ धोने चली गई। अलमारी खोलकर उसने देवताओं की तस्वीरों के सामने धूप जलाया। वह अल्बर्टो की उपस्थिति के कारण थोड़ा अजीब महसूस कर रही थी। अगर किसी ने इस घर में इस गोरे आदमी को आते देख लिया तो ? नहीं, दिल्ली इतनी बड़ी जगह थी कि किसी के पास किसी के संबंध में हस्तक्षेप करने का कोई समय नहीं है। चिंता का एकमात्र विषय है, उसकी गोरी चमड़ी, जो आँखों को आकर्षित करती है। पड़ोसन की उत्सुकता बढ़ सकती है।

धूपदानी में अगरबत्ती लगाने के बाद, जब वह भैरवी की चौकी पर बैठी तो अल्बर्टो ने कहा: "वाह! इतनी प्यारी सुगंध। क्या तुम्हारी पूजा खत्म हो गई है?"

हर्षा ने सिर हिलाया।

"क्या मैं तुम्हारे भगवान को देख सकता हूँ?"

"भगवान केवल मेरे ही नहीं हैं, वे सभी के हैं। "

हर्षा ने हँसते हुए अलमारी खोली और कहा, “आओ, अल्बर्टो, देखो। ”

अलमारी के सामने खड़ा होकर पूछने लगा, "क्या तुम सभी की पूजा करती हो ?"

"हां, हमें सभी की पूजा करनी होती है। "

"क्या तुम मुझे अपने देवताओं का परिचय नहीं कराओगी ?"

वह अल्बर्टो की बात सुनकर हँसने लगी। "क्या ये इंसान हैं कि मैं उन्हें तुमसे मिलवाऊंगी? ठीक है, मैं बताती हूँ। ये जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा हैं; यह काली है, उसके पास में दुर्गा हैं, उसके बाद सरस्वती, उसके पास गणेश है। यहां शिव और पार्वती हैं। "

"क्या तुम एक ही समय में उनकी पूजा करती हो?"

"हां, तुमने इसे अभी देखा नहीं? हम तीन सहेलियाँ यहाँ रह रही हैं। हमने स्वयं अपनी आस्था के अनुसार अलमारियों में देवी-देवताओं की तस्वीरें रखी है। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि वह केवल अपने देवताओं की पूजा करेगी, दूसरों की नहीं। हम सभी जानते हैं कि भगवान एक है, मगर हमने उन्हें विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। "

"और, वह शिव होने चाहिए, " अल्बर्टो ने अपनी उंगली से इशारा करते हुए कहा।

"मैंने तुम्हें शिव के बारे में एक अच्छी कहानी सुनाई थी, क्या याद है?"

हर्षा मुस्कुराई: "तो क्या तुम्हें याद है? ठीक है, मुझे बताओ कि मैं तुम्हारे लिए कौनसा नाश्ता तैयार करूंगी? सुबह जल्दी ही तुम बाहर निकल गए हो, कुछ भी नहीं खाया होगा ? "

" किसने कहा? मैंने सुबह चॉकलेट केक खाया है। "

"सुबह-सुबह चॉकलेट केक? इसलिए तुम्हारे दांतों की यह स्थिति है ? "

अपने पड़ोसी द्वारा दी गई प्रसाद की पूरी थाली को उसके सामने हर्षा ने रख दिया।

"अल्बर्टो, चलो इसे मिलकर खा लेते हैं। ऐसे भी मैं इतना नहीं खा पाऊँगी। " उसने प्रसाद को दो अलग-अलग प्लेटों में बाँट दिया।

अल्बर्टो ने पूछा: "क्या यह ‘अर्ध-नारीश्वर’ की मूर्ति है?"

"तुम इस शब्द के बारे में कैसे जानते हो ?"

"मुझे पता है कि तुम शैव हो और समुद्र-मंथन की कहानी सुनने के बाद मैंने उनके बारे में अध्ययन किया। "

हर्षा को अल्बर्टो का यह गुण बहुत अच्छा लगता है। सचमुच! इसी ज्ञान-भंडार के प्रेम में पड़कर वह धीरे-धीरे उसके नजदीक हो गई। हर्षा ने कहा: "तुम गलत कह रहे हो, अल्बर्टो यह मूर्ति 'अर्ध-नारीश्वर’ की नहीं है, मगर यह शिव-पार्वती की युगल मूर्ति है। क्या तुम जानते हो कि अर्ध-नारीश्वर’ क्या है? आधा पुरुष और आधी नारी के रूप का प्रतीक है। शिव है पुरूष का प्रतीक और पार्वती प्रकृति की। शिव और शक्ति के संयोग से इस ब्रह्मांड से कीट तक की सृष्टि हुई है। "

"फिर, क्या यह प्रकृति नारी है?" अल्बर्टो ने पूछा।

"हां, तुम सही अनुमान लगा रहे हो, प्रकृति नारी है। "

"इसका मतलब है, तुम द्वैतवाद के दर्शन में विश्वास करती हो? मगर शंकराचार्य अद्वैतवादी थे। मेरा मानना है कि वह सही थे, "अल्बर्टो ने बहस करना शुरू कर दिया।

"ये अलग-अलग मत हैं। भारत में वैदिक काल से विभिन्न मत प्रचलित हैं। किसी ने ईश्वर को एक माना तो किसी ने पुरुष और स्त्री दोनों के अस्तित्व की कल्पना की। कौनसा मत सही है, कौनसा मत गलत है, यह सोचना अर्थहीन है। उपनिषद में कहा गया है- "मायाम् तू प्रकृति विद्यात, मायिनम तू महेश्वरम्" - जिसका अर्थ है कि 'माया' कुछ भी नहीं है बल्कि 'प्रकृति' है और इस 'माया' का निर्माता है 'महेश्वर'। क्या यह एक ही अस्तित्व का मतलब नहीं है? सुनो, अल्बर्टो, इस बारे में एक सुंदर कहानी आती है। "

"मुझे वह कहानी सुनाओ, हाना?"

"निश्चित रूप से। सृष्टि के शुरुआत की कहानी। महाशक्ति योगमाया इधर-उधर अकेली घूम रही थी। बिना किसी साथी के। धीरे-धीरे उसकी निसंगता असहनीय हो गई थी। अपनी निसंगता दूर करने के लिए उसने अपने शरीर से 'आदिपुरुष' ब्रह्मा  पैदा किया और उससे अनुरोध किया कि वह उसके अकेलेपन को दूर करे। मगर ब्रह्मा ने जन्मदात्री महिला से शादी कैसे की जा सकती है, का एक उचित प्रश्न उठाया। इससे असंतुष्ट होकर प्रकृति-स्वरूपिणी  योगमाया ने उसे जलाकर राख कर दिया। इसके बाद उसने विष्णु को बनाया और  विष्णु से वही अनुरोध दोहराया। जब उन्होंने मना कर दिया, तो उसे भी जला दिया। दिन-ब-दिन देवी का अकेलापन असहनीय होता जा रहा था। इस बार उसने बनाया अपने स्वयं के शरीर से महेश्वर को। महेश्वर के सामने अपनी इच्छा व्यक्त करने पर महान योगी महेश्वर उनकी मंशा समझ गए और न्याय-अन्याय के मानदंडों का उल्लंघन कर प्रकृति और पुरूष की सृष्टि-प्रक्रिया में आवश्यकता को प्राथमिकता देते हुए प्रकृति को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया और वहां से सम्पूर्ण सृष्टि पैदा हुई। क्योंकि प्रकृति की दृष्टि में, काम सखा है, काम भ्राता है, काम देव महेश्वर है।

खाना खाते हुए  अल्बर्टो ने पूछा: " यह क्या मिथक है?"
"हां, सभी कहानियां पौराणिक कथाओं में सुनाई जाती हैं मगर, अल्बर्टो, तुम इन मिथकों को कवि की कोरी कल्पना या अवैज्ञानिक कहकर टाल नहीं सकते। तुम तो बहुत अच्छी तरह जानते हो कि विश्व के सारे दर्शनों में भारतीय-दर्शन अपनी तार्किकता के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।
अल्बर्टो हँसने लगा: "तुम बहुत भावुक हो रही हो, हाना। "
"ऐसा बात नहीं है, अल्बर्टो,  तुम्हें उपनिषदों में निश्चित रूप से कपिल-मुनि के प्रकृति-पुरूष की कहानी मिलेंगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रकृति निर्जीव है और पुरुष चेतन है और उनके मिलन से सारी सृष्टि संभव हो सकती है। इस दर्शन को 'सत्कार्यवाद' के नाम से जाना जाता है। अल्बर्टो, हम भौतिक विज्ञान से जानते हैं कि दो शक्तियां हैं: एक पॉज़िटिव और दूसरी नेगेटिव। नेगेटिव आवेश को भौतिक विज्ञान में हम इलेक्ट्रॉन कहते है, जो अस्थिर और क्रियाशील है। पॉज़िटिव आवेश को प्रोटॉन कहा जाता है, जो स्थिर है। उनके संयोजन से एक परमाणु बनता है, जिससे जगत की सृष्टि होती है। इस जगत की प्रत्येक वस्तु में, प्राणी में, जंगम में हमें एक ही थ्योरी मिलेगी। चाहे पूरी ग्रह प्रणाली की बात हो या संपूर्ण जीवित विश्व। "

"ओह, यू आर वंडरफूल माय गर्ल, देट व्हाय आई एडोर यू। "

उसकी बात को अनसुनी करते हुए हर्षा ने पूछा: "क्या चाय पीओगे ?"  दोनों हाथों में जूठी प्लेटें लेकर वह रसोईघर में चली गई थी। अल्बर्टो ने उसका पीछा किया: "मुझे लगता है कि तुम अभी भी मुझसे नाराज हो। "

"नहीं, मैं क्यों नाराज होउंगी ?"

"प्लीज फोरगिव मी, माय स्वीट हार्ट !" अल्बर्टो ने अपना सिर थोड़ा नीचे झुकाया।

"ऐसा मत कहो, अल्बर्टो। मुझे बुरा लगेगा। मैं तुमसे प्यार करती हूं और तुम्हारा सम्मान करती हूं। यदि तुम एक अपराधी की तरह मेरे सामने सिर झुकाकर खडे रहोगे तो मुझे बुरा लगेगा। मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है कि मैं तुम्हारी आँखों को नहीं पढ़ सकी, अन्यथा इसमें नाराज़ होने की क्या बात है।
"मैं तुम को सब-कुछ बताऊंगा, निश्चित रूप से मैं तुम को बताऊंगा, "अल्बर्टो ने अपनी असहायता व्यक्त की।

हर्षो ने दोहराया: "तुमने मुझे बताया नहीं कि चाय पीओगे या नहीं?"

"नहीं, मैं नहीं पीऊँगा। "

हर्षा एक कप चाय जल्दी तैयार कर खाट पर बैठ गई। "सुनो, अल्बर्टो, सृष्टि-तत्व पर वेद में एक और कहानी है। कामदेव नामक ऋषि ने इसे मिथुन तत्व के रूप में प्रतिपादित किया है। सृष्टि-देवता ने पहले एक गाय बनाई और उसके साथ संभोग किया, फिर मवेशी वर्ग पैदा हो गया था। पितामह के उत्पीड़न से मुक्त होने के लिए गाय अलग-अलग रूप धारण करने लगी। जिससे कई चीजें बनी। गाय को प्रकृति की और आदिकर्ता को पुरूष की परिभाषा दी गई।

"चीन में युन्गिविन की ऐसी ही अवधारणा है। तब तुम मेरी प्रकृति हो और मैं तुम्हारा पुरूष हूं? "अल्बर्टो ने मुस्कुराते हुए पूछा।

वास्तव में, अल्बर्टो नहीं समझ पाया। वह उसके साथ शास्त्रों पर आलोचना करेगी। कान में प्रेम के मंत्रों को पढ़ने के साथ-साथ जब वह शरीर के प्राकृतिक आवेगों की संतुष्टि करने वाले ऋषि की तरह पूरी तरह से नाराज हो जाएगा, जिसका ध्यान-भंग हो गया हो। यह क्या था ? प्यार की अभिव्यक्ति निश्चित रूप से शरीर में उत्पन्न होती है तो क्या शरीर के बिना प्रेम का कोई अर्थ है? भले ही, उस आदमी के साथ उसके शारीरिक संबंध थे, मगर प्यार नहीं। फिर भी देखो कैसे निरर्थक था।

अल्बर्टो ने कहा: "मुझे पता है कि कल की घटना के बाद तुम थोडी परेशान हो। नहीं, मैं वास्तव में सेक्स को पाप नहीं मानता हूं। ऐसा नहीं है कि मैंने सेक्स नहीं किया है। यदि मैं ऐसा कहता हूं तो गलत कहता हूँ। मैं नैष्ठिक पवित्र नहीं हूँ। यदि तुम मुझे ऐसा ऋषि मुनि समझती हो तो मुझे दुख लगेगा। मगर मैं सेक्स के प्रति थोड़ा उदासीन हूँ। बल्कि तुम कृपण कह सकती हो। ”

आश्चर्य से हर्षा ने उसकी तरफ देखा। अल्बर्टो के कहने का क्या मतलब था? उसने कहा: "आई लव वुमेन। आई एम नॉट एन इम्पोटेंट, बट आई मेक लव विद पार्सीमनी। "

हर्षा की चुप्पी देखकर उसने कहा, " मैं तुम्हें और खोलकर कह देता हूँ। मुझे नहीं लगता कि एक पुरुष और एक महिला का मिलन पाप है, और न ही मुझे लगता है कि नारी नरक का द्वार है। यदि किसी को हानि नहीं पहुँचती है, तो विवाहेतर संबंध गलत नहीं है। शायद मैं भगवान बुद्ध के निवृत्ति तत्व के कारण सेक्स के प्रति थोड़ा उदासीन हूँ। "

मगर जब उसने अल्बर्टो की तरफ देखा तो उसे लगा कि कुछ अनकहा उसकी छाती में रह गया था। हर्षा ने कहा: "छोड़ो, अब आलोचना यहाँ बंद करो। जीवन में कई आकस्मिकताएँ घटती हैं, कल की घटना ऐसा ही मान लो। "

"नहीं, हाना, मैं सचमुच में तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। नहीं, मैं बिल्कुल दुखी नहीं हूँ और न ही विचलित हूं, हमारे शारीरिक संबंध स्थापित होने के कारण। अगर कल नहीं, तो निश्चित रूप से किसी दूसरे दिन ऐसा होता।

प्यार में सम्पूर्ण समर्पण की भावना होती है। नाखून बढ़ने की तरह, मेरे मन में तुम्हारे प्रति कामना पैदा हो रही है। इच्छा हो रही है तुम्हारे बहुत करीब जाने की, क्योंकि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। मगर मेरी समस्या कहीं और है। समस्या उस क्षण की नहीं है, मगर बाद वाले समय की है। मैं शक्तिहीन हो जाता हूँ, मुझे भयंकर हैंगओवर हो जाता है, पता नहीं क्यों ?"

"यह स्वाभाविक है, मगर अल्बर्टो, उस दिन मैंने तुम्हारी आँखों में थकावट की जगह शून्यता और कंगालपन देखा था। "

दोनों ही चुपचाप कुछ समय के लिए बैठे हुए थे। उस समय उन्हें सड़क पर गाड़ियों की आवाज, छोटे-छोटे बच्चों की हंसने-रोने की आवाज, दीवारों पर कील ठोकने की आवाज और प्रेशर कुकर की सीटी-कुछ भी सुनाई नहीं दे रही थी, जबकि ये आवाजें पहले से ही आ रही थी। दोनों ही इस शब्द-ब्रह्मांड में दो कठपुतलियों की तरह बैठे हुए थे। अल्बर्टो ने कुछ समय बाद चुप्पी तोड़ी।

"जब मैं छोटा बच्चा था। चार-पांच साल का था। मेरे साथ एक भयानक हादसा हुआ। हमारे घर के पास एक आधा पागल आदमी रहा करता था, जिसे तुम क्रेज़ी कह सकते हो। उसने मुझे रास्ते से अपहरण कर अपने घर में बंद कर दिया। उसने अपने बंद घर में कई दिनों तक मेरा यौन शोषण किया। एक दिन मौका देखकर मैं उसके घर से भाग गया, सीधे अपने घर की तरफ। मैं उसकी यातना से गंभीर रूप से घायल हो गया था। घाव सूखने में कई दिन लगे। बेशक, मैंने उस व्यक्ति को अपने अपराध के लिए क्षमा कर दिया। मगर मैं आसानी से किसी पर भरोसा नहीं कर पाता। उस घटना के बाद मैं हमेशा संदेह की दृष्टि से हर किसी की तरफ देखता हूँ। मुझे लगता है, बचपन का यह डर अभी भी मुझमें समाया हुआ है और मुझे समय-असमय डराता है। "

ऐसा लग रहा था जैसे घनघोर बादल बरसने लगे हो और बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही हो।

"क्या मैं तुम्हें एक बात पूछूँ, हाना? मुझे आशा है कि तुम उसे बुरा नहीं मानोगी। "

"ठीक है, हमारे बीच क्या छुपा हुआ है, जिसके लिए तुम्हें मेरी अनुमति की आवश्यकता हो ?"

अल्बर्टो ने अचानक अद्भुत प्रश्न उठाया। तुम्हारा वैवाहिक जीवन तो बिल्कुल सुखी नहीं था। जितने दिन तुम उस आदमी के साथ रही, उसने तुम्हारा यौन-उत्पीड़न किया था। क्या तुम उस दर्दनाक अतीत को भूलकर जीवन की सुखद अनुभूति प्राप्त कर सकती हो? शायद मैं इस प्रश्न को ठीक से नहीं रख पा रहा हूं, मगर मुझे लगता है कि तुम पहले की तरह दुखी नहीं हो।

वह अल्बर्टो को यह कैसे समझा सकती है? क्या सब-कुछ तर्क द्वारा समझाया जा सकता है?

*शोवेल लेकर कोई लगातार वार करता जा रहा था।*
*चट्टान के नीचे पानी की खोज में*
*पसीने से तर-बतर आदमी का कांपता शरीर*
*फिर भी जल-स्रोत का कोई ठिकाना नहीं*
*पत्थर निर्विकार*
*वार पर वार।*
*प्रत्येक वार पर फूलती सांसें*
*मजबूत मांसपेशियों वाला*

*काकुस्थ पुरुष*
*पानी की खोज में*

*बार-बार व्यर्थ होता उसका मनोरथ*
*इतने दिनों के निर्विकार पत्थर*
*शोवेल के आघात से घायल, जर्जरित*
*दाँत भींचते करते सहन प्रत्येक आघात ,*
*मगर इस बार शोवेल के आघात से*
*सिहरित हो उठा पत्थर*
*कांपा शरीर धन्वाकार ,*
*बारिश की पहली बूंद*
*समुद्र का पहला दर्शन*
*किशोर गाल का चुंबन*
*या आसन्न मृत्यु की कल्पना*
*शरीर पर स्तंभित रोमकूप*
*एक अदृश्य स्पर्श से।*
*उस सिहरन में*
*प्रबल आकांक्षाएं*
*किसी भी पल गिरता जल-प्रपात*
*यहां देखो, यहां देखो*
*पत्थर फुसफुसा रहा था:*
*माटी के बंधन से मुझे मुक्त कर दो*
*देखते-देखते पानी खोदने वाला शोवेल*
*खुद पानी बन गया*
*चट्टान की सतह पर गिर गया*
*चारों ओर कल-कल, छल-छल शब्द*
*'पूर्णमिदम' मंत्रोच्चारण के साथ*
*देखते-देखते डूब गया*
*पानी के भीतर,*
*इतने दिनों का निर्विकार पत्थर*

7

अल्बर्टो ने हर्षा के हाथ को अपनी मुट्ठी में लेते हुए कहने लगा: "हम सब-कुछ भूल जाएंगे, सोचकर तो दिल्ली छोड़कर यहाँ आए थे, हाना, मगर ऐसा लग रहा है जैसे दुख हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा। फिर स्वर्ग की दहलीज पर बैठकर हमें दु: ख की बात क्यों करनी चाहिए, ? क्या तुमने फ्रीडा, मैक्सिकन कलाकार का नाम सुना है? वह तुम्हारी तरह विषाद की देवी थी। उसके जीवन में दर्द के सिवाय कुछ भी नहीं था। फिर भी वह अपने जीवन की हर क्षण को

अपने दिल से उपभोग करना चाहती थी। क्या वह उन सभी चीजों को संभाल कर रखती थी जिसे दुनिया में  दुःख कहा जाता है? "

"अल्बर्टो, मैं भी दुखों से परे जाना चाहती हूं, उन सभी रातों के बुरे सपने को भूलना चाहती हूँ। मगर मैं तो कलाकार नहीं हूँ, जो तूलिका से रंग भरकर अपने वेदना-बोध को चित्रित कर दूँ। "

ऐसा लगा रहा था कि वे दोनों ठंड में कांप रहे थे। आपस में एक-दूसरे के हाथ रगड़कर एक-दूसरे को गर्मी देना चाहते थे; इसी तरह वे एक-दूसरे को सांत्वना दे रहे थे। ऋषिकेश की नदी के किनारे वे बैठे हुए थे। यहां दिल्ली की कोई भीड़-भाड़ नहीं, कोई शोरगुल नहीं, राजनीति सरगर्मी नहीं, कोई धूल-धंगड नहीं है, कोई नारेबाजी नहीं, कोई पुतली-दहन नहीं, कोई आतंकवाद नहीं है और न ही कोई अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार। चारों तरफ निर्मल शांति।

अल्बर्टो ने कहा: "उस बड़े पर्वत की तरफ देखो, यह तुम्हारे शिव की तरह सुंदर और कमनीय है और यह बहती हुई गंगा नदी शक्ति का प्रतीक है। यहां मानो सृष्टि का महामिलन हुआ हो। "

हर्षा अल्बर्टो की भावुकता देखकर आश्चर्यचकित थी। एक विदेशी के मुंह से शिव और शक्ति का चित्रण! "अल्बर्टो, उस पहाड़ के ऊपर देखो, जिसका शिखर बादलों से आच्छादित है। क्या कहीं तुम्हारे बुद्ध गहरे ध्यान में तो नहीं बैठे है?"

दोनों सहजता से हंसने लगे। जैसे यह हंसी गंगा के प्रवाह के साथ-साथ कुछ दुःखों को बहाकर ले जा रही हो। घाट के इस तरफ इतनी भीड़ नहीं थी। फिर भी दो-तीन पंडे घूम रहे थे। उनकी उपस्थिति इतनी विशाल प्रकृति के सामने तुच्छ लग रही थी। अल्बर्टो ठीक ही कह रहा था कि वे लोग वास्तव में स्वर्ग की दहलीज पर पहुंचे हैं। वे बैठे रहे, तभी एक कार थोड़ी दूरी पर रुक गई। कुछ समय बाद कार से कुछ मोटे आदमी और औरतें उतरी। चेहरे से वे राजस्थानी लग रहे थे।

उन्हें देखकर ज़ोर से मंत्रोंच्चारण करने वाले दोनों पंडों में प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई कि कौन इन नए तीर्थयात्रियों के पास पहले पहुंचे। फिर उनमें जो वयस्क था, उसके नेतृत्व में पूरा दल 'घाट' की ओर बढ़ा। फिर शुरू हुआ स्नान, तिल-तर्पण और पिंडदान प्रक्रिया।

"क्या वे 'माँ गंगा की पूजा कर रहे हैं?" अल्बर्टो ने उत्साह से पूछा।

"नहीं, अल्बर्टो, वे अपने पितृ-पुरुषों को पिंडदान दे रहे हैं। पितृ-पुरुषों का मतलब दिवंगत आत्माएँ। क्या तुम जानते हो कि हिंदू धर्म और दर्शन में आत्मा अमर है? "

"हाँ, मुझे पता है, मगर इन परंपरागत मान्यताएं अर्थहीन हैं। मैंने सुना है कि आत्माओं को चावल, कपड़ों का दान दिया जाता है। मगर मरा हुआ आदमी इन प्रसादों को कैसे स्वीकार करेंगा? वास्तव में, हाना, मैं यह देखकर हैरान हूं कि भारत में शंकर जैसे दार्शनिक, बौद्ध धर्म का उत्पत्ति-स्थल होने के बावजूद लोग इन सब बातों पर कैसे विश्वास करते है? शंकर मेरे प्रिय दार्शनिक है, बुद्ध मेरा लक्ष्य है और हिंदू धर्म की कहानियां और किंवदंतियां मुझे तृप्ति देती हैं। फिर भी मुझे स्पिनोजा के देवता पर अधिक विश्वास है। "

"यह स्पिनोज़ा कौन है? इसके अलावा, बौद्ध होने के कारण तुम्हारा स्पिनोजा के देवता पर विश्वास क्यों है? "

"स्पिनोजा एक यहूदी था। उनके अनुसार पूरी दुनिया एक ही नियम से चलती है और उस नियम से परे कोई भगवान नहीं है। इसलिए तुम उस नियम को भगवान कह सकती हो। मगर एक बात निश्चित है कि इस नियम में भी ऐसी कोई ताकत नहीं है कि जिसे बुलाने पर बारिश कर देगी या तुम्हारे मांगने पर तुम्हें वांछित फल दे देगी। इन दृष्टिकोणों से तुम उसे तटस्थ कह सकते हो। आइंस्टीन भी स्पिनोजा के भगवान में विश्वास करते थे। मुझे लगता है स्पिनोज़-दर्शन भारतीय-दर्शन की तुलना में अधिक तार्किक है। इसके अलावा, यह अधिक विश्वसनीय भी है। "

"अल्बर्टो, तुम एक या दो ऐसे दार्शनिकों को पढ़कर भारतीय दर्शन भंडार को कमतर नहीं आंक सकते। यहाँ विभिन्न मतवालों का अलग-अलग समय में प्रादुर्भाव हुआ है। तुम्हारा स्पिनोजा हमारे कनाद जैसा मुझे लगता है। कनाद वैदिक काल के एक संत थे। उन्होंने केवल चावल के कणों को खाकर भगवान शिव की उपासना की थी और सिद्धि प्राप्त की थी, इसलिए उनका नाम 'कनाद' पड़ा। उन्होंने स्पिनोज़ा की तरह कहा कि भगवान केवल मूक दर्शक हैं। उसका सृजन-प्रक्रिया से कोई लेना-देना नहीं है। दुनिया अदृश्य परमाणुओं से उत्पन्न हुई है और इसकी गतिविधियां चलती रहती हैं। परमाणुओं के संयोजन से सृष्टि का निर्माण और उनके विखंडन से प्रलय होता है। मेरा मानना है कि कनाद स्पिनोजा से बहुत पहले पैदा हुए है। "

अल्बर्टो ने मुस्कराते हुए कहा, "क्या तुम्हें गुस्सा आ रहा है? मेरा तुम्हें दुख पहुंचाने का इरादा नहीं था और न ही तुलना करना मेरा उद्देश्य था। यदि तुम्हें मेरी बातों से दुख पहुंचा है तो मुझे बहुत खेद है। मुझे बताओ, कनाद के बारे में मुझे अध्ययन-सामग्री कहां से मिलेगी? तुम्हें सुनने के बाद मेरी उनके बारे में जानने की इच्छा पैदा हो गई है। क्या तुम्हें पता है कि सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण चीज क्या है? "

"क्या?"

"जिस वजह से मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मुझे लगता है कि तुम मेरे जीवन का एक अनमोल उपहार हो। "

"नहीं, अल्बर्टो, मैं नहीं बता सकती कि कनाद के बारे में तुम्हें कहाँ से जानकारी मिलेगी। तुम्हारे पास एक बड़ी लाइब्रेरी है, तुम वहां से या अपने सहयोगियों से परामर्श कर बेहतर और अधिक जानकरी प्राप्त कर सकते हो। मुझे याद नहीं है मैंने उनके बारे में कब और कहाँ पढ़ा था। वास्तव में, हम भारतीय चन्दन के प्रलेप की तरह आध्यात्मिकता को हमारे शरीर पर लगाते हैं। चाहे, वह पढ़ा-लिखा या अनपढ़ हो, वह दर्शन के बारे में कुछ-न-कुछ जानता है। सबसे बड़ी बात यह है अल्बर्टों कि हम ईश्वर को विश्वास में खोजते हैं, तर्क-वितर्क में नहीं। सभी तर्कों और वैज्ञानिक मतों से परे रहस्य की एक दुनिया है, जहां तक हम अभी तक नहीं पहुंच पाएहैं। 'निर्वाण' या 'मोक्ष' की तरह रहस्यमय है। "

अल्बर्टो हर्षा को मुग्ध नेत्रों से देखने लगा। मेरी असली हाना कहाँ है?वाग्मिता से परिपूर्ण अथवा पहले वाली जीवन युद्ध में हारी हुई विषादग्रस्त। क्या वही लड़की है? वास्तव में दोनों रूपों में अद्वितीय।

अंधेरा होने लगा था। मलिन आसमान में फीका चाँद दिखने लगा था। धीरे-धीरे यह जगह निर्जन होती जा रही थी। बहुत दिनों से हर्षा की ऋषिकेश आने की इच्छा थी। अपनी पढ़ाई पूरी करने से पहले अपने दोस्तों के साथ यहाँ आने के बारे में सोचकर रखा था उसने। मगर अचानक अल्बर्टो ने उसके पास यह प्रस्ताव रखा। 'नवमी' के दिन उनके अपनी जगह लौटने पर हर्षा की मां ने उसे फोन किया: "तुम्हारे ससुराल वाले फोन पर पूछ रहे थे कि तुम पूजा पर घर आ रही हो या नहीं? इतनी बड़ी दुर्गा पूजा चली गई, मगर तुम्हारी बेटी नहीं आई ? ऐसा क्या पढ़ रही है? या पत्रकारिता कर रही है। घर की बहू सड़कों पर रिपोर्टर बनकर घूमेगी? वह छोटी बच्ची है, मगर आप लोगों ने तो दुनिया देखी है, आप लोग तो उसे रोक सकते थे। बहू ने अपने पति को छोड़ दिया है इसलिए वह अपना चेहरा नहीं दिखा पा रही हैं। लोगों ने इधर-उधर की बातें करना शुरू कर दिया है। "

हर्षा अपनी मां से बातचीत करने के बाद बहुत रोई थी। उसके माता-पिता को उसके कारण कष्ट हो रहा है, लोग उन्हें दोषी ठहरा रहे हैं। बुरे दिन अभी तक उसका पीछा नहीं छोड़ रहे थे। उसे बहुत अकेलापन महसूस हो रहा था। उसकी इच्छा हों रही थी कि वह किसी अनिर्दिष्ट सड़क पर जाकर कहीं खो जाए।

उस समय अल्बर्टो का फोन आया।

"हाना, मैं ऋषिकेश जा रहा हूं। तुम्हारी छुट्टियां हैं; क्या तुम मेरे साथ जाओगी ?"

अगर यह कोई दूसरा दिन होता तो हर्षा यह कहकर टाल देती: "क्या तुम्हें लगता है कि यह यूरोप है? मैं तुम्हारी सहेली बनकर आश्रमों और मठों में घूमती रहूँ ?हम लोग कुछ समय के लिए अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि तुम मुझे दिल्ली से बाहर जाने के लिए आमंत्रित करोगे और मैं सब-कुछ छोड़कर पागल की तरह तुम्हारे पीछे चली जाऊंगी। मैंने बहुत जमाना देखा है, अल्बर्टो। "

मगर हर्षा ने ऐसा नहीं कहा। इसके विपरीत, उसके मन में पाप या पुण्य, अच्छे और बुरे का ख्याल नहीं आया। यहां तक कि उस वक्त अगर रावण आकर बुला देता, तो भी वह लक्ष्मण -रेखा पार कर चली जाती। जबकि, अल्बर्टो उसका दोस्त है, उसका प्रेमी है।

"क्या हुआ, हाना?" तुम्हारे मन में क्या चल रहा है? " उसने कहा:" तुम देखोगी, कुछ देर बाद चाँद और उज्ज्वल होगा, गंगा चांदनी रात में मनमोहक लगेगी। कुछ और समय हम बैठेंगे , फिर चले जाएंगे, तुम क्या कहती हो? "

हर्षा ने दीर्घश्वास छोड़ी :"जैसी तुम्हारी इच्छा। " मानो जगह बदलने के बाद भी दुःख लगातार उसका पीछा कर रहे थे। किसी चोर की तरह किसी भी फांक से घुस जा रहे थे। एक पल में सभी सुख लूटकर चले जाते थे।

अल्बर्टो ने हर्षा की पीठ पर अपना हाथ रख दिया और उसे अपने करीब लाया:"ऐसा लगता है कि मेरी उपस्थिति का कोई मूल्य नहीं है, अन्यथा तुम अपने प्रेमी के बाहों में दुख के दिनों का स्मरण कर पाती ? हाना, मेरी प्यारी हाना, मेरी प्यारी मत्स्य-कन्या, मैं तुम्हें फ्रीडा के बारे में बता रहा हूँ, ध्यान से सुनो। फ्रीडा नाटी थी, मगर उसके पति डिएगो का शरीर सुडोल था, लोग मजाक में उन्हें हाथी और चींटी की जोड़ी कहते थे। वे दिखने में भी सुंदर नहीं थे।

जब फ्रीडा छह वर्ष की थी, तब उसे पोलियो हो गया था। उसका दायाँ पैर बचपन से बहुत कमजोर हो गया था। जब वह अठारह साल की हुई, तब एक बस दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी समेत ग्यारह जगहों पर फ्रेक्चर हुआ था। दायां पैर तो पूरी तरह से टूट गया था। वह महीनों-महीनों तक प्लास्टिक कवर के भीतर सोती रहती थी। उस समय उसने अपने जिंदा रहने की आशा खो दी थी। मगर चमत्कारिक रूप से वह बच गई, पूरे शरीर में निशान-ही-निशान और दर्द लेकर। उसे जीवन में तीस बार ऑपरेशन करना पड़ा। दर्द से राहत पाने के लिए उसके पास शराब, ड्रग्स और सिगरेट का सहारा लेने के बजाय और कोई विकल्प नहीं था। फिर भी उसके जीवन में एक जबरदस्त उत्साह था। अच्छा, हाना, तुम्हारी शादी कितनी उम्र में हुई थी? अठारह या उन्नीस में? "
"उन्नीस वर्ष में, " हर्षा ने कहा।

"ओह, हाना, डिएगो के साथ उसकी शादीशुदा जिंदगी बिल्कुल अच्छी नहीं थी। उसका वैवाहिक जीवन आँधी- तूफान वाला था। पीड़ादायक। गर्भपात। पति के साथ वैचारिक मतभेद। उसका नाम बदनाम होने वाला था। मगर वह निराश नहीं हुई थी। चित्रकारी उसकी 'साधना' थी; और कला के लिए चाहिए प्रेम। फ्रीडा की कुरूपता, प्रेमहीनता, अभाव और यंत्रणा के बावजूद भी बहुत सारे प्रेमी थे। प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता नीयन ट्रॉट्स्की से लेकर फोटोग्राफर निकोलस मूरे सभी उसके पाँव पड़ते थे। मगर क्या तुम जानती हो, कुछ लोगों को संदेह है कि फ्रीडा ट्रॉट्स्की की हत्या में शामिल थी? ऐसा इसलिए है उसकी हत्या के बाद वह स्टैलिन को बहुत पसंद करने लगी, जो ट्रॉट्स्की का सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी और दुश्मन था। मगर तुम्हें पता है कि मुझे क्या लगता है? ये सब झूठ हैं। उनके विरोधियों द्वारा फैलाई हुई अफवाहें है। फ्रीड़ा जैसी प्रेमिका कभी भी ऐसा काम नहीं कर सकती। हाना, हालांकि यह अविश्वसनीय लगता है, उसने अपनी विख्यात पेंटिंग 'गोडेस' का चित्रांकन तब किया, जब वह ट्रॉट्स्की के साथ संभोग कर रही थी। ”

हर्षा मंत्र-मुग्ध होकर अल्बर्टो से फ्रीडा के जीवन की कहानी सुन रही थीं। हर्षा को उस महान रहस्यमयी व्यक्तित्व को देखने की इच्छा हो रही थी ।

: फ्रीडा बिल्कुल सुंदर नहीं थी। उसकी नाक के नीचे पतली नीली मूंछें थी। उसकी भौहें जुड़ गई थी। उसने अपनी कुरूपता को अपने चित्रों में आँकने में कभी भी झिझक नहीं की थी। "क्या तुम्हें लगता है कि उसका इतने सारे लोगों से प्यार करना एक छल था ? तुम तो एक औरत हो, बहुत अच्छी तरह से समझ सकती हो। "

"नहीं, नहीं, अल्बर्टो, प्रेम में छल-कपट कभी भी हृदय को सर्जनशील नहीं बना पाता है। वह निश्चय एक महान प्रेमिका थी; वास्तव में प्रेममयी। "

"हां, तुम सही कहती हो, हाना, केवल छल-कपट रहित प्रेम ही रचनात्मक हो सकता है, अगर छल-कपट है तब संभव नहीं है। उसके प्रेमी उसे ‘गोडेस’ कहते थे। सेक्स और पेंटिंग से उसे इतनी प्रसिद्धि मिली कि सुंदर मडोना की लोकप्रियता भी उसके साथ प्रतिस्पर्धा करने में नाकाम रही। "

" मगर इतनी बड़ी विदुषी की मौत बहुत दर्दनाक हुई थी। उसका पैर सूज गया था। डॉक्टरों ने सलाह दी कि पैर काटना पड़ेगा। फ़्रीडा प्यार की देवी थी, सैक्स की देवी थी; पैर कटवाने से पहले ही उसने आत्महत्या कर ली। पता है; हाना, उसने आत्महत्या करने से पहले अपने नोट में क्या लिखा था?

'आई होप द एक्ज़िट विल होपफुल एंड आई होप नेवर टू रिटर्न। ' फ्रीडा को अपने जीवन में कुछ नहीं मिला, मगर मानव-सभ्यता को बहुत कुछ दे गई। मनुष्य ऊर्जा का स्रोत है, हाना। फ्रीडा के जीवन में तो दुखों की कमी नहीं थी ? फिर क्या उसने जीवन जीना छोड़ दिया?

पता नहीं कैसे, तुम्हारी जिंदगी फ्रीडा के साथ मेल खाती हैं। चेहरे से या व्यक्तित्व से, मगर है तो निश्चित। "

हर्षा ने एक दीर्घ-श्वास छोड़ी। अल्बर्टो ने उसे कसकर पकड़ लिया। नहीं, और दीर्घश्वास नहीं। और निराशा नहीं। कभी हमने जीवन में बुरे सपने देखे थे तो क्या आज हमे जीवन जीना छोड़ देंगे ? नहीं, मेरी हाना, नहीं।

हर्षा अल्बर्टो के प्यार में पूरी तरह से डूब गई थी। अगर किसी को ज़िंदगी में क्या चाहिए, अगर दुर्दिनों में कोई अपने बांह फैलाकर उसे निर्भय आश्रय प्रदान करें ? अल्बर्टो उस समय उसे सबसे प्यारा इंसान लग रहा था। अब लता की तरह लोटने में कोई पछतावा नहीं लग रहा था, न ही कोई पश्चाताप और न ही अपराध-बोध। साठ या सत्तर साल के इस जीवन में बहुत ही कम रंगीन तितलियों की तरह खुशियाँ हाथ में आती है। उन सुखों को मुट्ठी में बांधकर रखना उचित है।

चाँद गंगा की छाती पर चमक रहा था। सम्पूर्ण वातावरण आकर्षक था। हर्षा की इच्छा हो रही थी कि वह अल्बर्टो के साथ इस चांदनी रात में स्वर्ग के गंधर्व और अप्सरा की तरह नृत्य करें। उसने अल्बर्टो की गोद में अपना सिर रखा। अपनी उंगलियों से उसके बालों को सहलाते हुए वह कहने लगा: " चलें, हाना? देखो, चारों तरफ कैसे निर्जन हो गया है और यहां बैठना सुरक्षित नहीं है। मैं नहीं चाहता कि ऐसी कोई अप्रिय घटना घटे, जिसके लिए मैं जिम्मेदार बनूँ। "

"क्या तुम्हारा मन इस चांदनी रात में तैरने का नहीं हो रहा हैं?"

"किसने कहा? यदि मैं सुरक्षा वलय तैयार कर पाता, अगर मेरे अंदर ऋषि विश्वामित्र की तरह स्वर्ग पैदा करने की क्षमता होती , तो तुम देखती मैं तुम्हारे लिए कैसा स्वर्ग बनाता। वहां सदैव चांदनी रात होती। वलय भेद कर शैतान की कभी वहां प्रवेश करने की हिम्मत नहीं होती। वहाँ पक्षी सदा गायन करते। न तो भूख लगती और न ही प्यास। हम बारहमासी नदी की तेजस्वी छाती पर नौका-विहार करते। "

अल्बर्टो के माथे पर बड़ी-बड़ी लकीरें दिखाई दे रही थीं, जबकि उस समय वे अदृश्य हो गई। मानो उसने जिस दार्शनिक अल्बर्टो से मुलाक़ात की थी, वह नहीं है, मगर उसका प्रेमी एल्बी है। "हे, एल्बी, मेरी प्यारे स्वप्नहार, बहुत हो गया। पृथ्वी पर लौट आओ। मुझे डर लग रहा है। ऐसे सपने मनुष्य के भाग्य में नहीं है। "

दोनों होटल में लौट आए, हाथ में हाथ डालकर। अल्बर्टो ने कमरे की खिड़की खोली। ठंडी-ठंडी हवा के साथ चाँदनी कमरे में घुस आई। हर्षा खिड़की के पास कुर्सी लेकर बैठ गई। पर्दा हटाया। चांदनी बिस्तर पर पसर रही थी।

ऐसी मायावी रात में भी वह आदमी मानो सुरंग खोदकर छत के ऊपर वाले कमरे में घुस आया। हर्षा को अपने डरावने दाँत और नुकीले नाखूनों से डराने लगा। अदृश्य मकड़ी की जाल  में एक चालाक शिकारी की तरह उसे उलझा दिया।

अल्बर्टो पहले से  बिस्तर पर फैलकर सो गया था। उसने कहा, "यू आर लुकिंग ब्युटीफूल माय स्वीट हार्ट। यू आर लुकिंग लाइक ए गोल्डन स्टेचू। आई वांट टू टच यू। मे आई?"

 दुख क्यों हजारों दरवाजे खोलकर पहुँच जाता है, अल्बी ? उसने उन स्वर्गीय क्षणों को क्यों छीन लिया? 'मुझे नहीं पता है, इस समय वह राक्षस पहुंच जाएगा और मुक्का मारकर तुम्हारे होंठ फाड़ देगा। तो मैं क्या करूंगी ? मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हारी रक्षा के लिए ढाल बन पाऊँगी या नहीं। जब मैं उस आदमी से दूर चली आई और पुरी में थी, तो मुझे डर नहीं लग रहा था। जब मैं पुरी से दिल्ली आई तो भी मुझे इस तरह का डर नहीं लगा था, अचानक मुझे इतनी घबराहट क्यों लगने लगी। नहीं, मैं इस कारण से डरी हुई नहीं हूं कि मुझे उस आदमी ने मारा था। मैं भयभीत इसलिए थी कि वह किसी भी क्षण मेरी मुट्ठी से सभी आनंदमय क्षणों को लूट लेगा, जिसे मैंने करोड़ों के खजाने की तरह संभाल कर रखा है। अगर कल वह आदमी मुझे अदालत में घसीट लेता है, तो क्या मैं वकीलों के अश्लील सवालों का उत्तर दे पाऊँगी ? '

अल्बर्टो आधा सोया हुआ था। उसने कहा: "दुःख को इस तरह खींचकर जगह ने दें। याद रखना कि दुःख शैतान की संपति है। " उसने उठकर हर्षा को गले लगाते हुए कहा:"मेरी सुनहरी तितली,  तुम मुझे अपने होंठ समर्पित कर दो। मुझे तुम्हारे सारे दुखों को चूसना है।  तुम अपनी मेघवर्णी आँखें खोलो। मैं तुम्हारे आँखों की सारी बारिश-बूंदों को चाटना चाहता हूं। "

हर्षा ने सामने आईने में देखा, वे दोनों स्वर्ग से निष्कासित गंधर्व और अप्सरा की तरह दिखाई दे रहे थे। अल्बर्टो की गर्म सांस उसके गाल और माथे को स्पर्श कर रही थी। बसंत की मलय पवन की तुलना में यह पवन अधिक प्रेममय और उत्तेजक थी। सभी इंद्रियों ने अपने दरवाजे एक के बाद एक खोलना शुरू किया। मन ने उसे अपने मायावी बंधन से मुक्त कर दिया था: "मैं तुम्हारे शरीर की सुगंध में खो जाना चाहता हूँ, हाना,  मैं बार-बार अवगाहन  करना चाहता हूं, हे मेरी योजनगन्धा, हे मेरी विषादेश्वरी फ्रीडा!

*चारों तरफ घिर गए थे जैसे बादल*
*अंधेरा छा गया था सारे आसमान में*

*जैसे कहीं घनघोर बारिश हो रही हो*
*दस दिशाएँ ,*
*हुलसित हवा*
*टिपटिप बारिश की बूंदें*
*देखते-देखते ही गीली हो गई*
*सूखी मिट्टी*

*सौंधी गंध से आकर्षित मन*
*मुग्ध हृदय*
*कहाँ वह छुपाएगी खुद को ?*
*कहाँ है वह चारदीवारी और छत ?*
*जहां होगा माँ की गोद का आश्रय*
*अब इस घने जंगल को छोड़कर*
*क्या जा पाएगी वहीं, कहीं दूर बचपन में*
*जहां वह खुद छुपा पाएगी*
*बारिश में भीगी इस मिट्टी की सुगंध को ?*
*देखते-देखते ही निरंतर बारिश ने भिगो दिया*
*उसका तन-मन, उसे किसी का डर नहीं*
*न ओलों का, न बिजली का*
*यह जंगल छोड़ने का मन नहीं है उसका*
*वह महसूस कर पाई एक बूंद बारिश कैसे*
*उसके अंतर्वस्त्र से होकर निकल गई चुपके से*
*निकल गई उसके दोनों कोमल फूलों के ऊपर से*
*अनजाने अपना स्पर्श देकर*
*जब आँखें खुशी में बंद हो रही थी*
*एक और बारिश की बूंद ने उसे आवेशित किया*
*प्रेम-माया हो गया मानो उसका शरीर*
*कुछ समझने से पहले उसने*
*खो दिया था अपना नियंत्रण*
*निस्तेज होते हुए उसने जान लिया था*
*वह सिर्फ जल-मग्न हो चुकी, और कुछ नहीं*
*जल ही जल, उसकी नसों में, धमनियों में जल*
*न कुछ करने का था*
*न  कुछ कर पाई।*

अल्बर्ट के होठों पर संतोष की मुस्कान थी। हर्षा चकित थी। यह कैसा है मैजिक ... ? उसकी नजरों से विषाद कहाँ गायब हो गया? थकावट? पश्चाताप? वह हैंगओवर कहाँ गया ? उसके अंतकरण का शून्य भाव ? क्या यह वही अल्बर्टो है, जो तूफान से बिखरे पंखों वाले पक्षी की तरह कभी  बिस्तर पर एक दयनीय स्थिति में पड़ा हुआ रहता था? क्या यह वही अल्बर्टो है, जिसने  कहा था, " आई मेक लव एंड सेक्स विथ पार्सीमानी ?"

बल्कि  वह सुख का पन्ना बदल कर बाहर आ गई थी। "अल्बी"।

"हां, मैं तुम्हें  सुन रहा हूं। मैं तुम्हें हर हालत में खुश देखना चाहता हूं। मेरी राजकुमारी, मैं तुम्हें सब-कुछ देना चाहता हूं, जो तुम्हें कभी नहीं मिला। "

"तुम मुझे, एल्बी क्या दे सकते हो? कुछ गुप्त अंतरंग क्षणों को छोड़कर? क्या तुम मुझे अंजुली भर जीवन दे सकते हो ? क्या तुम हमारे संबंधों को मान्यता दे सकते हो? नहीं, यह  संभव नहीं हैं। नहीं, कभी नहीं। हम अपनी सीमाओं को फांद नहीं सकते हैं। मुझे तुम्हारा यह थोड़ा-सा पल नहीं चाहिए, मुझे चाहिए फसलों से भरी हुई पूरी क्यारी। अल्बर्टो! मैं तुम्हें खोना नहीं चाहती हूं। "

"हाना, तुम बहुत ही पजेसिव हो। तुम मुझे भी पजेसिव करने लगी हो। मुझे लगता है कि प्राच्य लोग अपने रिश्तों में अधिक पजेसिव हैं?जब हम एक अच्छी फिल्म देखते हैं, तो हम फिल्म की दुनिया के पात्रों में जीने लगते हैं, कुछ समय के लिए; उस समय हम अपने अस्तित्व को भूल जाते हैं, ठीक उसी तरह हम कुछ समय के लिए अपने दुःखों को भूल जाएँ। "
ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने एक पिन चुभाकर हृदय को छेद दिया हो। चारों ओर खून के छींटे। हर्षा ने पूछा, "क्या तुम अभी तक प्यार का अभिनय  कर रहे थे, जिसे मैं सच मान रही थी?"

"नहीं, मैं अभिनय नहीं कर रहा था। परंतु ...."

"परंतु?"

"नहीं; मैं तुम्हें समझा नहीं सकता। यह पूर्व और पश्चिम की मानसिकता का फर्क है। "

"अल्बर्टो,  तुम क्या कहना चाहते हो? कुछ समय पहले तुमने कहा था कि तुम मुझे पूरी तरह से खुश देखना चाहते हो। "

"अब भी मैं यही चाहता हूँ। "

"तुम्हें समझना बड़ा मुश्किल है। किसी भी जटिल अंक की तुलना में तुम्हारा मन अधिक अस्पष्ट और रहस्यपूर्ण है।  तुम्हारे मित्र तुम्हें 'फ्रायड' नाम से बुलाते थे । तब तो तुम मनुष्य के मन को बहुत अच्छी तरह से पढ़ सकते हो। क्या तुमने कभी अपने मन का अध्ययन किया है? "

अल्बर्टो हँसने लगा: "हां, मैंने अपने स्कूल के दिनों में फ्रायड की पूरी किताबें पढ़ी हैं। यही कारण है कि मेरे दोस्त मुझे 'फ्रायड' के नाम से संबोधित करते थे, मगर मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मेरा दिमाग तुम्हें जटिल क्यों दिखाई देता है? इसके अलावा, यह मेरी समझ से परे है कि तुम मुझसे क्या चाहती हो ? मगर यह सच है कि मैं तुम्हारे पास केवल अपनी भूख मिटाने नहीं आया हूं। हम दोस्त बने रह सकते हैं, भले ही, हमारे बीच कोई शारीरिक संबंध स्थापित न हो। "

" सार्त्र का शिष्य हो ? सभी दार्शनिक ऐसे ही होते हैं? "

"तुम मुझे सार्त्र का शिष्य कह रही हो। पर क्यों ?"

"तुम दोनों पलायनवादी हो। अभी तुमने मुझे बताया था कि पूर्व के लोग बहुत ही पजेसिव होते हैं, पश्चिम में नहीं। क्या तुम नहीं जानते कि सार्त्र और सिमोन के बीच क्या हुआ? सिमोन का पहला प्रेमी सार्त्र था। किसी ने भी उसे पहले भी चुंबन नहीं दिया था, वह सार्त्र के साथ 'गैरजिम्मेदाराना' प्रेम के लिए सहमत हुई थी। जिसे तुम पजेसिवनेस कहते हो - वही पजेसिवनेस उनमें नहीं होनी चाहिए, यह मूल शर्त थी। सार्त्र ठंडे आदमी थे, फिर भी उनकी कई गर्लफ्रेंड थीं। सार्त्र और सिमोन के बीच ठंडे शारीरिक संबंधों ने उसे अमेरिकी उपन्यासकार अलग्रेन के साथ प्यार में बांध दिया, फिर भी वह सार्त्र को नहीं छोड़ पाई। क्या तुम जानते हो, अल्बी, सिमोन ने अपने पत्र में अल्ग्रेन को क्या लिखा था?यह सच नहीं है कि तुम्हारे लिए मेरा प्यार कम है, इसलिए मैं तुम्हारे बजाय सार्त्र के साथ रह रही हूं। बात यह है कि सार्त्र मुझे चाहते हैं। वह मेरे बिना अकेले हो जाएंगे। मैं उनकी एकमात्र सहेली हूं। तुम्हारे से ज्यादा शारीरिक और मानसिक रूप से सार्त्र से प्यार करना मेरे लिए संभव नहीं है, फिर भी मेरे लिए उन्हें छोड़ देना असंभव है क्योंकि वह मुझे चाहते हैं। मगर एक दिन सिमोन ने सार्त्र को छोड़ दिया क्योंकि प्यार का खेल खेलना उसके लिए असहनीय था। उसने यह बात भी अलग्रेन को लिखी। 'माय डियरेस्ट मेन विथ गोल्डन आर्म्स। ' जीवन मेरे लिए बेहद दर्दनाक होता जा रहा है, भले ही मैं ऊपर से खुश लगती हूं। मैं अपने आखिरी बूंद तक जीवन का उपभोग करना चाहती हूँ, कभी भी मरना नहीं चाहती। मैं जीवन के बारे में इतनी उत्साही हूं कि मैं इसे पूरी तरह से प्राप्त करना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि एक आदमी मुझसे एक औरत का पूरा जीवन मांगे। मैं चाहती हूँ कि बहुत सारे दोस्त, बहुत सारी निसंगता भी। मैं बहुत मेहनत से एक अच्छी किताब लिखना चाहती हूं और बहुत मौज-मस्ती के साथ घूमना-फिरना चाहती हूं। मैं बहुत स्वार्थी हूँ और निस्वार्थ भी। तुम जानते हो कि एक साथ सब पाना वास्तव में मुश्किल है। जब मुझे ये सारी चीजें एक साथ नहीं मिलती है, तो मुझे गुस्सा आ जाता है। '

“ अल्बी, अब तुम्हें समझ में आया कि केवल पूर्व के लोग ही पजेसिव नहीं होते हैं। "

अल्बर्टो हँसने लगा, "यह ठीक है, मगर मैं इस बात को नहीं समझ सका कि तुम सार्त्र को किस कारण से पलायनवादी कह रही हो। इसके अलावा, मैं अपनी पूर्व धारणा को बदलकर कहना चाहता हूं कि महिलाएं अधिक पजेसिव होती है, मगर पुरुष नहीं। "

" सुनो, अल्बर्टो, सबसे पहली बात यह है कि मैं सार्त्र को इसलिए पलायनवादी कहती हूं क्योंकि वे जीवन में कभी भी किसी भी तरह की सांसारिक जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते थे। तुम जीवन की सारे सुखों को लूट लेना चाहते हो, मगर कोई भी जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते हो, यह कैसा रवैया है? प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है, इसी तरह कार्य पूरा होने के बाद उसे किसी संज्ञा

से परिभाषित किया जाता है। और महिलाएं ज्यादा पजेसिव होती है, उसका उत्तर मैं और किसी दिन दूँगी। "

अल्बर्टो बिस्तर से उठकर बाथरूम में गया। हर्षा ने देखा, उस समय भी बिस्तर पर अंजुली भर चाँदनी बिखरी हुई थी , मगर उसे पहले की तरह आकर्षक नहीं लग रही थी। मगर क्यों ? अल्बर्टो के साथ उसका रिश्ता क्या है? आज वह है, कल वह नहीं हो सकता है। वह अनजाने में दिन-ब-दिन अल्बर्टो का सहारा क्यों ले रही है ? क्या वह बहुत ही पजेसिव होती जा रही है ? अल्बर्टो ने सही कहा है , वे इस रिश्ते को कोई सुंदर नाम दे सकते हैं। यह सिर्फ एक फिल्म देखने की खुशी की तरह है ...... तो क्यों उसे अपनी छाती में निर्वात महसूस हो रहा है ?

अल्बर्टो बाथरूम से बाहर आकर कहने लगा: "मैं तुम्हें कभी छोड़कर नहीं जाऊँगा। जब तक तुम हमारा रिश्ता अक्षुण्ण रखना चाहोगी, तब तक मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। तुम इसे युधिष्ठिर के वचन मान सकती हो। युधिष्ठिर कभी झूठ नहीं बोलता है, हाना। "

"ओह, क्या तुम ये सारी बातें बंद करने का कष्ट करोगे, एल्बी? जितनी अधिक इन चीजों पर बहस करेंगे, उतना ही अधिक हम दुखी होंगे। "

"हां, तुम सही कह रही हो, हाना, यदि भगवान की कृपा से हम दु: ख के बंधन से मुक्त हुए हैं, तो हम फिर से विषाद के चंगुल में क्यों फंसना चाहते हैं? ठीक है, हाना, मेरे पास दो प्रस्ताव हैं, तुम किस पर सहमत हो? पहला है रास्ते पर टहलने का और दूसरा बैठकर प्रश्नोत्तरी खेल खेलना है। "

"मुझे बचाओ, अल्बी, मैं दोनों नहीं चाहती हूं। मुझे नींद आ रही है। "

8.

“ओह, तुम्हारा चेहरा कितना चमक रहा है! तुम सुंदर लग रहीं हो। क्या बात है, हर्षा?" रहस्यमयी ढंग से मुस्कुराते हुए भैरवी चक्रवर्ती ने पूछा। कंधे पर लटके बैग को मेज पर रखकर वह मुस्कराने लगी "तुम ओडिशा कब गई थी ? तुम तो कह रही थी कि नहीं जाओगी, "भैरवी ने पूछा "क्या तुम्हारा कोई जरूरी काम था? तुमने सूटकेस भी नहीं लिया? या तुम कहीं और गई थी? "

"नहीं, मैंने अपना सूटकेस नहीं लिया था। "

'क्या तुम्हारे विवाह के लिए अरजेंट घर से बुलावा आया था? हाउ इज ही ?"

भैरवी का क्या आशय था कि उसकी अरजेंट शादी के बुलावा कहने से ? हर्षा घबराने लगी। भैरवी क्यों इतनी जांच-पड़ताल कर रही है? क्या उसे कोई खबर मिली है कि वह अल्बर्टो के साथ बाहर गई थी? या उसके चेहरे की चमक यह बात बता रही है ? नहीं, हर्षा ने तो अपनी सहेलियों को अपने अतीत के बारे में कभी नहीं बताया था। वे तो घूमते-फिरते है, अपने बॉय फ्रेंड के साथ। उसने सब-कुछ देखा है, मगर उसने कभी गलत टिप्पणी नहीं की थी, न ही उन पर उनकी राय जताई थी। वह हमेशा यह ही सोचती थी कि वे इस उम्र में अपने जीवन का आनंद नहीं लेंगे तो कब लेंगे? हालांकि, हर्षा उनसे दो साल बड़ी होगी, मगर उसके अनुभव ने उसे बुद्धिमान बना दिया था। मगर उसने अपने सहपाठियों की प्रेम कहानियों के बारे में जानने में कभी दिलचस्पी नहीं दिखाई।

क्या किसी पड़ोसी ने उसे उस दिन अल्बर्टो के साथ बाहर जाते देख तो नहीं लिया? या वह अनावश्यक डर रही है ? बात टालने के लिए उसने पूछा: "और अपनी छुट्टियां कैसे बिताईं?"

"बहुत अच्छे से। पूरे वर्ष का आनंद दुर्गा पूजा में मिलता है। मेरी मामी टेक्सास से आई थी। मैं उसे बहुत समय के बाद मिली। मेरे सभी रिश्तेदारों से मुलाक़ात हो गई। मुझे बहुत सारे उपहार भी मिले हैं। मैं तुम्हें बाद में दिखाऊंगी। इतनी मौज-मस्ती! घर में कौन रुकता था? हमेशा पंडालों में समय बीतता था। हमारा पंडाल विभिन्न अनाजों से सजाया गया था। "

"नवीना अभी तक वापस नहीं आई? तुम घर से वापस कब आई? "

चाय बनाते हुए भैरवी ने कहा, " मैं कल लौटी। माँ मुझे लक्ष्मी पूजा तक रखना चाहती थी, मगर कान्हा ने 'कम सून' 'कम सून' एसएमएस भेजें तो मैं वापस आ गई। नवीना आज दस बजे पहुंची। अब वह शॉपिंग सेंटर गई हैं, कुछ चीजें खरीदने के लिए, जिन्हें वह अपने घर पर भूल आई है। मैंने उसे दोपहर में भोजन के पैकेट लाने के लिए कहा है। मगर मुझे नहीं पता था कि तुम आओगी। कोई बात नहीं, तीनों मिलकर खा लेंगे। तुम क्या कहती हो? "

भैरवी दो कप चाय लेकर आई। "क्या तुम संदेश (कलाकंद) खाओगी ?"

"नहीं, बाद में खाऊँगी। अभी खाने से चाय का स्वाद खराब हो जाएगा। चाय पीकर नहा लेती हूँ। मैं बहुत थक गई हूं। "

" मैं सच बोल रही हूँ, तुम बहुत सुंदर लग रही हो। तुम्हारे गाल चमक रहे हैं। क्या तुम पार्लर गई थी? "

"मुझे पार्लर जाने का समय कब मिला ?" भैरवी के सवालों से बचने के लिए जल्दी-जल्दी चाय पीकर अपने कपड़े लेकर बाथरूम में चली गई।

पता नहीं क्यों, उसके दिल की धड़कन काफी बढ़ गई थी। क्या उसके पूरे शरीर से अभी भी अल्बर्टो की गंध आ रही थी ? भैरवी कह रही थी, उसका चेहरा चमक रहा है। उसने दर्पण में देखा; उसके शरीर के किन-किन हिस्सों में खुशी चमक रही थी ? किस हिस्से से दिखाई दे रहा है, उसके शरीर में सदा बहते हुए झरना का प्रतिबिंब? वह खुद को आईने में देखकर शर्मिंदा हो गई थी। आश्चर्य की बात है, क्या कोई खुद को देखकर शर्माता है?

शावर के नीचे खड़े होकर, वह अपने चेहरे की चमक और रंग को दूर करना चाहती थी। वह पुरानी हर्षा होना चाहती थी। पुरानी हर्षा, जिसंकी आँखें सात आकाशों के बादलों से घिरी हुई हो। जिनके होंठ पत्थर जैसे कठिन हो। जिसके गालपर लंबे समय से भंवरी नहीं पड़ी हो। हर्षा दर्पण के सामने खड़ी थी। दर्पण के भीतर विषाद की देवी थी, आधी मृत और आधी जीवित। शॉवर के स्पर्श से जैसे बहने लगा था अल्बर्टो और हर बूंद उसे बना रही थी पत्थर से औरत। हर्षा को डर लगने लगा था कि उस सुखानूभूति से उसकी मुक्ति नहीं है। उसने शावर बंद कर अपना शरीर पोंछ लिया। दर्पण के सामने जैसे नग्न देवी की खड़ी थी। उसने झुकी नजरों से अपने कपड़े बदले और वह बाथरूम से बाहर आ गई।

इस बीच में नवीना लौट आई थी। हर्षा को थोड़ा डर लगा कि कहीं नवीना भी उससे भैरवी की तरह सवाल तो नहीं पूछेगी। क्या वह उसके चेहरे पर टिप्पणी तो नहीं करेगी? उसने जानबूझ कर खुद के चेहरे को लटका दिया। ऐसा लग रहा था अभी तक अपने शरीर पर टपकती पानी की बूंदें रोमांटिक गति से गिर रही होगी। , वह अपनी सूखानुभूति को कहां छुपाएगी ? जब उसका मन खुशी से गुनगुनाता हो।

नवीना ने हर्षा को जल्दी आने के लिए कहा क्योंकि उसे बहुत भूख लगी थी। " मैं भोजन करते ही सो जाऊँगी, मुझे बहुत नींद आ रही है। "

हर्षा ने बाल सूखाकर अपने कपड़े धूप में सूखने रख दिए। इस बीच नवीना और भैरवी ने खाना खा लिया। नवीना अपने घर से विभिन्न प्रकार की मिठाई और नमकीन लाई थी। भैरवी ने 'संदेश' लाया था। उन्होंने होटल से मंगाए गए पैकेटों को तीन भाग में बांट दिया। हर्षा बहुत शर्मिंदा थी, क्योंकि वह अपने घर से हमेशा की तरह सभी विशिष्ट 'आरिशा पीठा', , 'कोरा' या 'छेना झिली' नहीं लाई थीं।

नवीना को 'शाल उखुडा' बहुत अच्छे लगते थे। उसने पूछा, "क्या तुमने इस बार 'शाल उखुड़ा' नहीं लाया, हर्षा?"

"नहीं, मैं बहुत व्यस्त थी। मेरी यात्रा अर्थहीन रही। "

" तुम तो इस बार जाने वाली नहीं थी, फिर तुम क्यों गई? क्या कोई घर में बीमार है? "

हर्षा को लगा कि जैसे वह इस बार बच गई। भैरवी ने उससे नहीं पूछा, "हू इज ही ?"

"माँ बीमार है; पिताजी ने फोन किया था कि मां के हाथ गर्म पानी से जल गए थे। "

"ओह! क्या तुम पुरी में हर्बल उपचार करवाकर आई हो ? "

" ऐसा क्यों पूछ रही हो ? भैरवी ने भी थोड़ी देर पहले यही बात पूछी थी। इतने कम समय में हर्बल उपचार हो सकता है? मैं तो ठीक से स्नान नहीं कर सकी, मैंने ट्रैवल एजेंट से बड़ी मुश्किल से टिकट का जुगाड़ किया। दुर्गा-पूजा के लिए गाड़ियों में भयंकर भीड़ है? "हर्षा को झूठ बोलना पसंद नहीं था, मगर उसके पास और कोई रास्ता भी नहीं था।

नवीना और भैरवी अल्बर्टो के बारे में जानती थी। मगर वे सोच भी नहीं सकती थी कि अल्बर्टो के साथ उसकी घनिष्ठता इतनी ज्यादा बढ़ गई है। वे केवल इतना जानती थी कि दर्शन-शास्त्र के इस प्रोफेसर से हर्षा की पुरी में मुलाकात हुई थी और उन्हें भारतीय पौराणिक कहानियां सुनना अच्छा लगता है। ऐसे भी हर्षा ने कमरे में अल्बर्टो के बारे में कभी भी बातचीत नहीं की। मगर वे सोच रही थी कि विष्णु एक दिन हर्षा का मन अवश्य जीतेगा, विष्णु इतना बुरा आदमी नहीं था। मगर उन्हें नहीं पता था कि हर्षा विवाहित है, उस आदमी के साथ संबंध अब भी है। मगर वह यह नहीं चाहती थी कि विष्णु उसे लेकर सपने देखे, जो कभी भी पूरे नहीं हो सकते हैं।

भोजन करने के बाद जब वे आराम करने गईं, तभी मोबाइल पर एक एसएमएस आया। तीनों दौड़कर मोबाइल देखने गई। मैसेज हर्षा के मोबाइल में आया था अल्बर्टो का। उसका दिल धड़कने लगा। कुछ घंटे पहले ही वे एक-दूसरे से अलग हुए थे, फिर उसे एसएमएस भेजने की क्या आवश्यकता थी ? हर्षा के चेहरे के भाव अचानक बदल गए? यह देखकर भैरवी ने पूछा: "क्या तुम्हारे 'वुड बी' का मैसेज है ? तुमने तो हमें अपने उसके बारे में नहीं बताया। "

" छोड़ न, बकवास। क्या तुमने नहीं सुना कि मेरी मां की बीमारी के कारण मैं अपने घर गई थी ? "
" सॉरी यार, गुस्सा मत हो, " भैरवी ने कहा। " मेरे मन में यह धारणा थी कि शादी के लिए तुम्हें बुलाया होगा। तुम इतनी जल्दी वापस क्यों आ गई? थोड़े दिन रुक जाती। "

"मेरी मां की सहायता करने के लिए मेरी बुआ है। इसके अलावा, इधर कक्षाएं लगेगी, सोचकर मैं वापस आ गई। "

भोजन करने के बाद नवीना 'वज्रासन' में बैठी। वह खाना खाने के बाद दस मिनट तक इस आसन में बैठती थी। भैरवी बिस्तर पर बैठकर अख़बार के पन्ने पलट रही थी। हर्षा ने अल्बर्टो का मैसेज पढ़ा: "माय हाना, आई

केन नॉट स्टॉप थिंकिंग अबाउट यू। आई एम ड्रीमिंग विथ यू। प्लीज टेक मी एंड शॉ मी यौर फ्लोवरी बेड। आई वांट टू बी देयर फॉर एवर। " उसके मन में अजीब सवाल उठने लगे। क्या यह वही अल्बर्टो है? बौद्ध-अनुयायी? , संयम के बारे में बात करने वाला आदमी?जो कहता था, "आई मेक लव विथ पार्सीमोनी?" कुछ हद तक ठंडा। अल्बर्टो कैसे इतना अचानक बदल गया। जैसे कि मायामोह में फंस गया हो। जिसके सारे तर्क इन अनुभवों के सामने अर्थहीन हो गए हो ?

हर्षा ने ध्यान से इधर-उधर देखा कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है। फिर चुपचाप मोबाइल को तकिया के नीचे रखकर सो गई। उसने लगभग चार से पांच घंटे से बस की यात्रा की थी, वह सोच रही थी, घर जाते ही सो जाएगी। मगर अल्बर्टो के मैसेज ने उसकी नींद गायब कर दी। जब वह मिलेगा, तो वह उसे ऐसे मैसेज भेजने के लिए मना कर देगी। “ दोनों लड़कियां क्या सोचती होगी, पता नहीं ? वे फिर उसे अलग ढंग से देखेंगे। "

उन्हें आज तक मालूम नहीं था कि हर्षा शादीशुदा है, वह अपने पति से रुष्ट होकर यहाँ आई है। जब उन्हें इसके बारे में पता चलेगा, तो क्या वे उसे अच्छी नजर से देखेंगे? अल्बर्टो और विष्णु से उसका नाम जोड़कर कानाफूसी नहीं करेंगी? क्या वे उसका चरित्र-हनन नहीं करेंगे?

अल्बर्टो अभी तक उसके आकर्षक जादू से बाहर नहीं आ पाया था। क्या वह उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था? क्या वह प्रतीक्षा करते-करते सीधे यहाँ आ जाएगा? वह मोबाइल को लेकर चुपचाप बाथरूम में चली गई। वह इतना डर क्यों रही है ? ये दोनों लड़कियां सभी की उपस्थिति में फोन पर बहुत आसानी से एसएमएस करती है और प्रेमालाप करती है। हर्षा ने अपना मोबाइल चालू किया। तुरंत एक और संदेश आ पहुंचा: हम कब मिल सकते हैं, हाना? " उसने फिर से मोबाइल बंद कर दिया। अगर मैसेज बार-बार आते रहे, तो वह उन दो लड़कियों को क्या जवाब देगी? "कौन तुम्हें बार-बार संदेश भेज रहा है?" हर्षा बहुत परेशान हो गई थी और वह मोबाइल के साथ बाथरूम से चुपचाप लौटी और, इसे तकिया के नीचे रखकर सो गई, जैसे कुछ भी घटित नहीं हुआ हो।

नींद खुलते-खुलते शाम हो चुकी थी। भैरवी और नवीना अभी भी सो रही थीं। हर्षा ने तकिया के नीचे से मोबाइल निकाला। अल्बर्टो के मैसेजों का जवाब नहीं देने की वजह से उसे बहुत बुरा लग रहा था। पता नहीं वह इसे कैसे लेगा? वह अगली मुलाक़ात के समय के बारे में पूछ रहा था। उसका कम से कम उत्तर तो देना चाहिए था। वह उसकी चुप्पी पर नाराज भी हो सकता है। जिस क्षण उसने अपना मोबाइल खोला, उसके लिए एक मैसेज आया हुआ था : " आई केन नॉट वेट। आई नीड़ यू। आई एम वेटिंग फॉर यू। " शाम को साढ़े पांच बजे उसने मैसेज भेजा था। साढ़े सात होने वाले थे। हे भगवान! अब वह अल्बर्टो को कैसे शांत करेगी ? यदि वह इंतजार करते-करते थक-हारकर यहाँ आ गया तो ?

हर्षा ने उत्तर भेजा: "मुझे बेहद अफसोस है कि मैं मोबाइल को वाइब्रेशन मोड में रखकर सो गई थी। नींद खुलने पर मुझे तुम्हारा एसएमएस मिला। चिंता मत करो, हम निश्चित रूप से कल मिलेंगे। " मैसेज भेजने के बाद उसे थोड़ी राहत मिली।

उसने तीनों के लिए चाय तैयार की और फिर भैरवी और नवीना को नींद से जगाया। जब वे चाय-नाश्ते कर रहे थे, तभी दरवाजे पर खटखट हुई। हर्षा के दिल की धड़कन अचानक बढ़ गई। क्या यह अल्बर्टो था? हे भगवान! अगर वह पहुंच गया तो वह क्या करेगी?

नवीना ने उठकर दरवाजा खोल दिया। लांड्री वाले की छोटी बेटी भैरवी के इस्त्री किए कपड़े लाई थी। हर्षा को लगा कि वह बच गई ! उसे इतना डर क्यों लग रहा था? उसे यह डर दूर करना पड़ेगा। अन्यथा वह अकेले कैसे जी पाएगी? उसे मां के शब्द याद आ गए कि उसके ससुराल वाले बार-बार फोन करके उसे ले जाना चाहते है। वे समाज में कहीं भी अपना चेहरा नहीं दिखा पा रहे है। वह आदमी इस बीच सुधर गया है। बोल रहे हैं कि क्या हर्षा की पढ़ाई इतनी ज़रूरी है, इससे अच्छा यह नहीं है कि उसे टाटा भेज दें।

"तुम क्या सोच रही हो, हर्षा ? मैं तुम्हें कब से डॉ॰ सोम की किताब देने के लिए कह रही हूं, मगर तुम जवाब नहीं दे रही हो। तुम ठीक हो न ?" भैरवी की बात सुनकर शेल्फ से पुस्तक निकालकर उसे दे दी।
"मुझे नहीं पता है कि जिस दिन से तुम ओडिशा से लौटी हो उस दिन से तुम्हें क्या हुआ है? तुम कहीं खोई-खोई लगती हो। "
" ऐसा मत कहो, भैरवी। कभी-कभी बिना किसी कारण से बीमार और नीरस लगता हैं? आज पता नहीं क्यों, मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। "

"तुम्हारा पश्चिमी शिष्य कहां है? आजकल वह दिखाई नहीं दे रहा है, क्या वह अपने देश वापस चला गया है? "

भगवान जाने, जब से भैरवी आई है, तब से उसके पीछे पड़ गई है। शायद उसने पड़ोसी से कुछ सुना होगा, मगर उसकी हिम्मत नहीं हुई कुछ पूछने की।

"तुम बहुत अच्छी शिक्षिका हो। " नवीना हँसने लगी। " तुम्हें ये सारी बातें कैसे पता चली? क्या तुम दर्शन-शास्त्र में स्नातक हो ? "

"नहीं, मेरे दादा पंडित थे। "

"हे! हाँ, दर्शन तुम्हें विरासत में मिला है। यह तुम्हारे जीन में है। " भैरवी ने पूछा, " तुमने उसे इतना ज्ञान दिया हैं, क्या वह तुम्हें भविष्य में लिफ्ट नहीं देगा? "

"लिफ्ट, तुम्हारा क्या मतलब है? मैं नहीं समझी। "

"विदेश जाने का मौका, और क्या हो सकता है?"

"हम अलग-अलग विषयों का अध्ययन कर रहे हैं, तो वह मुझे क्या लिफ्ट देगा ?"

"मगर आदमी बहुत चालाक है, " भैरवी ने कहा। "वह तुमसे डाटा लेकर अपने नाम से लेख प्रकाशित करता है। हम दोनों बहुत पहले से इस बारे में जानते हैं, मगर हमने तुम्हें इसलिए नहीं बताया कि तुम्हें कहीं बुरा न लग जाए। "

भैरवी कितनी संकीर्ण दिमाग की और ईर्ष्यालु लड़की है! क्या अल्बर्टो जैसे विजिटिंग प्रोफेसर के लिए लाइब्रेरी में किताबों की कमी है, जो वह हर्षा से डाटा लेकर लेख प्रकाशित करेगा ?

"मेरे मौसा ने कहा था कि कई विदेशी भारतीयों के साथ ऐसी दोस्ती कर फायदा उठाते हैं। वे लोग बहुत चतुर होते हैं। "

भैरवी वास्तव में ईर्ष्या कर रही थी ? हर्षा को भैरवी का यह कथन वास्तव में पसंद नहीं आया। वह उसे कैसे समझा सकती है कि अल्बर्टो ने उसके अस्थिर, ध्वस्त, विध्वस्त मन में शांति प्रदान की? अगर अल्बर्टो उसके जीवन में नहीं आया होता तो उसका मनुष्यता से विश्वास उठ जाता। वह कैसे घोषणा कर

सकती है कि अल्बर्टो दरवाजे के बाहर खड़ा नहीं है, वह उसके हृदय के बहुत करीब पहुँच गया है? वह अल्बर्टो की मेधा, उसके प्यार, उसके लैटिन अमेरिकी रूप से प्रभावित थी। वह बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि अल्बर्टो उसका नहीं है। मगर उसने अकेलापन से उसे मुक्ति दिलाई थी। भैरवी से ऐसी बात की उम्मीद नहीं थी। पता नहीं क्यों, फिर से अजीब तरह का अकेलापन उसके भीतर छाने लगा। शायद वह इस अकेलेपन के साथ पूरा जीवन जीएगी।

9.

“हम आज कहां मिल सकते हैं अल्बर्टो ?" हर्षा ने डिपार्टमेन्ट से फोन पर उससे पूछा।

" आज मैं बहुत व्यस्त हूँ, हाना!”

“ तुम मुझसे नाराज हो, अल्बर्टो?”

बदले में अल्बर्टो ने पूछा, "नाराज क्यों ?"

“ कल तुमने मुझे इतने मैसेज दिए , मगर मैं किसी का जवाब नहीं दे पाई। ”
" अल्बी, आज क्या बिलकुल फुर्सत नहीं है?

" नहीं, मैं आज बहुत व्यस्त हूँ। ओके, बाय, आई हेव टू गो नाऊ। "

ऐसा लग रहा था जैसे अल्बर्टो ने दरवाजे को धड़ाक से बंद कर दिया था। वह कुछ परेशान हुई। ऐसा क्रोध क्यों? उसने इससे पहले कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया था। अचानक उसे ऐसा क्या हुआ ? उसने अपने काम के बारे में भी नहीं बताया। वह हर्षा से क्यों बच रहा था? कल वह उसे पागल की तरह क्यों खोज रहा था ? हर्ष को बहुत बुरा लगा। वह अब अपनी कक्षा में पढ़ाई नहीं करके बस से अपने कमरे में सीधे वापस आ गई। उसने पहले से ही सोच लिया कि वह उसे समझा-बुझाकर मना लेगी, वह अपनी पूरी कोशिश करेगी उसका गुस्सा मिटाने का। लेकिन अल्बर्टो ने उसे मौका नहीं दिया।

अल्बर्टो क्या सच बोल रहा था वह बहुत पजेसिव हो गई है ? उसे पहले ऐसी कोई चिंता नहीं होती थी। वे दो दोस्तों की तरह रह रहे थे। वे पौराणिक कथाओं पर प्रश्नोत्तरी खेल खेल रहे थे। शारीरिक संबंध ने दोनों के बीच के अंतर को जैसे कम कर दिया था। बौद्ध अल्बर्टो भूल गया था अपने बचपन का यौन-उत्पीड़न, वह सब-कुछ भूलकर एक महान प्रेमी बन गया था। हर्षा अपने कटु वैवाहिक जीवन को भूल गई थी, उनके दिमाग से बेजान कठोर पत्थर बनने की भावना मिट गई थी। किसी ने मानो उस मूर्ति में प्राण डाल दिए हो। छेनी के आघात से घायल मूर्ति, अब अपने प्रेमी के स्पर्श से उल्लसित थी। दोनों भूल गए थे पूर्व-पश्चिम का भेद। एक बार हर्षा ने पूछा था, ”मैंने सुना है , गोरे लोग हमें हीन दृष्टि से देखते हैं। तुम्हारे मन में कभी ऐसी भावना नहीं आई। डोंट यू नो ब्रोंज इज फैशन नॉट व्हाइट ?"

हर्षा स्वयं को सांत्वना देने लगी कि अगर अल्बर्टो गुस्से में है, तो रहे। वह एक-दो दिन में शांत हो जाएगा? उसे कहीं भी नहीं जाना था, इसलिए वह अपने गंदे कपड़े धोने के लिए बाथरूम में चली गई। वह सर्फ डालकर गंदे कपड़ों को भिगो रही थी, कि मोबाइल पर घंटी बजी। कपड़े धोना छोड़कर वह दौड़ गई; क्या अल्बर्टो का फोन? मुझे पता था कि वह मुझे छोडकर कभी भी अकेले नहीं रह सकता है। उसने मोबाइल उठाया। मगर ये कौनसे नंबर है ? ये तो अल्बर्टो के नहीं है। सीने के भीतर उठ रहा आनंद एक क्षण में अचानक धूमिल हो गया था। उदास मन से उसने मोबाइल अपने कान पर लगाया। मानो उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई हो। वह धड़ाक से खाट पर गिर गई। इस तरह की अप्रत्याशितता उसकी कल्पना से परे थी।

उसका पूरा शरीर कांप रहा था। वह ऐसी दोपहर को कहाँ जाएगी ? उसका यहाँ कौन है, जो उसे तीन-चार दिन छुपाकर रखेगा? उसने बार-बार माँ से कहा था कि उसका मोबाइल नंबर किसी को न दें। वह आदमी अब यहां आएगा। वह भैरवी और नवीना को क्या जवाब देगी? हम एक ही छत के नीचे एक साथ रहे, लेकिन तुमने कभी हमें बताया नहीं कि तुम शादीशुदा हो। क्या वे और कभी उस पर भरोसा नहीं करेंगे? अगर उनमें से किसी ने अल्बर्टो के बारे में उस आदमी को बता दिया, तो वह आदमी झमेला पैदा नहीं कर देगा? वह अल्बर्टो को कैसे मुंह दिखा पाएगी, अपने विश्वविद्यालय के सहपाठियों को भी ?

वह आदमी अचानक क्यों आ रहा है? क्या उसे किसी से कोई जानकारी मिली? क्या वह जबरन उसे ले जाएगा? बेशक, उसने फोन पर कुछ भी नहीं बताया। आदमी एक आतंक की तरह लग रहा था। वह भूल गई थी कि वह कपड़े धो रही थी। दुर्भाग्य उसे छोड़ने का नाम नहीं ले रहा था। ओडिशा क्या नजदीक है, जो वह भागकर घर के किसी कोने में छुप जाए।

उसने अल्बर्टो से संपर्क करने की कोशिश की। नहीं, अल्बर्टो ने अपना मोबाइल बंद कर दिया था। उसने बार-बार कोशिश की, लेकिन विफल रही। इस समय वह कहाँ जा सकती है? अगर अल्बर्टो वहां होता तो वह उसके साथ पार्क चली जाती और वह आदमी उसे पाए बिना लौट जाता। सीमा गुप्ता है बसंतकुंज में। क्या पता सीमा गुप्ता अभी विभाग से लौटी होगी? वृंदावन मौसा जी ? नहीं, उनका घर सही नहीं है। वह उसके स्थानीय अभिभावक है, उसके पिताजी के दोस्त भी। शायद पिताजी ने उन्हें उस आदमी के आने के बारे में सूचित कर दिया हो। वह निश्चित रूप से कहेंगे, "तुम्हारा पति आया है, तो यह कैसे हो सकता है कि तुम यहाँ रहो ?"

हर्षा ने कभी पहले इतना असहाय महसूस नहीं किया था। यहाँ तक कि जब वह उस आदमी के साथ रहती थी तब भी। हर्षा ने पुरी फोन लगाया। दूसरी तरफ से अपनी मां की आवाज सुनकर वह रोने लगी। उसकी मां क्या जवाब देती ? सुनकर उसे घुन लग गया हो जैसे। ऐसे समय वह क्या सलाह देती? उसका पति उससे मिलने आया है। वह उसे नहीं मिलेगी।

"माँ, तुमने उसे मेरा मोबाइल नंबर क्यों दिया?"

" भगवान की सौगंध मैंने उसे नहीं दिया। "
"तो उसे कैसे मिला ?"

" मेरी प्यारी बच्ची, तुम परदेश में हो, ऐसा उलटा-पुलटा कोई काम नहीं करोगी। तुम्हें बचाने के लिए वहाँ कोई नहीं आएगा। "

यह कहते हुए माँ ने फोन रख दिया। शायद वह चाहती थी कि हर्षा और उस आदमी में सुलह हो जाए। कौनसी मां अपनी बेटी की ऐसी दुःखद स्थिति देखना चाहेगी ?

हर्षा कपड़े बिना धोए बाथरूम में चुपचाप बैठ गई। उसके दिल की धड़कन बढ़ गई थी। उसका शरीर कांप रहा था? वह बीमार अनुभव कर रही थी। वह नहीं समझ पा रही थी कि क्या करें या क्या न करें ?

इतने दिनों के बाद वह आदमी फिर से उसके जीवन में क्यों लौट आया? जैसे कि वह दुर्भाग्य के चंगुल से बच नहीं सकेगी। उसके जीवन में आशा की किरणें जगी थी। भले ही, उसका गंतव्य अनिश्चित था। मगर था तो सुखद। वह उस आदमी का सामना कैसे करेगी ? सोचते-सोचते एक घंटा बीत चुका था। वह मूर्तिवत बैठी हुई थी। वह जानती थी कि इंतजार के अलावा कुछ भी नहीं किया जा सकता है।

आखिरकार वह क्षण आया, जब कॉलिंग बेल ने उस आदमी के आगमन का संकेत दिया। बेशक, वह यंत्रवत् दरवाजे की ओर बढ़ गई। वह जानती थी कि यह आदमी उसके सजे-सँवारे जीवन को बर्बाद कर देगा। वह जानती थी कि वह आदमी उसके ऊपर अपना हक जताएगी। हर्षा ने दरवाजा खोलकर अपने सामने दुर्भाग्य को खड़े देखा। बिना कुछ कहे उसे घर में आने की अनुमति दी। वह वहां खड़ी रही, लेकिन उसका दुर्भाग्य खाट पर बैठा हुआ था।

"चलो चलें, " उस आदमी ने कहा।

हर्षा ने कुछ नहीं कहा। वह आदमी उसे कहाँ ले जाएगा? क्या होटल के कमरे में, सिनेमा देखने या टाटा या ओडिशा ले जाएगा? वह उसके साथ कहाँ जाएगी ? पहली बार उस आदमी ने कहा है 'चलो''। क्या उसने पहले कभी साथ जाने के लिए बुलाया था? नहीं, उसकी चाल-ढाल बिल्कुल नहीं बदली थी, अभी भी बातचीत में वहीं अहंकार। वह उस आदमी पर कैसे भरोसा कर सकती है, जिसे उसने दो साल पहले छोड़ दिया है ? एक दिन में बदल जाती है, इसका इतिहास बदल जाता है और उसका भूगोल भी। इन डेढ़-दो वर्षों में हर्षा की दुनिया बदल गई थी। उसने अपने आपको दिल्ली की जीवन-शैली के साथ ढाल दिया था। आज उसने अपनी पहचान बनाई थी। क्या वह उस जगह वापस जाएगी, जिसे उसने दो साल पहले छोड़ दिया था ?

वह आदमी कहने लगा, "मैंने तुम्हें कब से फोन किया कि कपड़े पहनकर तैयार रहो, लेकिन तुम अभी तक तैयार क्यों नहीं हुई हो ?" उसकी भाषा में कोई बदलाव नहीं था; वही अधिकार जताने वाली भाषा, क्या वह हर्षा में आकाश-पाताल का फर्क नहीं देख पा रहा था?

हर्षा चुपचाप खड़ी रही, सिर झुकाकर पहले की तरह। उसने आदमी की तरफ एक बार भी नहीं देखा। उसने न तो 'हां' कहा और न ही 'नहीं', उस आदमी के साथ जाने के लिए। वह आदमी किसी भी समय झमेला कर सकता है। भैरवी और नवीना के आने का समय हो गया था। वह नहीं चाहती थी कि उनके सामने कोई नाटक हो। बिना कुछ बोले वह अपने कपड़े लेकर बाथरूम में चली गई। गंदे कपड़े अभी भी बाल्टी में ऐसे ही पड़े थे। उस आदमी ने कहा, "क्या मेरे सामने कपड़े बदलने में तुम्हें शर्म आ रही हैं?" और उसके चेहरे पर व्यंग्य की हंसी दिखाई दे रही थी। जो उसके शरीर को भेदकर अपनी झुंझलाहट व्यक्त कर रही थी। वह आदमी उसके कटाक्ष से उत्साहित हो गया। वह उठकर उसके साथ अभद्र आचरण करने लगा। उस आदमी को एक तरफ धकेलकर उसने बाथरूम बंद कर दिया। वह बालों में कंघी किए बिना बाथरूम से बाहर आ गई, उसने चेहरे पर पाउडर भी नहीं लगाया। उसने केवल इतना ही कहा; "चलिए चलते हैं"।

" ऐसे कैसे कपड़े पहनी हो? साड़ी नहीं पहनी ?" आदमी ने शिकायत भरे लहजे में कहा।
" नहीं, मैंने यहाँ साड़ी नहीं रखी है। "

" पुरी की लड़की, साड़ी-सिंदूर क्यों रखेगी ?"

हर्षा को बहुत गुस्सा आया। देखो तो, यह आदमी डॉक्टर होने के बावजूद भी किस तरह एक देहाती महिला की तरह बात कर रहा है। क्या साड़ी पहनना और सिंदूर लगाना जरूरी है ? क्यों लगाएगी सिंदूर वह, जब उसे वह आदमी स्वीकार नहीं है ? कुछ घटना घटने से पहले हर्षा कमरे से बाहर आ गई। इस आदमी को उसका पता कैसे मिला? किसने उसे घर का स्थान बताया ? उस आदमी ने आगे जाकर गली के मुहाने पर टैक्सी को हाथ दिखाया। वह चारों तरफ देख रही थी कि क्या भैरवी और नवीना लौट तो नहीं रही है। क्योंकि वह इस आदमी के साथ अपने रिश्ते को बताना नहीं चाहती थी। इसके विपरीत वह उसे एक दुःस्वप्न मानकर भूलना चाहती थी। जबकि दुःस्वप्न की उसके जीवन में पुनरावृत्ति हो रही थी।

हर्षा जल्दी से टैक्सी में जाकर बैठ गई। भैरवी और नवीना के आने से पहले वह इस जगह को छोड़ना चाहती थी। रास्ते भर किसी ने कोई बात नहीं की। वह उस आदमी से डर रही थी, हो सकता है कि वह प्रतिशोध ले। नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा, उसने खुद को अगले पल अपने मन को समझाया। अगर अल्बर्टो का फोन उस वक्त आ गया तो ? या एसएमएस भेज दिया: "हाना, आई नीड़ यू। "

वह जानती थी कि वह कहीं जाने की स्थिति में नहीं है। जाना तो दूर की बात वह अपनी स्थिति के बारे में अल्बर्टो को फोन से भी नहीं बता सकती थी। बस स्टेशन से पहले ही उस आदमी ने टैक्सी ड्राइवर को दाएं मुड़ने के लिए कहा। टैक्सी त्रिवेणी अपार्टमेंट से थोड़ी दूरी पर रुक गई। उसने हर्षा से उसके साथ आने के लिए कहा। हर्षा उस आदमी के पीछे-पीछे गई। वह आदमी उसे कहाँ ले जा रहा था? क्या वह टाटा से दिल्ली आया हैं?

वह यहाँ आने का उद्देश्य पूछना चाहती थी, लेकिन हिम्मत नहीं हुई। लेकिन वह उस आदमी के साथ लिफ्ट में चली गई। लिफ्ट रुकी चौथी मंजिल पर और वह उसके पीछे फ्लैट नंबर 406 में चली गई। दरवाजे पर नाम-पट्टी पर डॉ.पी. पुरी लिखा हुआ था और उसके नीचे डॉ.एम.आचार्य था। कॉलिंग बेल बजाते ही कुछ समय बाद दो लोगों ने एक साथ दरवाजा खोला और वे उन्हें 'वेलकम, वेलकम' कहते हुए भीतर ले गए।

क्या यहाँ आना पूर्व निर्धारित था ? तो फिर उस आदमी ने उसे बताया क्यों नहीं ?दोनों जाकर सोफे पर बैठ गए थे। डॉक्टर एम. आचार्य ने पूछा, "क्या यह आपकी बेटी है?" वह आदमी हंसते-हँसते लोट-पोट हो गया। डॉ. पुरी भी उनके साथ हँसने लगे, "नहीं, नहीं, यह उनकी पत्नी है। "

"सॉरी, सॉरी, दिखने में छोटी लड़की की तरह दिखती है, " एम. आचार्य ने कहा।

"इसमें सॉरी कहने की क्या बात है। श्रीमती महापात्र अभी भी जेएनयू में पढ़ रही हैं। "

धीरे-धीरे सभी तीनों अपनी प्रोफेशनल बातें करने लगे। हर्षा को बहुत खराब लग रहा था। इस बीच एक लड़की कुछ मिठाई और स्नैक्स देकर चली गई। डॉ. आचार्य ने अचानक देखा कि हर्षा चुपचाप उसे देख रही है। एक मधुर मुस्कान के साथ उन्होंने पूछा, "आपकी पढ़ाई कैसी चल रही है? आपके विषय क्या हैं?"

"जनर्लिज़्म, " उसने संक्षेप में उत्तर दिया।

" आप कहाँ रहती हो ? छात्रावास में? कभी-कभी यहाँ आ जाया करो। "

"नहीं, हम किराए के घर में तीन सहेलियाँ मिलकर रहती हैं। "

फिर वे तीनों अपनी मेडिकल स्ट्रीम की चर्चा करने लगे। वहाँ से लौटते समय शाम हो गई थी। वहाँ से विदा होते समय डॉ॰ पुरी ने उस आदमी की पीठ ठोककर फुसफुसाते हुए कहा, "तुम बहुत भाग्यशाली हो, तुम्हारी इतनी छोटी लड़की से शादी हुई है। "

नीचे उतर जाने के बाद उस  आदमी ने एक टैक्सी बुलाई। हर्षा कहने लगी, "बहुत देर हो चुकी है, मैं जा रही हूँ। "

उस आदमी ने अचरज से उसकी तरफ देखा: "क्या दूसरे आदमी के साथ जा रही हो?"

जब हर्षा अल्बर्टो के साथ होती तो वह अपने कमरे में बहुत देर से लौटती। उसे कभी असहज नहीं लगता। उसको कभी अल्बर्टो के साथ समय का भान नहीं रहता था। वह टैक्सी में अनिच्छा से जाकर बैठ गई। अपनी मुट्ठी में उसका हाथ लेते हुए उस आदमी ने कहा, " मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ। " उसने टैक्सी चालक को कनॉट प्लेस ले जाने का निर्देश दिया। वास्तव में वह समझ नहीं पाई कि अचानक उसे वह 'तू' से 'तुम' कहकर सम्मान से बुलाने के पीछे असली उद्देश्य क्या है? इसके अलावा, उसने अपनी मुट्ठी से उसकी हथेली को इतना ज़ोर से कसकर पकड़ा है, जैसे कहीं वह टैक्सी से बाहर कूदकर भाग न जाए। क्या वह आदमी तलाक चाहता है ? तब तो हर्षा सबसे ज्यादा खुश होगी। उसे उन्मुक्त जीवन मिलेगा।

वे कनॉट प्लेस में उतर गए। शाम के समय उस जगह थोड़ी भीड़भाड़ थी। वह एक रेस्तरां में उसके पीछे-पीछे चली गई। अगर अब उसने शराब पीना शुरू कर दिया  तो? वह सोचने लगी, वह उसे छोड़कर चली जाएगी, उस होटल के कमरे में  वह आदमी बेहोश पड़ा रहे। एक टेबल पर खुद बैठने के बाद  उसने पूछा क्या खाओगी, कहो।

"मुझे भूख नहीं है, " हर्षा ने कहा।

"लेकिन मुझे भूख लग रही है। " उसने हँसते हुए कहा। जैसे कि उसने हर्षा को तंग नहीं करने की शपथ खाई हो। उसने कई किश्तों में खाने के आदेश दिए। दोनों बैठे हुए थे, बीच में उसके मोबाइल की रिंग बजने लगी। क्या अल्बर्टो का फोन था? हे भगवान! इस समय वह क्या उत्तर देगी ? उसने अपने पर्स में से मोबाइल बाहर निकाला। उधर से अपने पिताजी की आवाज़ सुनकर वह चकित रह गई थी। पिताजी पूछ रहे थे - क्या डॉक्टर बाबू से मुलाक़ात हो गई ?

"हाँ, " उसने गंभीरता से उत्तर दिया।

"मेरी प्यारी बेटी, तुझे अब और क्या समझाऊँगा, तुम बड़ी हो गई हो। सोच समझकर निर्णय लेना। इस दुनिया में  खोना सहज है, मगर  इसे पाना बहुत कष्टकर है। मेरे आखिरी दिन करीब आ रहे हैं। मैं बूढ़ा हो गया हूं। तुम्हारा भाई  विदेश में बस गया हैं। तुम्हारी सहायता करने के लिए कौन है? तुम तो जानती हो, तुम्हारी बड़ी बुआ का क्या हाल था ? उसका जीवन कैसे गुजरा। अपने हाथ से अपने भविष्य की कब्र  मत खोदो। तुम्हारी माँ बहुत चिंतित थी, इसलिए मैंने फोन किया। भगवान जगन्नाथ, तुम्हारा मंगल करें! ठीक है रख रहा हूँ!"

उसे अपने पिता का फोन आने से बड़ा असहाय लग रहा था। वे उसे राजी भी कर रहे थे ? उसका रोने का मन हो रहा था। उसे लगा, उसके पीछे भयानक साजिश चल रही थी। उस आदमी ने दिल्ली आने से पहले हर्षा के माता-पिता को बता दिया था ? लगता है उनका मौन समर्थन था। पर क्यों? क्या वह वास्तव में उसके माता-पिता पर बोझ बन गई थी?  भाई तो उसकी पढ़ाई के लिए पैसे भेज रहा है, इसके अलावा, पिता ने खुद कहा था

कि अगर वह आगे पढ़ना चाहती है, तो पढे। वे अचानक कैसे बदल गए ? फिर, इस आदमी को देखो, वह कैसे उसका पीछा कर रहा है, जैसे उसे लड़कियां नहीं मिल रही हो।

हर्षा ने पूछा, "आप कुछ कहना चाहते थे, है ना?"

"यहाँ ?"  उस आदमी ने अचरज से उसकी तरफ देखा। "नहीं,  यहाँ नहीं। "

रात के खाने के बाद वह आदमी उसे कपड़ों की दुकान में ले गया और कहने लगा, " अपने लिए ड्रेस देख लो। "

"ड्रेस ?"

" तुम तो ड्रेस पहनती हो, साड़ी क्यों लोगी?" उस आदमी ने कहा।

"नहीं, मुझे इन चीजों की ज़रूरत नहीं है। न तो साड़ी और न ही ड्रेस। " अचानक वह आदमी इतना कैसे बदल गया ? इतना प्यार उछल रहा है ? वह सोचने लगी कि वह आदमी क्या कहना चाहता है, जिसके लिए वह तब से नाटक कर रहा है। नहीं, उसे उस समय कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। न उसके दोस्त के घर में, न तो रेस्तरां के डिनर में,  न ही एक नए ड्रेस खरीदने के प्रस्ताव में। वह केवल मुक्ति चाहती थी। उस आदमी ने अपनी पसंद से उसके लिए एक पोशाक खरीदी। तब दोनों टैक्सी में बैठकर बाहर चले गए।

हर्षा सोच रही थी कि वह उसे अपने कमरे में छोड़ देगा। लेकिन वह उसे किसी होटल के कमरे में ले गया। उसने सोचा कि वह उससे जरूर पूछेगा: "तुम्हारी परेशानी क्या है?  तुम वापस क्यों नहीं आना चाहती हो? तुम ऐसे कब तक अलग रहोगी? तुम्हारी मेरे प्रति क्या शिकायतें हैं, कहो? मेरे धैर्य की परीक्षा लेने की कोशिश मत करो।

जो भी हो, आज फैसला हो जाएगा। इतने लंबे समय से इंतजार कर रहे बम को आज फूटने का मौका मिल जाएगा। उसने मन-ही-मन आज संकल्प लिया कि मुंह से कोई ग़लत शब्द न निकले।

कमरे में पहुंचने के बाद उस आदमी ने दरवाजा बंद कर दिया। उसने अपनी शर्ट खोलकर हेंगर पर टांग दी। बिस्तर पर बैठकर वह कहने लगा, "तुम ऐसा क्यों कर रही हो जैसे किसी अजनबी के साथ आई हो? बैठो। "

हर्षा कुर्सी पर बैठकर पूछने लगी: "आप क्या कहना चाहते थे, कहो?"

"तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है? थोड़ा इंतज़ार करो। "

अलमारी से बोतल निकालकर वह बिस्तर पर बैठ गया। ढक्कन खोलकर दो-तीन घूंट पीकर उसने पूछा:
"तुम्हारी समस्या क्या है?"

हर्षा ने गुस्से में पूछा: " किस संबंध में ?"

वह आदमी बिल्कुल नहीं बदला था।

"टाटा जाने में। "

"मैं वापस नहीं जाऊँगी, " हर्षा ने दृढ़ता से जवाब दिया।

"क्या यहाँ तुम्हारा कोई प्रेमी है?" उसने फिर से दो घूंट शराब पी। हर्षा क्रोधित होने की बजाय शांत रही। जैसे कि किसी ने आग पर पानी डाल दिया हो। क्या इस आदमी के कान में भनक लग गई ? जिस आदमी ने दिल्ली में उसके रहने के स्थान के बारे में बताया होगा, उसने शायद अल्बर्टों के बारे में भी बताया होगा।

नशे की हालत में वह आदमी कहने लगा, "ठीक है, क्या कारण है?, "

हर्षा ने उत्तर नहीं दिया। उसके नथुने क्रोध से फड़फड़ा रहे थे। उस आदमी में बिलकुल भी बदलाव नहीं हुआ था। उसने उस पर भरोसा कर बहुत बड़ी गलती की थी। वह उठकर खड़ी हो गई और कहने लगी:"मुझे देर हो रही है, मैं जाऊँगी। "

बिस्तर से उठकर उस आदमी ने उसे अपने पेट के ऊपर खींच लिया। "हाँ, जाओगी, लेकिन इतनी जल्दबाजी क्यों हैं?" हर्षा के ऊपर पहाड़ की तरह बैठकर वह कहने लगा, "तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। मुझे अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है। "

उसकी जकड़ से खुद को मुक्त करते हुए वह कहने लगी, "हमारे लिए एक साथ रहना संभव नहीं है। "

उसकी छाती को अमानवीय और असभ्य तरीके से दबाते हुए उसने पूछा: " संभव क्यों नहीं है?"

यह कहते हुए वह उसके चेहरे पर अपने दांत गड़ाने लगा। उसने अपने होंठ उसके चेहरे पर इतने हिंस्र तरीके से दबाए कि उसके फेफड़े शराब की गंध से भर गए। उस आदमी ने उसे नंगा किया। लेकिन वह चिल्ला नहीं पाई। वह कोमल पत्ती की तरह नीचे गिर गई। आदमी उसे बेरहम तरीके से कुचलने लगा। उसके निचले अंग सुन्न होते जा रहे थे। उसकी शिरा-प्रशिरा अलग होती जा रही थी। ध्यान दिए बगैर वह आदमी उसे प्रत्येक आघात में खत्म करता जा रहा था। हर्षा बिस्तर पर बेजान पड़ी हुई थी। उस आदमी ने बची हुई व्हिस्की गटक ली। उसके नुकीले दांतों से हर्षा के होंठ दो भाग में कट गए। मानो मांसपेशियां बाहर निकल गई हो। हर्षा दर्द से कांप रही थी। वह उसकी बाहों को भूखे भेड़िए की तरह काट रहा था, जिसे लंबे समय से भोजन नहीं मिला हो। वह दर्द से कराह उठी, "हे माँ!"। इस आवाज से वह आदमी और अधिक उत्तेजित हो गया। वह उसकी जांघों पर चोट के ऊपर चोट लगाते जा रहा था। जैसे वह अपने भोजन की परख कर रहा हो।

हर्षा का दर्द उसके पास नहीं पहुँच रहा था। वह अपने जंगली जुनून के साथ उसके शरीर से खेलता रहा, जब तक वह पसीने से तर-बतर नहीं हो गया। आखिरकार वह बिस्तर पर केले के तने की तरह गिर गया। इधर चक्रवात से तबाह बगीचे की तरह हर्षा दिखाई दे रही थी। उसके बाल बिखरे हुए थे। उसके चेहरे पर रोने के भाव थे। तेज धूप में रेतीले समुद्र तट पर उन्मुक्त भाव से पड़ी हुई थी वह। कोई भी उसके शरीर को ढकने के लिए आगे नहीं आया। उसके हाथों पर सारी जगह दांतों की दो पंक्तियों के काटने के निशान बन गए थे। उसकी गर्दन पर जबरदस्त दर्द हो रहा था। उसका शरीर मिट्टी की अवांछित गीली गांठ बन गया था। घृणा से धिक्कारने लगे उसके प्राण।

वह धीरे-धीरे उठकर बाथरूम में गई। नल के पानी से उसने अपने पूरे शरीर को धोया। लेकिन शरीर पर बने निशान मिटाए नहीं जा सके थे और न ही वह रौनक लौट आई हर्षा के चेहरे पर। उसने अपनी आँखें धोई, आँसू और पानी एक-दूसरे में मिल गया। उसकी जांघों की धमनियों में खिंचाव हो रहा था। चलते समय जांघे दर्द कर रही थी। कमरे में आकर जमीन पर तकिये के पास से एक-एक कर अपने कपड़े इकट्ठे कर शरीर को ढक लिया। बिस्तर पर पड़ा हुआ था वह आदमी, पूरी तरह से अचेतन। कपड़े पहनकर दरवाजे की चिटकनी खोलकर वह कमरे से बाहर निकल गई। जैसे कोई कॉल गर्ल अपना काम पूरा कर लौट रही हो।

उसने जानबूझकर वह पोशाक वही रहने दी, जो उस आदमी ने उसके लिए खरीदी थी। भैरवी और नवीना को लौटे हुए काफी समय हो गया होगा। वे उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। वह किस तरह अपने चेहरे पर पूर्व प्रसन्नता ला सकती थी?

जैसे ही वह अपने घर पहुंची, तो नवीना ने पूछा: "क्या जीजू ने आपको बहुत घुमाया न ? हमें कल ट्रीट चाहिए, हम कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं है। वैसे, हम कब से एक साथ रह रहे हैं, मगर तुमने हमें जीजू के बारे में कभी बताया नहीं ? अगर वह तुम्हें खोजने विभाग में नहीं आते, तो हमें उनके बारे में बिल्कुल पता नहीं चलता। "

" सब चलता है। " भैरवी के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई "जीजू बहुत अच्छे आदमी है। "

हर्षा खाट पर बैठ गई। उसे रोने की भारी इच्छा हो रही थी। लेकिन उसे निरोला जगह कहाँ मिलेगी, जहां वह दिल खोलकर रोएगी ?

10.

तुम कहां हो, अल्बर्टो? तुम मेरी पहुंच से बाहर क्यों हो ? देखो, तुम्हारी हाना किस तरह छिन्न-भिन्न असहाय होकर पड़ी हुई है। देखो, किस तरह दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ रहा है। तुम मेरे इस दुर्दिनों में कहाँ गायब हो गए? क्या तुम अचानक मेरा देश छोड़कर चले गए? देश छोड़ने से पहले कम से कम मुझे कहकर तो जाते ?

हर्षा को रात में बहुत समय तक नींद नहीं आई। क्या अल्बर्टो को उस आदमी के आने के बारे में पता चल गया है? क्या उसकी घर में अनुपस्थिति के समय अल्बर्टो ने इस आदमी के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली थी? या क्या वह अभी भी नाराज है ?

निवृत्ति और प्रवृति के बीच लटक रहे विदेशी बौद्ध ने पश्चाताप की आग में जलकर क्या उसने खुद को हर्षा से दूर तो नहीं कर दिया ? नहीं, नहीं ... यह नहीं हो सकता। कम से कम वह खुद को चोर की तरह छुपा तो नहीं सकता। उस पर हर्षा का क्या अधिकार है, जिससे उसे अपने को छुपाना पड़े ? वह बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि वह एक गंभीर पढ़ाकू आदमी है। उसे भारत में आए हुए अभी तक एक वर्ष भी पूरा नहीं हो पाया था। मगर उसने पूर्व और पश्चिम के दर्शनशास्त्रों के तुलनात्मक अध्ययन पर पहले से ही एक पुस्तक तैयार कर ली थी। हर्षा ने देखा कि वह हमेशा शुरु-शुरू में शिक्षार्थी की तरह ध्यान लगाकर प्रत्येक शब्द को सुनता था। हर्षा द्वारा सुनाई गई कहानियों की सच्चाई को संदर्भ पुस्तकों में परखता था। अगर कुछ समझ में नहीं आता तो वह अगले दिन आकर पूछ लेता था। कभी-कभी उन दोनों के बीच तर्क-वितर्क भी होता था। इसलिए वह बिना किसी कारण के इस तरह छुप कर नहीं रह सकता।

वह आदमी फिर से कहीं बीमार तो नहीं हो गया या किसी अस्पताल या नर्सिंग होम में भर्ती तो नहीं हो गया? वह डायरिया से पीड़ित तो नहीं है, जैसे कि पिछली बार हुआ था।

हर्षा को नींद नहीं आ रही थी। थोड़ी देर पहले ही भैरवी और नवीना लाइट बंद कर सोने चली गई थी। वे अपना प्रोजेक्ट पेपर तैयार करने में लगी हुई थीं। उन्होंने उसे खाने के समय भी नहीं बुलाया था, हालांकि वह बिस्तर पर करवट बदलकर सो रही थी। क्या वे उसके बारे में बहुत कुछ बोल रही होगी ?, उस आदमी और अल्बर्टो को लेकर उनकी चर्चा बहुत ही रोचक बनी होगी ?उसके प्रति गंदी-गंदी टिप्पणी कर रही होगी? उसे खाने पर उन्होंने क्यों नहीं बुलाया ?

उस आदमी ने अचानक आकर जैसे तूफान की तरह सब-कुछ तबाह कर दिया। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह कहीं भाग जाए। लेकिन उसे लग रहा था कि वह जहां भी जाएगी, वह आदमी उसका पीछा करेगा। अल्बर्टो ऐसे खराब समय में उसकी सहायता करने के लिए वहां नहीं था। कौन जानता है कि कल सुबह वह आदमी यहाँ आकर झमेला न कर दे? हो सकता है, वह उसे टाटा जबरन खींच कर ले जाए ? किसको पता, कल क्या होगा ? ऐसा भी हो सकता है कि हर्षा चलती ट्रेन से बाहर कूद जाए। कौन जानता है, क्या होगा ?

हर्षा ने अपने पूरे शरीर पर दांतों की दो पंक्तियों के काटने के निशान देखें। वह भैरवी और नवीना से कल दिन के उजाले में उन्हें कैसे छिपाकर रखेगी ? वह क्या जवाब देगी, उनकी मजाकिया टिप्पणियों का ? क्या उस आदमी का नशा उतर गया होगा ? क्या वह उसे खोज रहा होगा ? हर्षा को पास में न देखकर क्या वह चिंतित हो उठेगा ? नहीं, चिंतित कभी नहीं, लेकिन वह क्रोध से पागल तो नहीं हो जाएगा ?

नहीं, उसका नशा उतरा नहीं होगा, अन्यथा अभी तक उसने फोन पर उसे धमकी दे दी होती: "तुम बहुत स्मार्ट हो गई हो? बिना कुछ पूछेअकेली चली आई ? तुम्हारा सतीत्व नष्ट हो जाता, मेरे साथ रात गुजारने से?" नहीं, तो वह आदमी यहां पहुंचकर सब-कुछ उगल देगा?उसके अतीत जीवन, उसके पति को छोड़कर आने की कहानी। क्या उसे भैरवी और नवीना के सामने और छोटा होना पड़ेगा? उन्हें कल रात की यंत्रणा कैसे समझ में आएगी ? वह उसके विरोधाभासी अनुभवों को कैसे समझ पाएगी ? कभी-कभी इस शरीर पर कविता की सुंदर पंक्तियाँ लिखी जा सकती है, तो कभी-कभी इस शरीर पर तेज चाकू से रेखाएँ खींची जाती है।

हर्षा चुपचाप उठकर बाथरूम में चली गई। अल्बर्टो से संपर्क करने की आशा के साथ आधी रात को मोबाइल ऑन कर दिया। उधर फोन में रिंग बजने लगी। "मोबाइल उठाओ, अल्बर्टो। मेरे दुर्दिन में चुप मत रहो। हम दोनों ने एक नया जीवन गढ़ा है। अगर हम एक-दूसरे से नहीं मिलेहोते तो हम स्वर्गिक सुख से वंचित हो जाते। पांच साल की उम्र में पैदा हुए उस दर्दनाक अनुभूति से तुम्हारा सारा जीवन उबर नहीं पाता, अगर तुम इस सुख से वंचित हो जाते तो, शायद तुम पलायनवादी होते और औरतों को निवृति मार्ग की कहानी सुनाते। तुम्हारा यह जीवन व्यर्थ चला जाता। अल्बर्टो, मैंने तुम्हारे अधरों पर मुस्कुराहट लाई। तुम्हारी वह मधुर मुस्कान मैं कभी नहीं भूल सकती। तुमने मुझे पत्थर से इंसान बनाया है। देख, कल रात किस तरह मेरे शरीर की हरी पत्तियों, फूलों और फलों का सुंदर उद्यान पूरी तरह से नष्ट हो गया। अल्बर्टो, फोन उठाओ, क्या तुम इतनी गहरी नींद में हो?"

वह सो नहीं सकी ; रात भर दर्द होता रहा। दरवाजे की ओट से भोर का प्रकाश दिखाई देने लगा था। धीरे से दरवाजा खोलकर वह बालकनी में खड़ी हो गई। आसमान अभी तक गोबर पुते हुए आँगन की तरह दिख रहा था। सुबह-सुबह घूमने वाले कुछ लोग दिखाई दे रहे थे। फिर वाहनों ने सड़कों पर चलना शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे आसमान साफ हो रहा था। दिन के उजाले से वह और डरने लगी थी। यदि वह आदमी सुबह-सुबह यहाँ पहुंच गया, तो वह कहाँ जाएगी, कहाँ छुपेगी ?

हर्षा बाहों और गर्दन पर बने निशान बहुत ही अश्लील लग रहे थे। उसे रोने का मन हो रहा था। वह अपने कमरे में लौट आई और अलमारी से लंबी पोशाक बाहर निकाली। कड़ाके की सर्दी की सुबह में भी वह बाथरूम में चली गई, नहाने के लिए। भैरवी नल से पानी गिरने की आवाज़सुनकर जाग गई। खाट के नीचे से तानपुरा बाहर निकाल कर वह रियाज़ करने बैठ गई। नवीना के खांसने और चिड़चिड़ाने की आवाज सुनाई दे रही थी। नींद में व्याघात होने से वह शायद नाराज़ हो गई थी। दिल्ली में दुर्गा पूजा के बाद थोड़ी-थोड़ी ठंड पड़ने लगती है। इसलिए सुबह उठना कष्टप्रद होता है। नवीना के झुंझलाहट की परवाह किए बगैर भैरवी तानपुरा पर स्वर निकालने शुरू किए। इधर साबुन और तेल लगाकर हर्षा दाग मिटाने की कोशिश कर रही थी। नहीं, ये दाग नहीं मिटेंगे। हर्षा ने शरीर पोंछते हुए लंबे बाजू वाली पोशाक पहन ली।

हर्षा देवताओं के सामने धूप-अगरबत्ती जलाकर सभी के लिए चाय तैयार करने लगी। आँखें मलते हुए नवीना ने पूछा, " सुबह-सुबह जीजू के पास जा रही हो? तुम रात को वहां रुक जाती। "

"नहीं, मैं सुबह जल्दी उठ गई, इसलिए नहाने चली गई। "

हर्षा ने अपने गीले बाल पोंछे। तानपुरा को एक तरफ रखकर भैरवी चाय का कप उठाकर बिस्तर पर बैठ गई:"आज जीजू को यहां लेकर आना, " उसने कहा।

"नहीं, यह संभव नहीं है। वह कह रहे थे आज वापस जाने के लिए। इसके अलावा, मुझे अपना प्रोजेक्ट पूरा करना है। शायद पूरा दिन लग जाए। "

"तुमने तो अपने प्रोजेक्ट के बारे में बताया नहीं ? वह तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता है। बेचारे को क्या पता, तुम किसी और की संपत्ति हो। ”

“हे भगवान! घूम-फिरकर बात वहीं आ जाती है?” हर्षा ने कहा: "आज मैं कुछ नहीं खाऊंगी, मैं तुम्हारे लिए खाना बना देती हूँ। "

"नहीं, तुम जाओ, इसके बारे में चिंता मत करो, हम देखेंगे। "

उस समय आठ बजने जा रहे थे, हर्षा को आशंका थी कि वह आदमी किसी भी वक्त वहाँ पहुंच सकता है। उससे पहले उसे घर छोड़ना पड़ेगा। लेकिन सुबह-सुबह वह कहाँ जाएगी ? उसने पहले से कुछ भी योजना तैयार नहीं की थी। उसे बचने के लिए एक अज्ञात जगह की जरूरत थी। वह वृंदावन मौसा के घर जाने के बारे में सोच रही थी। वह आदमी उस जगह को कभी खोज नहीं पाएगा। अगर अल्बर्टो होता तो कितना अच्छा होता! वह उसके साथ कुछ दिनों के लिए दिल्ली से बाहर चली जाती। मगर अल्बर्टो इतना नाराज है ? तीन-तीन एसएमएस का जवाब तक नहीं दिया, उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। मिलने पर उससे पूछेगी हर्षा:" तुम युधिष्ठिर हो? क्या युधिष्ठिर को कभी इतना गुस्सा आता है? इसके अलावा, तुम्हारे वायदे का क्या हुआ ? छोटी-सी बात पर अपना वायदा तोड़कर तुम चुपचाप बैठे हो? मैं बहुत बुरे समय से गुजर रही हूं। दुर्दिन में काम आने वाला ही सच्चा दोस्त है। तुम्हारा पसंदीदा खेल गोल्फ है और मेरे शरीर पर देख ये सब गोल्फ के हरे भरे मैदान? इतना जल्दी खत्म हो गया तुम्हारा गोल्फ का आकर्षण?”

हर्षा ने पर्स में पैसे रखे, कैमरा रखा और कहा, “मैं जा रही हूँ। ”

भैरवी को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, " सुबह इतनी जल्दी?"

"मुझे जाना होगा। " कहकर हर्षा बाहर निकल गई। गली के मोड से वह ऑटो रिक्शा में अल्बर्टो के घर की तरफ गई। उसका घर ज्यादा दूर नहीं था। अल्बर्टो के घर पर ताला लगा हुआ था। कहाँ अन्तर्धान हो गया वह ? क्या किसी जरूरी काम से अपने देश चला गया ? हर्षा को उसका अंतिम एसएमएस याद आया:"मैं इंतजार नहीं कर सकता, मुझे आज तुम्हारी ज़रूरत है। मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूं। "

वह क्यों इंतज़ार कर रहा था? क्या वह कुछ कहना चाहता था? कहना होता तो परसो जब हर्षा ने फोन किया था, वह उसे निश्चित रूप से बता सकता था ? नहीं, वह जानबूझकर चुप है। नहीं तो वह चाहे कभी भी हो, बता सकता था ? अल्बर्टो के पड़ोसी नाइजीरियन स्कॉलर को क्या उसके बारे में कुछ जानकारी होगी ? हर्षा को उससे अल्बर्टो के बारे में पूछने के लिए थोड़ा संकोच हो रहा था। उसने संक्षिप्त पत्र लिखकर अल्बर्टो के लेटर-बॉक्स में डालकर चली गई।

अब वह कहाँ जाएगी ? पूरे दिन कहाँ घूमेगी ? उसने वृंदावन मौसा के घर की तरफ रिक्शा मोड़ा। वे नार्थ में रहते थे। वह जगह बहुत दूर थी। ऑटो रिक्शा निश्चित तौर पर अधिक किराया लेगा, मगर उसे जाना पड़ेगा। उसके पास और कोई रास्ता नहीं था। उसके ठाट-बाट देखकर भैरवी और नवीना कहेगी "तुम्हारे पास क्या कमी है, तुम्हें तो डॉलर मिलते हैं। अगर हमें मिलते तो हम स्टार होटल में खाना खाते;नहीं तो आधा पैसा जाता डिस्कोथेक्स में और आधा बुटीक में। "

हर्षा ने अपना मोबाइल बंद कर दिया, उस आदमी के खातिर। वह जानती थी कि अल्बर्टो भी उसे खोज सकता है, लेकिन उसके पास कोई अन्य विकल्प नहीं था। वह जानती थी कि वह जो भी कर रही है, ठीक नहीं है। उस आदमी से कितने दिन छिपती फिरेगी ? अगर वह एक दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक इधर-उधर भटकती रहेगी तो क्या वह दया करके उसे मुक्त कर देगा ? दूसरी तरफ, क्या वह ज्यादा क्रोधित तो नहीं हो जाएगा?

वह आदमी उसे छोड़ क्यों नहीं रहा है? क्या उसके लिए लड़कियों की कमी है? उसके छूते ही रोगी ठीक हो जाते है। यदि वह चाहेगा तो कल ही उसे बहुत सारी लड़कियां मिल जाएगी। एक बार केवल वह कह देता:"हर्षा, जाओ, तुम्हें मैं मुक्त करता हूं। "

हर्षा बहुत अच्छी तरह जानती थी कि ऐसा कुछ भी नहीं होगा। उस आदमी ने अपनी मर्दानगी का प्रचंड आघात किया, उसे अपने जीवन से भगाने के लिए। मगर वह अभी भी उसका कारण समझ नहीं पाई। कभी-कभी हर्षा को लगता है : जो कोई भी सुनेगा, वह कहेगा कि पति ऐसे ही होते हैं। दे आर मास्टर, दे फील लाइक सो। उनमें अधिकार भाव होना एकदम स्वाभाविक है। इसके बिना क्या पति, पति जैसा लगेगा ? आजकल कौन नहीं पीता है? कलाकार तक ? किसी को छोड़ने का यह कोई कारण है? क्या इस कारण से कोई लड़की अपने पति के साथ नहीं रहेगी ? सिर्फ इसलिए कि वह पीते हैं? हर्षा कभी भी किसी को मुख्य कारण नहीं समझा पाएगी।

दुनिया में बहुत सारी खूबसूरत चीजें हैं, जिसका किसी को उपहार दिया जा सकता है। दे सकते है नरम हाथों का स्पर्श, एक मुट्ठी भर चांदनी रात। सुना सकते है झरने के कल-कल नाद की तरह प्रेम कविता। दे सकते है आकाश जैसा आश्रय, बाहों का सुरक्षा कवच, लिख सकते है बांवरे कवि की तरह अधरों पर कविता।

तुम उस आदमी को तलाक क्यों नहीं दे देती? अल्बर्टो ने कई बार पूछा था "मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि तुम क्यों इस बात के लिए मानसिक पीड़ा भोग रही हो। जब रिश्ता मर गया है, तो तुम इसे क्यों खींच रही हो? तुम न्याय के लिए अदालत में क्यों नहीं जाती हो, तुम अपनी जिंदगी क्यों खराब कर रही हो ?"

"यदि यह संभव हो गया होता, तो क्या मैं सारा जीवन 'सिसफस' पत्थर ढोती रहती ? हमारी भारतीय जीवन-शैली तुम्हारे देश की तरह नहीं है, अल्बर्टो। जब मेरी शादी दादाजी की इच्छा से हुई, उस समय मेरी उम्र बीस साल भी नहीं हुई थी। क्योंकि वह अपनी मृत्यु से पहले अपनी नातिन की शादी देखना चाहते थे। अब मेरे पिताजी चाहते है कि मैं उस आदमी से अलग न होऊँ। क्योंकि वे बूढ़े हो गए है। उन्हें उम्मीद है कि एक-न-एक दिन मैं मैच्योर हो जाऊंगी। जीवन जीने के गणितीय सूत्र समझ पाऊँगी और फिर उस दिन निश्चित रूप से उस आदमी के पास लौट जाऊँगी। मेरे कारण उन्हें और अपमान सहना नहीं पड़ेगा। "

आश्चर्य चकित होकर अल्बर्टो उसकी तरफ देखता रहा और कहने लगा,

" भारतीय लोग बहुत भावुक होते हैं? "

"और क्या पुर्तगाली लोग भावुक नहीं होते हैं?"

"नहीं, ऐसा नहीं है, हम कभी भी अपनी इच्छा-अनिच्छा दूसरों पर नहीं थोपते है। मेरा देश पूरे पश्चिमी यूरोप का सबसे रूढ़िवादी देश है, लेकिन किसी भी व्यक्ति की पसंद-नापसंद, गोपनीयता रक्षा में सभी को पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त है। "

विभिन्न मुद्दों पर दोनों के बीच में भारी बहस होती थी और फिर वे एक-दूसरे से विदा लेते थे। ऑटो वाले की आवाज से हर्षा यादों की दुनिया से लौट आई। अपार्टमेंट गेट के पास वह उतर गई। अगर वृंदावन मौसा ने पूछ लिया " इतनी सुबह-सुबह?" तो वह क्या जवाब देगी? रविवार होता तो वह बहाना भी बना सकती थी। सीढ़ियों पर चढ़ते समय उसने सोच लिया था, जो होगा सो देखा जाएगा। इतनी दूर आई है तो और नहीं लौटेगी। यदि मौसी उसे मिलेगी तो वह अपनी डायरी से अपनी कविताएं सुनाएगी। कविताएं पुरानी है और किसी भी संदर्भहीन भी, लेकिन कम से कम कुछ समय तो कट जाएगा।

कॉलिंग बेल की आवाज सुनकर मौसा ने दरवाजा खोला। वह उसे देखकर आश्चर्यचकित होकर पूछने लगे, "तुम यहाँ ? डॉक्टर बाबू चले गए ?"

"तुम्हारे पिताजी ने कल मुझे फोन किया कि डॉक्टर बाबू यहाँ आए हुए है। "

मौसा की बात सुनकर हर्षा का चेहरा अचानक काला पड़ गया। वह स्तंभित रह गई। उसे लगा कि पूरी दिल्ली पर एक बड़ा जाल फैला दिया गया है। वह जिस दिशा में भी दौड़ेगी, उस जाल के भीतर फँसेगी ही फँसेगी।

11

मौसा के घर जाना उसकी गलती थी। कुछ समय बाद मौसा ने पिताजी को संदेहवश फोन किया था। पता नहीं कि उनकी क्या बातचीत हुई, मौसा ने उससे पूछा कि क्या तुमने अपना मोबाइल बंद कर दिया है? तुम्हारे पिताजी और डॉक्टर बाबू फोन करते-करते थक गए है?

हर्षा ने झूठ बोला, "मैं सुबह मोबाइल स्विच-ऑन करना भूल गई थी", और वह मोबाइल चालू रखने के लिए मजबूर हो गई थी। कहीं वह आदमी मौसा के घर न आ जाए, सोचकर हर्षा ने मोबाइल पर बातचीत करने का नाटक किया और फिर कहने लगी: "मौसी, मैं जा रही हूँ, वे मुझे बुला रहे हैं। "

उस समय मौसी अपनी कविता वाली डायरी लेकर बैठी हुई थी। कहने लगी, "तुम डॉक्टर बाबू को यहाँ क्यों नहीं बुलाती हो ?"

"नहीं, मौसी, वे मुझे अपने दोस्तों के घर ले जाना चाहते हैं। "

"सच कह रही हो? नहीं फोन लगाओ, मुझे उनसे बात करनी है। वे हमारे घर क्यों नहीं आए?"

"मैं उनको दोपहर को यहां लाऊंगी। " यह कहकर वह मौसा के घर से निकल गई। वापस जाते समय रास्ते में अल्बर्टो का फोन आया: "हाना, मैं वापस आ गया हूँ। हम आज कहां मिल सकते हैं? "

"हे, अल्बर्टो, तुम अब तक कहां थे? मैं तुम्हें खोजते-खोजते पागल हो गई हूँ। तुम्हें कहीं जाने से पहले मुझे बताकर नहीं जाना चाहिए ? "

"क्या तुम मेरे लिए चिंतित थी? पर क्यों?"

हर्षा ने अपने प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। बल्कि उसने पूछा: "क्या तुम अभी खाली हो ? अगर तुम्हारा कोई अन्य कार्यक्रम नहीं है, तो मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ। "

"हां, आओ, हाना। मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूं; मुझे बहुत कुछ कहना है। "

मन-ही-मन हर्षा बहुत उत्साहित हो गई। वे लंबे समय से नहीं मिले थे, जिस दिन से अल्बर्टो ने एसएमएस भेजा था, "मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, मैं तुम्हें चाहता हूं", और हर्षा ने उस एसएमएस का जवाब नहीं दिया, तब से अभी तक उनकी मुलाक़ात नहीं हुई थी। उसे राहत महसूस होने लगी थी कि कम से कम उसे सिर छिपाने की जगह तो मिल गई।

वह सीधे अपने मौसा के घर से अल्बर्टो के पास पहुंची। उसने कहा: "क्या तुम्हें पता है, आज सुबह मैं यहाँ आई थी ?"

"हां, मुझे लेटर-बॉक्स से तुम्हारा कागज मिला है। हाना, मुझे इन दिनों बहुत मज़ा आया। "

हर्षा ने मन-ही-मन कहा, 'हां, तुम्हारे लिए अच्छा समय था, लेकिन यहां मैं बहुत दुखी हूं। '

"ठीक है, मुझे बताओ, तुम कहाँ गए थे? अचानक तुम कहाँ गायब हो गए? "

"मैं बहुत व्यस्त था। मुझे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भाषण देना था, उसके लिए तैयारी कर रहा था। "

"ठीक है, मगर मुझे तो कह सकते थे। "

"नहीं कहकर जाना क्या गलती थी ?"

अल्बर्टो कितनी सहजता से बोल रहा था जैसे कि कुछ नहीं हुआ हो। हर्षा ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

"तुमने यह नहीं पूछा कि मेरा कार्यक्रम कैसा रहा ?"

" कैसा था?" उसने निरुत्साहित होकर पूछा।

"बहुत अच्छा था। तुम्हें पता है, हाना, मुझे आश्चर्य हुआ जब मेरी उससे मुलाकात हुई। ओह, वह अद्भुत थी। मैं उसके ज्ञान से मोहित हो गया था, " अल्बर्टो ने गदगद होकर कहा था "बनारस को वह जितना जानती है, मेरे हिसाब से किसी भी किताब में ऐसा नहीं मिलेगा। कितनी प्रकांड पंडित! शंकरचार्य से लेकर अघोरी साधक तक , किसे नहीं जानती है वह? उसने मुझे एक दिन 'अघोरी साधक' के पास ले जाने का वादा किया है। ”

हर्षा का दम घुटने लगा। उसने यह नहीं पूछा कि वह कौन थी? क्या वह यह सब सुनने के लिए आई थी ?

"यू आर वंडरफूल" – कितनी बार अल्बर्टो ने कहा होगा उसके लिए। अब वह कहता है, "शी इज वंडरफूल। " इसका मतलब अल्बर्टो कभी भी उसका नहीं हुआ था। आज तक वह भ्रम में रह रही थी। उसकी पूछने की इच्छा हो रही थी: "तुम तो अक्सर कहा करते थे कि हम दोनों एकमात्र सपने देखने वाले हैं। हम केवल सपने देखते हैं एक- दूसरे के लिए। मगर अब मुझे अकेला छोड़कर कहाँ जा रहे हो ? अल्बर्टो, किसी और की बार-बार मेरे सामने प्रशंसा न करें। मैं आहत हूं। मैं केवल तुम्हें चाहती हूँ। मुझे पता है कि तुम्हारे देश में तुम्हारी सुंदर पत्नी है। उसका तुम्हारे ऊपर हक हैं। मैं कभी भी उसका हिस्सा नहीं लूँगी। लेकिन जब तक तुम मेरे देश में हो, मैं चाहती हूं कि तुम मेरे साथ रहो। इस तरह कहते जाओ : 'यू आर वंडरफूल, हाना; आई नीड़ यू, आई मिस यू। ' क्या तुम जानते हो, अभी मैं बहुत बुरे समय से गुजर रही हूं? वह आदमी पागलों की तरह मुझे खोज रहा है। ऐसे समय तुम मुझे कह रहे हो कि शी इज वंडरफूल? क्या तुम किसी नारी के मन को नहीं पढ़ सकते हो? क्या तुम उसकी ईर्ष्या को नहीं जानते हो? क्या तुम एक महिला के प्यार का अंदाज नहीं लगा सकते हो ? "

अल्बर्टो ने कहा “ मैं सारनाथ गया था। अब मैं बनारस जाना चाहता हूँ। तुम जानती हो हाना, वहाँ बहुत कुछ खुराक है। भारतीय दर्शन और संस्कृति जानने के लिए। सच कह रहा हूँ, अगर मैं बनारस नहीं गया होता तो बहुत बड़ा अवसर हाथ से निकल जाता। ”

हर्षा उस आदमी के बारे में और कुछ नहीं कह सकी। न ही वह उसे किसी जगह पर ले जाने के लिए कह पाई। वह उसे अपने शरीर पर चोट के निशान भी नहीं दिखा पाई। वह यह नहीं बता पाई कि हम किसी अज्ञात जगह पर चले जाएँ। उसे लग रहा था कि अल्बर्टो किसी का नहीं है। न उसका और न ही बनारस में मिली महिला का। वह स्वार्थी है, अपने दर्शन-पिपासा की तृप्ति के लिए।

" क्या हुआ हाना, तुम उदास लग रही हो। "

“नहीं, तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। "

अपने निचले होंठ को दबाते हुए अल्बर्टो ने कहा: " मैं तुम्हारी भावनाओं को समझ सकता हूं कि मैं तुम्हें बताए बिना चला गया, इसलिए तुम दुखी हो। हाना, नाराज होने की कोई बात नहीं है। तुम बहुत अच्छी तरह से जानती हो कि भारत मेरी कमजोरी है। इसलिए जब भी मुझे मौका मिलता है, मैं इसे खोना नहीं चाहता। "

हर्षा ने अब जाकर अपनी चुप्पी तोड़ी: "नहीं, अल्बर्टो, तुम वास्तव में भारत को प्रेम नहीं करते हो, बल्कि एक जिज्ञासा और रोमांटिक आकर्षण के कारण तुम्हारा लगाव है। पता है, भारत के शहरी लोगों का गांवों के बारे में रोमांटिक आइडिया है। वे गांव पर कविताएं लिखते हैं और उन पर फिल्मों का निर्माण करते हैं। अपने ड्राइंग रूम में बैठकर वे गांव की प्राकृतिक सुंदरता और उसके जीवन पर आधारित फिल्मों का आनंद लेते हैं। ग्रामीण लोग सरल होते हैं; शहरी लोग ग्रामीण जीवन की सराहना करते हैं क्योंकि वे जीवन के तनाव से मुक्ति चाहते है। लेकिन विडंबना है, क्या उनमें से कोई भी गांव में रहना पसंद करता है? तुम पश्चिमी लोग भी ठीक उसी तरह हो। तुम भारत को साँपों का देश, जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, बहुत से देवी-देवताओं का देश मानते हो। तुम उसकी मिट्टी और कीचड़, उसकी गरीबी और निरक्षरता पर चर्चा करना चाहते हो। तुम यहाँ के मिथकों पर, दार्शनिक शिक्षाओं और प्राचीन इतिहास पर गहन अध्ययन और शोध करना चाहते हो, लेकिन क्या तुम वास्तव में इस मिट्टी से प्यार करते हो? पूर्व हमेशा पूर्व होता है, और पश्चिम हमेशा पश्चिम होता है। तुम हमारी भावनाओं और दुःखों को गहराई से कभी नहीं समझ सकते हो, न ही तुम्हारी ऐसा करने में कोई रुचि हैं।

तुम्हें याद है कि एक बार हम उत्तर-आधुनिकता पर चर्चा कर रहे थे? यदि मानव के सारे विभव का व्यावसायीकरण किया जाता हैं तो क्या-क्या समस्याएं पैदा होंगी, इस पर तुमने प्रकाश डाला था। आखिरकार, तुम दर्शन के शोधार्थी हो, लेकिन यह मामूली बात कैसे नहीं समझ पाए कि मनुष्य की संवेदना और अनुभूति की खरीद-फरोख्त नहीं हो सकती है?

आज मैं बहुत अच्छी तरह से समझ गई हूँ कि तुम्हारी मानसिकता झूठी है। तुमने हमेशा इस देश को अपने दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है। यही कारण है कि तर्क-वितर्क के दौरान तुमने कहा था, भगवद् गीता हिंसा में विश्वास करती है। प्रेम में अंधी होने के कारण मैंने उस दिन तर्क में हार मान ली। भगवद् गीता का सार तुम्हारे लिए कोई मायने नहीं रखता है, अल्बर्टो, इसकी नई व्याख्या करना ज्यादा महत्वपूर्ण है। क्या तुम्हें याद हैं, एक बार मैंने श्रीमद भगवद गीता की तुलना अस्तित्ववाद के साथ की थी ? मैंने कहा था कि काम्यू का ‘मिथ ऑफ़ सिसिफस’ और भगवद गीता दोनों एक ही विषय पर विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करते है। काम्यू ने ‘मिथ ऑफ़ सिसिफस’ में सवाल उठाया है: 'अगर चारो तरफ दर्द की धूल उड़ती हो तो मनुष्य आत्महत्या क्यों नहीं करेगा ? 'अर्जुन का गीता में सवाल है:' अगर मनुष्य इच्छा की पूर्ति होने पर भी शांति नहीं है तो उसे जीवित रहने से क्या फायदा ? ' दोनों अलग-अलग तरीकों से जवाब खोज रहे थे। मेरे तर्क को

तुम स्वीकार नहीं कर पाए। तुमने तिलक और गांधी के निबंधों का हवाला देते हुए कहा था कि वास्तव में भगवद गीता ब्राह्मणों के लिए वर्णवाद में आस्था जगाने और क्षत्रिय को युद्ध के लिए प्रेरित करने की शास्त्रीय व्याख्या है। उस समय मैं नहीं समझ सकी। अब मुझे एहसास हुआ है कि अस्तित्ववाद को तुम अपनी संपति मानते हो। इसमें पूर्व की दखल तुम्हें पसंद नहीं है। तुम पूर्वी दर्शन की कहानियों में आश्चर्य के तत्व और अंधविश्वास के तत्व को खोजना चाहते हैं, लेकिन आधुनिकता नहीं। तुम्हारी धारणा यह है कि हम लोग आधुनिकता से बहुत दूर हैं। तुम हमें प्रागैतिहासिक काल के मानव मानते हो। तुम्हें याद है, अल्बर्टो, एक दिन तुमने कहा था कि "उद्यान" संस्कृति हमारे लिए अंग्रेजों की देन है? मैं तुम्हारी बात से सहमत नहीं हो सकी। मैंने ऋषि कन्व के आश्रम के सुंदर उद्यान का उदाहरण दिया था। तुम सहमत नहीं थे। तुमने तर्क दिया था कि 'आश्रम' के उद्यान और ये उद्यान समान नहीं हैं। असल में तुम यह बात मानने के लिए तैयार नहीं हो कि पूर्व को पश्चिम से किसी भी तरह से आगे हो जाए। तुम हमेशा पूर्व को पश्चिम का ऋणी मानते हो।

कल तुम मुझे 'वंडरफूल' कह रहे थे, लेकिन आज किसी और को। यदि कल कोई तुम्हें दक्षिण के मंदिरों के इतिहास के बारे में बताता है, तो तुम उसके पीछे चले जाओगे। तब तुम उसे भी ' वंडरफूल' कहोगे। तुम्हारे लिए 'वंडरफूल' शब्द केवल वर्णमाला के कुछ अक्षरों का एक समूह है। क्या तुम्हें कभी इस शब्द की संवेदना और अनुभूति का अहसास हुआ ?"

हर्षा को अब लगने लगा था कि वह केवल गहरे लगाव के कारण उसके पीछे दौड़ रही थी। जबकि उस आदमी और अल्बर्टो में कोई खास अंतर नहीं है। हर्षा उस आदमी के लिए चावल की थाली है, जिसे वह गोग्रास की तरह खाता है, और अल्बर्टो के लिए, वह एक ऐसी पुस्तक है जिसमें वह इसके प्रत्येक पृष्ठ को रेखांकित करता है। दोनों ही अपने तरीके से उसे इस्तेमाल करते हैं। वह आदमी खाना खाने के बाद झूठी प्लेट छोड़कर चला जाएगा और अल्बर्टो उस किताब को फेंक देगा। लेकिन क्यों ?

हर्षा की आँखों से आँसू बहने लगे। अल्बर्टो हर्षा के आरोपों से जड़वत हो गया था। जैसे कि उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं था। हर्षा उठकर खड़ी हो गई, उसका वहां पर और कुछ काम नहीं था। अल्बर्टो ने भी उसे नहीं रोका। पीछे से भी नहीं पुकारा, "हाना, आई नीड़ यू। आई वांट यू। "

हर्षा को सभी रास्ते खाली लगने लगे। विदेशी कभी युधिष्ठिर नहीं बन सकते। कम से कम अल्बर्टो को तो यह बात याद दिला दी जानी चाहिए थी।

## 12.

क्या इस तरह चला आना हर्षा के लिए उचित था ? क्या अल्बर्टो को कहने का मौका देना सही नहीं था? कुछ दिन पहले उससे मिलने के लिए बहुत उत्सुक अल्बर्टो की वर्तमान उदासीनता के पीछे कुछ छिपा हुआ रहस्य हो सकता है। या हो सकता है कि उसने 'शी इज वंडरफूल' सिर्फ उसे चिढ़ाने के लिए कहा हो। या फिर उसने जानबूझकर पहले से कुछ नहीं बताया था। शुरू-शुरू में उसने यह स्पष्ट कर दिया था कि पश्चिमी होने के कारण उसके व्यवहार में निश्चित रूप से एक भिन्नता होगी, जिसे तुम सहन करोगी। तीन वरदान मांगने के बहाने उसने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी थी। हो सकता है कि बनारस में कोई भी न हो। या शायद उसके जीवन में भी बनारस न हो। सब कुछ झूठा-खेल रहा हो।

हर्षा का मन हो रहा था कि वह ऑटोरिक्शा से नीचे उतरकर दौड़कर उसके पास चली जाए। मन हो रहा था फिर से वह अल्बर्टो के पास लौट जाए। और कहेगी, हम फिर से लौट जाएंगे अपने पुराने दिनों में। भारत में असंख्य पौराणिक कहानियां हैं। मैं तुम्हें प्रतिदिन कहानी सुनाने के लिए तैयार हूं। चलो, हम अपने बीच के सारे

संदेह दूर कर देते हैं। हम पूर्व और पश्चिम का अंतर खत्म कर देते हैं। नीले गगन के नीचे दो पवित्र इंसानों की तरह हम बैठे रहेंगे।

बादलों में यहां-वहां बादल तैर रहे होंगे, जैसे सदियों से वे तैर रहे हैं। धीरे-धीरे शाम होने लगी, जैसे सदियों से हो रही थी। हम दोनों अपनी पहचान खोकर आदि मानव बन जाएंगे। एक-दूसरे को जानने के लिए, एक-दूसरे को पाने के लिए, हम जमीन पर बैठकर दूब-घास के साथ खेलते-खेलते इंतजार करेंगे युगों-युगों तक। हमारा इंतज़ार कभी खत्म नहीं होगा।

*हम दोनों बैठे रहेंगे चुपचाप*
*दिन बीतेगा, शाम होगी*
*शाम बीतेगी, रात होगी*
*पंछी लौटेंगे अपने-अपने घोंसलों में*
*चाँद निकलते-निकलते ,*
*हमें पता तक न चलेगा*
*शुक्लपक्ष था या कृष्णपक्ष .*

*हम दोनों बैठे रहेंगे चुपचाप*
*चारों तरफ सरीसृप,*
*कीड़े-मकोड़े घेरे होंगे हमें*
*लता-गुल्मों की तरह*
*उधर हमारा ध्यान न होगा*
*अँधेरा गहराता जाएगा*
*एक-दूसरे को देखना तक असंभव*

*फिर भी दोनों बैठे रहेंगे चुपचाप*
*क्योंकि एक की साँस दूसरे की धड़कन होगी*
*हम बैठे रहेंगे*
*ओंस भिगोती जाएगी,*
*कुहासा ढंकता जाएगा,*
*पाँव सुन्न होते जाएंगे,*
*पूरी तरह से बर्फ बनने से पहले,*
*मेरी शीतल हथेली पर कोई उसका हाथ रख देगा.*

हर्षा ने आटो रिक्शा रोका। उसकी आश्चर्य चकित आँखों की तरफ ध्यान दिए बगैर उसने मीटर देखकर अपने पर्स से पैसे निकालकर भुगतान कर दिया। उसने रूमाल निकालकर अपना चेहरा साफ किया और बस स्टॉप के टिन शेड के नीचे खड़ी हो गई। क्या वह फिर से अल्बर्टो के पास लौट जाएगी? उसे मालूम नहीं कौनसे नंबर वाली बस उसे अपने सपनों की दुनिया में ले जाएगी। क्या वह अल्बर्टो को एसएमएस कर देगी? उसने अपना मोबाइल बाहर निकाला, लेकिन सभी शब्द, अक्षर और वाक्य जैसे उसके दिमाग से अचानक गायब हो गए हो।

अल्बर्टो ने उसे हाथ पकड़कर कम से कम एक बार रोक लिया होता? कह देता:"हे मेरी प्रकृति, मैं तुम्हारे बिना अधूरा हूं। " नहीं, वह पुरूष और प्रकृति की अवधारणा पर विश्वास नहीं करता है। वह एक बौद्ध था। क्या निवृति के दर्शन में विश्वास करने वाला आदमी कभी किसी महिला के चारों ओर घूमेगा? सिर्फ दर्शन शास्त्र पढ़

लेने से कभी भी आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त नहीं हो सकता है। अनुभवसिद्ध साधना आध्यात्मिक जागरूकता का एक कदम है। क्या ऐसी निष्ठा या साधना अल्बर्टो के पास मिलेगी ? क्या अल्बर्टो ने कभी हर्षा को प्यार किया था ? क्या उसने पार्सीमनी लव नहीं कहा था ? क्या उसने यह नहीं कहा कि जब सहभागिता का सवाल उठता है तो वह उदास हो जाता है ? जबकि उसने ही फ्रीडा के जीवन की कहानी सुनाई थी। लेकिन उस समय क्यों उसकी निवृत्ति या उसकी उदासीनता उसे रोक नहीं पाई ? हर्षा दुविधा में थी: किस अल्बर्टो से उसकी पहचान हुई थी ? वह अल्बी जो कह रहा था कि उसकी मृत्यु के बाद गंगा में उसकी हड्डियों का विसर्जन कर दिया जाए? या वह अल्बी जो यह दावा करता था कि पश्चिम की सभ्यता पूर्व की तुलना में अधिक विकसित हुई है? कौनसा अल्बर्टो उसका दोस्त था? जो उदारीकरण को प्राकृतिक प्रक्रिया मानता है, जो कहता है कि पश्चिमी लोगों के लिए भारतीय आईटी स्नातक कम वेतन वाले शिक्षित श्रमिक हैं, या जिसने अपना नाम युधिष्ठिर रखा था ?

अब हर्षा क्या करेगी ? क्या वह फिर से अल्बर्टों के पास जाकर पुर्तगाली खेल के लिए आमंत्रित करेगी ? अभी भी अनुत्तरित बहुत सारे प्रश्न हैं। हम अभी तक एक दूसरे को अच्छी तरह से नहीं जानते हैं। हे अल्बी, तुम्हारा सबसे प्रिय इंसान कौन है?

अल्बी: तुम अपने दुर्भाग्य के लिए किसे दोषी ठहराते हो?
: तुम्हारा पसंदीदा संगीत क्या है?
: तुम्हारी पसंदीदा किताब?
: तुम्हारा पसंदीदा फूल ?
बेहतर था कि वे विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछकर छोटे बच्चों की तरह खेलते रहते। उसने एक बोरी में अपने सारे दुःख बांध दिए। उसने अल्बर्टो से क्या उम्मीद की थी, उसने कहा कि 'शी इज वंडरफूल' और उसे ईर्ष्या हो गई ? इतनी ईर्ष्या करने का कारण क्या था? क्या पता क्यों 'शी इज वंडरफूल' शब्दों ने उसके दिल को खाली कर दिया था। उसका मन बेहद अकेला था। वह खुद को पूरी तरह से अकेली महसूस कर रही थी।

*अब मुझे लौटना होगा उस राह पर,*
*जिस राह में साल भर हुए, मैं चल रही थी*
*कई परिचित घर,*
*कुछ पेड़-पौधे*
*न जाने अब अपनी जगह होंगे कि नहीं.*
*पहले की तरह अब मेरी प्रतीक्षा नहीं रही*
*आग्रह नहीं रहा*
*यह कैसी बिडम्बना*
*कि सिर्फ साल भर में*
*सिर्फ साल भर एक के साथ परिभ्रमण किया*
*और थक गयी?*
*साल भर हुआ,*
*राह कष्टों से उबरने के लिए*
*हम साथ-साथ चले*
*मैं अपनी कही*
*और कहानी के राजकुमार की तरह तुम*

*बिन बातों में सिर हिलाते रहे,*
*तुम साथ थे, इसलिए रास्ते में मैंने पीले पंछी नहीं देखें*
*आकाश का इन्द्रधनुष नहीं देखा.*
*पर राजकुमार की तरह तुम सिर हिलाते गए.*
*अपनी एक भी न कही.*
*यह कैसी यात्रा थी?*

*अंहकार तुम्हारे पाँव की चप्पल,*
*अंग के कपडे,*
*आँखों की ऐनक,*
*कलाई की घडी,*
*और चेहरे का प्रलेप.*
*अपना अहं तुम्हे हर बार निगलता रहा*
*उगलता भी हर बार.*
*हर बार तुम उदास हुए,*
*और कुछ बोलने से पहले*
*हर बार पुनर्जन्म लेते रहे.*
*इतने दिन हम साथ-साथ चले*
*तुम सिर हिलाते रहे और मैं अपना दुःख बोलती गई.*

*अगर मुझे मालूम रहता,*
*तुम्हारे हिलते सिर के पीछे दूसरा कोई छुपा है,*
*कबसे मैं देखना शुरू कर देती पीले पंछी,*
*रंग भरे इन्द्रधनुष या कीचड़ सने बच्चे.*

*तुम एक राह चलते बटोही हो,*
*ईर्ष्या से सराबोर और लोगों की तरह*
*तुम भी नाखूनों से खरोंचकर*
*खून से लथपथ लाशों की सुखद कल्पना से*
*परे नहीं हो.*
*मुझे मालूम हुआ, आस्था और विश्वासों का बीमा कर डालने के बाद*
*मालूम हुआ तुम्हारी जेबों में है,*
*आगे के शहरों, सरायों और वेश्यालयों के पते.*

*जानती हूँ मैं,*
*नजदीक आ रहा है तुम्हारा शहर,*
*अब तुम खो जाओगे भीड़ में*
*पर क्या साथ में फिर भी रह जाएगी*
*रास्ते भर कही हुई मेरी अपनी कहानी?*

हर्षा अपने कमरे में लौट आई। उसे खूब रोना आ रहा था। आज वह एकांत कमरे में मन भरकर रोएगी। जीवन से बंधकर बड़ा जादूगर कौन हो सकता है, जो आपको हँसाते-हँसाते रुलाना शुरू कर देता है ? अल्बर्टो के कुछ दिन का साथ उपहार देकर क्या जीवन ने उसे आत्महत्या करने से बचाया ?

कमरे का दरवाजा उस असमय पर भी खुला हुआ था? क्या भैरवी आज विभाग नहीं गई ? इस दुनिया में उसके लिए कोई एकांत स्थान नहीं है, जहां वह राहत की सांस ले सके। लंबे समय से वह दुख पा रही है।

पर्दे को हटाकर जब वह कमरे में घुसी तो उसने देखा उस आदमी की लाल आँखें और उसके होठों पर व्यंग्य भरी मुस्कान। पिछली रात की सारी यंत्रणा उसे याद आने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे दुर्भाग्य उसके खाट पर कुंडली मारकर बैठ गया हो। जिससे वह बच नहीं सकती थी। क्या अब उसे अपने मोबाइल से अल्बर्टो का नंबर हटाना होगा ?

नहीं, रहने दो।